and digital signature policies as well as providing a summary of the export, import, and use of controls imposed by various countries.

Also introducing:

International Encyclopaedia of Law - Intellectual Property

This loose-leaf publication, the most comprehensive source of information on Intellectual Property, provides an overview of all pertinent information on Intellectual Property. Each country monograph provides a clear understanding of the legislation and policy within that country and includes national reports and international conventions. Current monographs are available on the following countries:

Argentina, Australia, China and the United Kingdom.

Forthcoming monographs for 1999,
Austria, Finland, Singapore and the United States of America

To receive further information please refer to the enclosed leaflets. Alternatively please visit our website at **www.kluwerlaw.com**

Yours sincerely

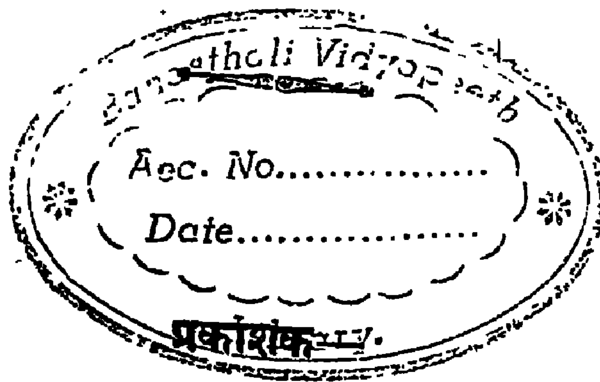
* श्रीः *

कलकत्ता गाइड ।



लेखक—

श्रीकृष्ण शुक्ल ।



प्रकाशक—

निहालचन्द एण्ड को०

नं० १, नारायण बाबू लेन,

कलकत्ता ।

१०००] सन् १९८५ विक्रमी [मूल्य १

मुद्रक—
दयाराम बेरी
श्रीकृष्ण प्रेस,
१, नारायण बाबू लेन कलकत्ता।

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तकमें भारतके सर्वश्रेष्ठ तथा ब्रिटिश साम्राज्यके द्वितीय नगर कलकत्ताका दिग्दर्शन करानेका प्रयत्न किया गया है। कलकत्तेका इतिहास बड़ा ही रोचक और महत्व पूर्ण घटनाओंसे भरा हुआ है। इस छोटी सी गाइडका उद्देश्य पाठकोंको नगरका परिचय करा देना है।

अभी तक हिन्दी संसारमें भारतके बड़े २ नगरोंके ज्ञानके लिये कोई भी पुस्तक नहीं निकली या जो निकली भी हैं वे नहींके बराबर हैं। कलकत्ता गाइडका प्रकाशन इस अभावको पूर्ण करनेका प्रथम प्रयास है।

कलकत्ता नगरीमें सब देशोंके भिन्न २ आचार व्यवहार वाले मनुष्य रहते हैं, और इनकी संख्या सदा बढ़ती ही रहती है। भारतके प्रत्येक कोनेसे सहस्रों मनुष्य केवल कलकत्ता घूमनेके लिये ही आते हैं। यह गाइड उनके लिये विशेष रूपसे उपयोगी है। इससे उन्हें नगरके प्रसिद्ध २ दर्शनीय स्थानोंको कम समय और अधिक आसानीसे देखनेमें बड़ी सहायता मिलेगी।

कलकत्ता भारतमें विदेशियोंके आगमन-कालसे ही ऐतिहासिक महत्व रखता है। यहींसे अंग्रेजोंका उत्थान और भारतीय नरेशोंके पतनका अभिनय आरम्भ होता है। यों तो कलकत्तेमें ऐतिहासिक स्थान बहुत कम हैं, फिर भी जो हैं वे देखने योग्य हैं। जैसा कुछ ऐतिहासिक मानते हैं, क्लैकहाल

की दुर्घटना यहीं हुई थी, वारेन हेस्टिंग्स और सर फिलिप फ्रांसिसका युद्ध यहीं हुआ था और राजा नन्दकुमारको फांसी भी यहीं हुई थी। इनके अतिरिक्त और भी कई घटनायें हैं।

इस पुस्तकको सर्वाङ्ग सुन्दर और उपयोगी बनानेके लिये कलकत्तेके प्रसिद्ध२स्थानोंके सोलह फुलपेजके चित्र भी दिये गये हैं। अन्तमें "विविध विषय" शीर्षकमें एक नवागन्तुकके जानने योग्य धर्मशाला, थियेटर, बैंक, इत्यादिके नाम और पते दिये गये हैं। जहां आवश्यक समझा गया, वहां टेलीफोन नम्बर भी जोड़ दिये गये हैं।

यदि जनताको इस पुस्तकसे कोई लाभ पहुंचा तो इसी भांति भारतके अन्य बड़े २ नगरोंकी गाइडें भी निकाली जांयगी। इस पुस्तकको लिखनेमें मेसर्स नयूमैनकी "विजिटर्स कलकत्ता गाइड" से हमें बड़ी सहायता मिली है, इसके लिये हम उनके बड़े अनुगृहीत हैं। साथ ही प्रकाशक महोदय भी हमारे धन्यवादके पात्र हैं, जिन्होंने इस गाइडके निकालनेमें बड़ी शीघ्रता की है।

यह पुस्तक शीघ्रतामें निकाली गई है इसलिये त्रुटियोंका होना असम्भव नहीं। आशा है उनके लिये सहृदय पाठक क्षमा करेंगे।

कलकत्ता
ता० २८—१२—२८। } श्रीकृष्ण शुक्ल।

कलकत्ता गाइड।

प्रथम परिच्छेद।

कलकत्तेका संक्षिप्त इतिहास

कलकत्ता हुगली तटके निकट कलिकाता, सुतानती, गोविन्दपुर, चितपुर, सलकिया और बेतोर नामके छः गांवोंकी भूमि-पर बसा हुआ है। बेतोर शिवपुरके बोटैनिकलगार्डनके पास था। यही इस प्रदेशका सबसे पहला व्यापार-केन्द्र था और इसका अस्तित्व ईस्वी सन् १५६० में पोर्चुगीज वणिकोंसे आरंभ हुआ। पोर्चुगीज व्यापारी हुगलीके पास सात गांवमें बस गये थे, परन्तु उनके जहाज नदीमें गार्डन रीच तकही आ सकते थे। इसलिए जबतक जहाज लंगर डाले रहते थे बेतोरमें बाजार सा लग जाता था और उनके जाते ही वह उठ जाता था।

सोलहवीं शताब्दीके अंतके समय पोर्चुगीज वणिक बेतोरकी बढ़ती हुई समृद्धि देख सात गांव छोड़कर गोविन्दपुरमें आ बसे। उन्होंने वर्त्तमान कलकत्ताके पूर्णमें सुतानती हाट खोली, जहां



रुईका अच्छा व्यापार होता था। पोर्चुगीजोंके बाद डच और अंग्रेजोंका आगमन हुआ, जिन्होंने क्रमशः चिन्सुरा और हुगलीमें अपनी अपनी कोठियां खोलीं और इन सबोंके समुद्र-गामी जहाज गार्डन रीचमें ही लंगर डालते थे।

ऐसेही समय जॉब चारनक, जो अंगरेजोंकी इष्टइण्डिया कंपनीके हुगलीके एजेण्ट (प्रतिनिधि) थे, कलकत्ता आए थे, और इन्हींने वर्त्तमान कलकत्ताकी भूमि कोठी खोलनेके लिए पसन्द की।

ईस्वी सन् १६८८ के लगभग चारनकको नवाबके शत्रुभावके कारण बाध्य होकर हुगली छोड़ना पड़ा और वह मद्रासके फोर्ट सेण्ट जॉर्जको चला गया। परन्तु जब सन् १६९० में ढाकाके नए नवाब इब्राहीमखांने हुगलीकी कोठीके लूटे हुए मालकी क्षति स्वरूप ६०००० रुपये अंगरेजोंको दिये, तब चारनक फिर बंगाल लौटनमें सफल हुआ।

चारनक थोड़ेसे अंगरेज साथियोंके साथ २४ अगस्त, सन् १६९० को सुतानतीके उजड़े ग्राममें जहाजसे उतरा और वहीं इसने ब्रिटिश झण्डा खड़ाकर उस कलकत्ताकी नींव डाली जो दो शताब्दियोंसे कुछ ही अधिक समयमें ब्रिटिश साम्राज्यका द्वितीय नगर हो उठा। उस समय यह पूरा स्थान दल-दल और अस्वास्थ्यकर था। जो थोड़ेसे गोरे यहां थे वे पहले तो धुआँकश (Boat) पर कुछ समय तक रहे फिर भारतीयोंकी भांति ही फूससे छाई हुई मिट्टीकी झोपड़ियोंमें रहने लगे। नगर प्रतिष्ठाके



बाद १० जनवरी १६९२ को चारनकका देहान्त हो गया। उसकी समाधि जो, यूरोपियनों द्वारा बङ्गालमें बनाई हुई सबसे प्राचीन इमारत समझी जाती है, अब भी सेन्टजान गिरजेके समाधि-स्थलमें देखी जा सकती है।

सन् १६९६ के पहले तक बङ्गालके नवाबसे किला बनानेकी स्वीकृति नहीं मिली थी;परन्तु तब स्वीकृति मिलनेपर भी बनानेका कार्य्य अत्यन्त शिथिल था। पूरा होनेपर २० अगस्त १७१० को उस किलेका नाम इङ्गलैंडके उस समयके शासकके नामपर फोर्ट विलयम रक्खा गया। इसका स्थान सर जॉन गोल्डसबरो द्वारा सन् १६९३ में चुना गया था। वह भूमि वर्त्तमान कोयलाघाट और फेयरली प्लेसके बीचका भाग है, और उसी जमीनपर जेनरल पोस्टआफिस, कस्टम हाऊस और ईष्ट इण्डियन रेलवे कंपनीकी इमारते हैं। किलेका पूर्व भाग क्लाइव स्ट्रीट और डलहौसी स्क्वायरकी ओर था और इसकी पश्चिम सीमापर हुगली नदी बहती थी। स्ट्रैण्टरोड उस समय नदी गर्भमें था इसलिये हुगलीका पाट उस समय खूब चौड़ा था। अब पुराने फोर्टका नामों निशान तक नहीं है। वर्तमान फोर्ट विलियमको नींव तो पलासीके प्रसिद्ध युद्धके बाद डाली गई थी। पुराने फोर्टका खाका अब भी विक्टोरिया मेमोरियलमें देखा जा सकता है

सन् १७०० में अङ्गरेज व्यापरियोंको औरङ्गजेवके पौत्र अजी-मुश्शान द्वारा, जो उस समय बङ्गालके सूबेदार थे, कंपनीकी सुदृढ़ कोठीके समवर्त्ती सुतानती, गोविन्दपुर और कलिकाता नामके

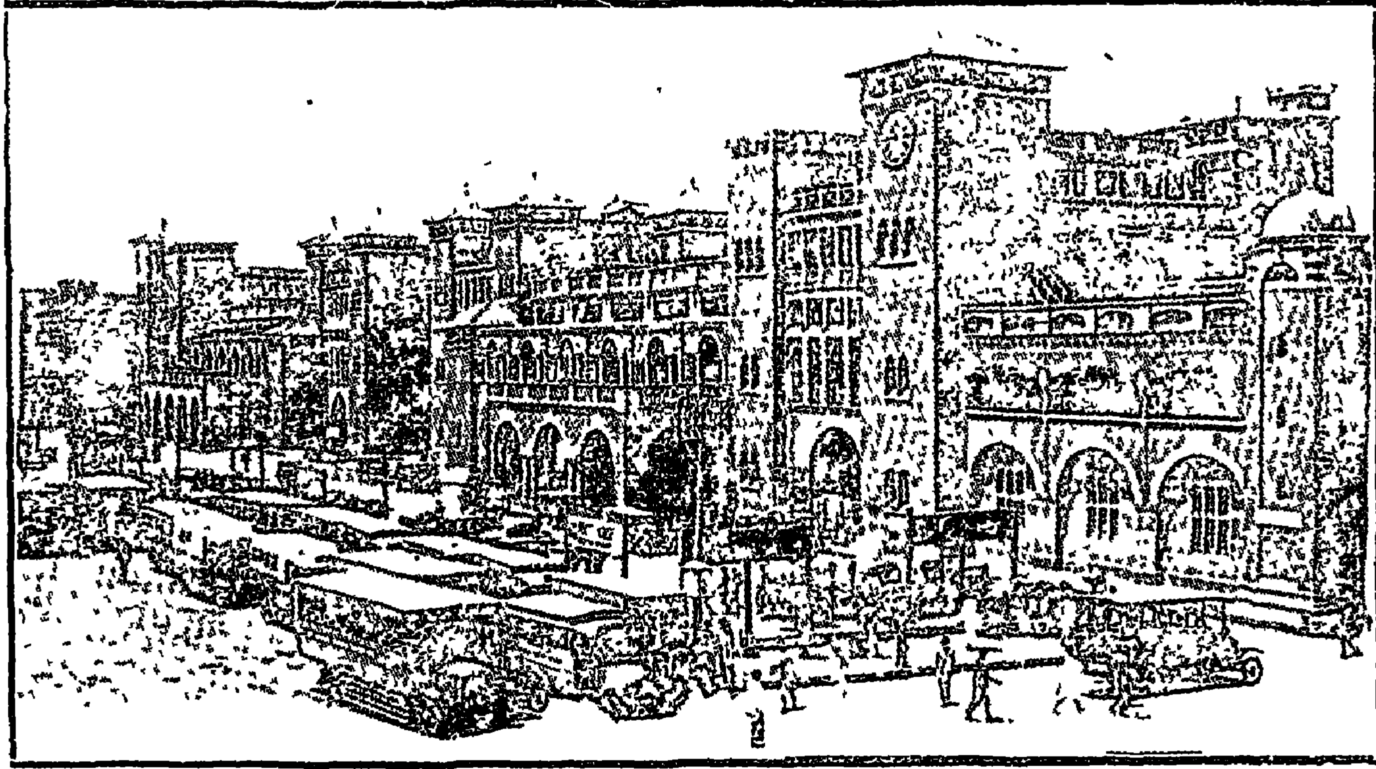


तीन गांव खरीदनेकी अनुमति मिली। यह सुविधा अङ्गरेजोंके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और हितकर थी। इससे वे उस भूमिके एक मात्र स्वत्वाधिकारी बन गए और उन्हें कर वसूल करने और लगानेका भी पूरा अधिकार मिल गया।

सन् १७१५ में मुर्शिदाबादके नवाब मुर्शेदकुलीखांके अत्याचारसे त्रस्त होकर कम्पनीने अपने कष्ट निवारणार्थ दिल्ली सम्राटके पास अपने दूत भेजे, और इसमें उन्हें पूर्ण सफलता भी मिली। सम्राट उस समय एक ऐसी कष्टप्रद व्याधिसे ग्रस्त थे जिसे उनके चतुर हकीम और वैद्य भी न अच्छा कर सके थे। परन्तु जब इन अंग्रेज दूतोंमेंसे एक, सरजन विलियम हैमिल्टनने एक सफल आपरेशन कर सम्राटको उनके कष्टसे मुक्त कर दिया तो वे उसपर अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर क्या था, कंपनीको ऐसी २ सुविधाएं मिलीं जो उसके लिये बहुत लाभदायक थीं।

वर्तमान डलहौसी स्क्वायर पहले मैदान था और उस समय इसके चारों ओर अंग्रेजोंकी बस्ती थी। गवर्नरका मकान, कोठीका भण्डार और खास २ मकान किलेकी सीमाके भीतर ही थे। क्लाइव स्ट्रीट विशेष रूपेण कम्पनीके विवाहित सैनिक अफसरोंका निवास स्थान हो रहा था।

उन दिनों तनख्वाहें बहुत कम थीं। चर्चके सबसे बड़े पादरी करीब १५००) रुपये सालमें खूब मजेसे जीवन बिताते थे। सरजन हैमिल्टन अपने साल भरके वेतन ५४०) रुपयेको बहुत अधिक धन समझता था। जो किलेके बाहर रहते थे



सुप्रसिद्ध हवड़ा स्टेशन।



उन्हें भोजन व्यय घर-भाड़ाके लिये ३०) रु० मासिक मिलते थे।

आश्चर्य तो यह है कि ये गोरे इतने कम वेतन पर भी बड़े ही सुख और आनन्दसे रहते थे। सवेरे कार्यमें लगे रहना, भोजनके पश्चात दोपहर भर आराम करना और शामको हवा-खोरीके लिये निकल जाना ही इनकी समस्त दिनचर्या थी। पालकी, टमटम या नदीके बजरों पर विहार करना इन्हें अत्यन्त प्रिय था। परन्तु केवल इतनी थोड़ी तनख्वाहोंमें तो यह सब हो नहीं सकता था। ये निजका व्यापार भी करते थे और इससे जो लाभ होता था उसीसे इनके वेतनकी कमी पूरी होती थी।

सारा शहर उस समय अत्यन्त ही अस्वास्थ्यकर और मलेरियासे भरा हुआ था। मृत्यु संख्या बहुत ही अधिक थी। ऐसा पता लगता है कि एक साल तो ६ महीनोंके भीतर ही १२०० अंग्रेजोंमेंसे ४६० मर गये, और भारतीयोंका तो कहना ही क्या।

कलकत्तेके इतिहासमें सन् १७३७ चिरस्मरणीय रहेगा। इसी वर्षकी ३० वीं सितम्बरकी रातको बड़ा भयंकर तूफान आया था, जिसने सम्पूर्ण नगरको नष्ट प्राय कर डाला। सेण्ट-एनीके गिरजेका बुर्ज और न जाने कितने मकान उड़ गये, सैकड़ों झोपड़ियोंका नामोनिशान तक न रहा, बन्दरगाहमें लंगर डाले हुए २९ जहाजोंमें २८ आपसमें टकरा कर नष्ट हो गये। इन्द्रदेव भी बड़े कुपित थे। केवल ५ घण्टोंमें ही १५ इञ्च पानी बरसा। जिससे असंख्य चौपाए और कई चीते भी बह गए।



कलकत्तेका इतिहास बड़ा ही रोचक है। इस भयङ्कर जन धन हानिके पांच वर्ष बाद ही सन् १७४२ में मरहठोंने बङ्गाल पर आक्रमण किया और बालासोरसे लेकर राजमहल तकके प्रदेशकको उजाड़ डाला। कोसों दूर गावोंके रहने वाले अंग्रेजों द्वारा आश्रयकी आशामें कलकत्ता आकर जुटने लगे। कम्पनीकी भूमिको बचानेके लिये सात मील लम्बी खाई खोदनेका निश्चय किया गया। ६ महीनोंमें तीन मील ही बनी थी; परन्तु जब मरहठे कलकत्तेकी ओर न आकर लौट गये तो खाईका काम बन्द कर दिया गया। खोदकर निकाली हुई मिट्टीसे जो सड़क बनाई गई उसके दोनों किनारे पेड़ लगा दिये गये, और उसका नाम सर्कुलर रोड रख दिया गया, जो अब भी वर्तमान है। खाईका नाम मरहठा डिच (Ditch) है और यह कलकत्तेके पूर्वमें है।

सन् १७५६ के जूनमासमें सिराजुद्दौलाने एक बड़ी भारी सेना लेकर कलकत्ता पर धावा किया। उस समय फोर्ट विलियममें केवल ६०० अंग्रेज और हिन्दुस्तानी सिपाही थे। युद्ध १६ जूनको आरम्भ हुआ। अवस्था विपज्जनक देख कर अंग्रेजोंने अपनी स्त्रियों और बच्चोंको १६ ता० को सवेरे नदीमें लंगर डाले हुए जहाजोंमें भेज दिया। गवर्नर भी फाल्टाको भाग गये। इन सबोंके चले जानेके बाद हौलवेलने सेनाका नेतृत्व ग्रहण किया और २० ता० की शाम तक बड़ी ही वीरतापूर्वक शत्रुका सामना किया। परन्तु बादको सिराजुद्दौलाका किलेपर



अधिकार हो गया। कहते हैं इस युद्धमें उसकी सेनाको बड़ी भारी क्षति उठानी पड़ी।

इसके बाद ही उस भयङ्कर कालकोठरी या ब्लैकहालका* घटनाघटन है। जिसे पढ़ कर प्रत्येक मनुष्य सिहर उठता है। सिराजद्दौलाने बचे हुए १४६ अँग्रेजोंको एक १८ फीट लम्बी और चौडी काल कोठरीमें शामको बन्द कर दिया। यह कोठरी पहले किलेके बन्दीगृहका काम देती थी, और इसमें सीकचेदार दो छोटी खिड़कियां थीं। उस रातको बहुत ही अधिक गरमी थी, जो आसपासके जलते हुए मकानोंके कारण और भी बढ़ गई थी। रातको प्यास और वायु-कष्टके कारण बन्दियोंकी अवस्था अत्यन्त भयानक हो उठी, और एक २ करके वे मृत्यु मुखमें पहुंचने लगे। दूसरे दिन सबेरे द्वार खोलने पर केवल २-३ व्यक्ति ही जीवित बचे सो भी अधमरे निकले।

कहा नहीं जा सकता यह भीषणकांड कहां तक सत्य है। इसका अभी तक भली भांति निर्णय नहीं हो सका है।

सिराजुदौलाके अधिकारमें जानेके सात महीने बाद ही, २ जनवरी सन् १७५७ को कलकत्ता फिर क्लाइव और नौसेनापति वाटसर द्वारा अंगरेजोंके हाथों आया। बारह युद्धमें हारनेके बाद नवाबको अंग्रेज बणिकोंको व्यापारिक स्वतंत्रता देनी ही पड़ी। सिराजद्दौलाने नागपुरके सरदारसे मिलकर अंगरेजोंको भारत-

*नोट—भारतके कितने ही इतिहासका और समझदार तथा जिम्मेदार व्यक्ति इस बातको एकदम झूठ मानते हैं।



वर्षसे खदेड़नेका अन्तिम:प्रयत्न किया । परन्तु उस समय भाग्य लक्ष्मी अंगरेजोंपर प्रसन्न थी । पलासीके युद्धमें असफल होकर वह भागा, लेकिन राजमहलमें पकड़ा जाकर मार डाला गया । सम्भव है इस युद्धमें उसकी हार न होती यदि उसका खजांची मीरजाफर लड़ाईके मैदानमें उसे धोखा देकर अंगरेजोंसे सेनासहित न मिल गया होता । बङ्गाल अब अंगरेजोंके अधिकारमें आया । उन्होंने मीरजाफरको नवाब बनाया । इसके बदलेमें मीरजाफरने उन्हें २४ परगनाकी जमीन्दारी, और इस नगरको भेंट स्वरूप दिया । इनके अतिरिक्त उसने क्षति स्वरूप अंगरेज वणिकों और कंपनीके कर्मचारियोंको, बहुत धन दिया उन्हें टकसाल बनानेकी स्वीकृति भी दे दी । इसी समयसे कलकत्ता समृद्धिशाली बनने लगा ।

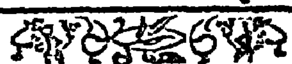
सन् १७७३ में कलकत्ता ब्रिटिश भारतकी राजधानी बनाया गया । उसी वर्ष यहां बड़ी अदालत खोली गई । वारेन हेस्टिंग्स गवर्नर जेनरल बनाए गए और समस्त ब्रिटिश भारतके शासनाधिकारमें वे सबसे ऊपर रहे । उन्हें २॥ लाख रुपये सालाना वेतन मिलने लगा । सर एलिजा इम्पी बड़ी आदलतके प्रथम चीफ जस्टिस बनाए गए । इसी साल नये फोर्ट विलियमका बनना खतम हुआ । यह १७५८ सन् में क्लाइवके बताए ढंगपर आरंभ किया गया था । जहां आजकल मैदान है, वहां पहले घना जङ्गल था । इसमें चीतों और हिंसक जन्तुओं का बड़ा भय था । जब इसे कटाकर मैदान बनाया गया तब



गोरे लोग इसीके चारों ओर आ बसे। शीघ्रही चौरङ्गी एक सुन्दर और घनी बस्ती हो उठी। सुन्दर २ मकान उठने लगे। सन् १७८६में Tank sghare (वर्तमान डलहौसी स्कायर) के आस पास बड़ी सुन्दर बस्ती थी। इसके चतुर्दिक बने हुए सुरम्य भवनोंके कारण कलकत्ता केवल एशियाका ही नहीं वरन् समस्त संसारके प्रसिद्ध नगरोंमेंसे हो रहा था।

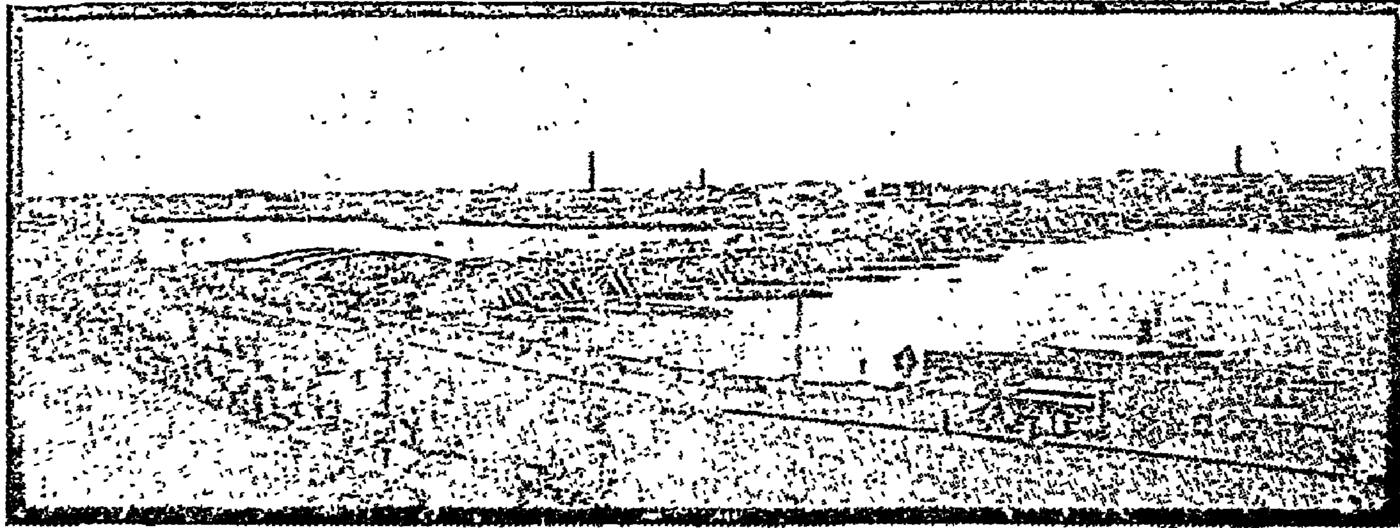
इस समयसे कलकत्ता बड़ी शीघ्रताके साथ समृद्धि पथपर अग्रसर होने लगा। इमारतें बनने लगीं। सेन्ट जानका गिरजा सन् १७८३ और १७८७ के बीच बना, गवर्नमेण्ट हाऊस १७९७ और १८०३ में बना टाऊन हाल और टकसाल घर १८३० में बनकर तैयार हुए।

कलकत्तेके प्रथम विशप (गिरजाके सबसे बड़े पादरी) डाक्टर मिडिलटन बनाए गए थे। सेन्टपाल गिरजेकी नींव सन् १८३९ में डाली गई और यह ८ अक्तूबर १८४७ को तैयार हुआ। सन् १८०३ में उस समयके गवर्नर जेनरल लार्ड वेलेस्लीने नगर सुधारके लिए एक कमेटी बनाई। परन्तु इसने कुछ अधिक काम नहीं किया। सन् १८१४ में जब यह कमेटी टूट गई तो इसके फण्डका धन लॉटरी कमिश्नरोंकी देखरेखमें आया। इन्हें लॉटरी द्वारा धन एकत्रित कर नगरके सुधारमें व्यय करनेका पूरा २ अधिकार था। इस धनसे सबसे पहले सेन्ट जानका गिरजा बना। सड़कें; टाऊनहाल, बाग बगीचे, तालाब आदि और भी अनेक चीजें इसी धनसे बनीं।



गरमी आरम्भ हो जाती है और जूनमें वर्षा ऋतुके शुरू होने तक रहती है। बरसात सितम्बर आक्टूबर तक खतम हो जाती है और इसके बाद शीतकाल फरवरी तक रहता है। कलकत्ता घूमनेका सबसे अच्छा समय जाड़ेका है। तब यहांकी आब हवा बड़ी उत्तम रहती है। कलकत्ता अपने उस समयके मनोरञ्जन और उत्सवोंके लिए प्रसिद्ध है। यहांके थियेटर और सिनेमाघरोंमें तब बेहद भीड़ रहती है।

दिन रातकी वर्ष भरका औसत ताप ७७.६ डिगरी, गर्मीका ८३.३ डिगरी। वर्षा ऋतुका ८२·५ डिगरी और जाड़ेके दिनोंका ६८०३ डिगरी रहता है। ऐसे दिन भी हो चुके हैं जब तापमान ११५ तक था, परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। गर्मीके दिनोंमें समुद्रकी हवा अत्यन्त आनन्द वर्द्धक होती है। यह करीब तीन बजेसे सूर्यास्तके कई घंटे बाद तक बहती है। कभी २ पश्चिमसे आंधी भी आ जाती है। कोई भी बरसात खाली नहीं जाती जिसमें मकानोंपर बिजली न गिरे। कलकत्तामें सालमें अधिकसे अधिक ९३ इञ्च और कमसे कम ४० इञ्च पानी बरसता है। परन्तु औसत ६० इञ्च है। वर्षमें सबसे अधिक पानी जून और अक्टूबरके बीच बरसता है; तब तापमान ८० से ८५ डिगरी के भीतर रहता है; हवा नर्म रहती है, पानी खूब जोरोंसे बरसता है परन्तु अधिक समय तक नहीं ठहरता। कपड़े और किताबें यदि खुली हवामें न रक्खी जांय तो सील लग जाती है। अधिक नहाने पर भी गरमी ऐसी सड़ी होती है, जिसका शरीर



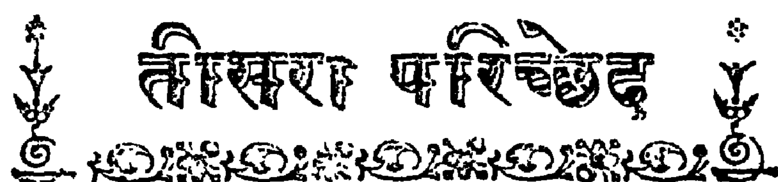
हुगली नदी (गंगा) का सुप्रसिद्ध हवड़ा-पुल ।



और मनपर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। वर्षाका यही अन्तिम काल वर्षका सबसे अधिक अस्वास्थ्यकर समय है। वर्षाके आरम्भ और अन्तमें कलकत्तामें प्रायः तूफान आते हैं, ये तूफान बङ्गालकी खाड़ीसे उठते हैं और आगे बढ़ते २ ये इतने भयङ्कर हो जाते हैं कि सामनेकी सभी चीजें नष्ट भ्रष्ट हो जाती हैं।

कलकत्तेकी अङ्गरेजी और प्रमुख हिन्दुस्तानी दूकानें अधिकतर ९ बजे सबेरेसे ६ बजे शामतक खुली रहती हैं शनिवारको दो बजे तक और रविवारको बिल्कुल बंद रहती हैं। परन्तु हिन्दुस्तानी दूकानोंमें ये बात नहीं है। ये सबेरे ७ बजेसे लेकर ८।९ बजे राततक, और कुछ तो १० बजे रात तक खुली रहती हैं। रविवारको भी बहुत ही कम हिन्दुस्तानी दूकानें बन्द रहती है। बैंक, सरकारी और दूसरे बड़े २ आफिस १० बजे सबेरेसे ५ बजे शामतक, और शनिवारको ३ बजे तक खुले रहते हैं। विदेशसे आनेवाले यात्रियोंको अपना पास पोर्ट (Pass port) अधिकारियोंको दिखलाना आवश्यक है।





कलकत्ता बन्दरगाह ।

कलकत्तेका बन्दरगाह बहुत बड़ा है और यह संसारके प्रधान बन्दरगाहोंमें गिना जाता है। यहाँकी आयात निर्यात (Export & Import)एक प्रधान महत्व रखती है। कच्चा और तैय्यारी जूट, चाय, गेहूं, चावल, लाख, चमड़ा और कोयला यहाँसे विदेशोंमें जाने वाली खास चीजे है। सूती कपड़े, धातुकी चीजें तेल, पेट्रोल, निमक, सब तरहकी मशीनें, रेलके सामान, मोटरगाड़ियां, कागज इत्यादि अनेकों वस्तुएं विदेशोंसे आती हैं। इनके अतिरिक्त और भी विदेशी वस्तुओंके लिये कलकत्ता अच्छा बाजार है। जावाकी चिनी और बर्माका चावल भी बड़े परिमाणमें आता है।

बन्दरगाहका ऐसा सुप्रबन्ध कलकत्ता पोर्ट कमिश्नरोंकी कुशलताके कारण है। इसका संगठन सन् १८७० में हुआ था। इनमें दो वेतनभुक्त कर्मचारी-चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन, और १४ कमिश्नर होते हैं, जिनमें ५ सरकार द्वारा निर्वाचित किये जाते हैं। नये डॅक और जेटियां (Docks & gettias) बनवाना, उनका प्रबन्ध करना इत्यादि सब अधिकार इन्हींके अधिकारमें हैं। किंग जार्ज डॅक (King georje docks)



नामका नया डक बनाकर डकोंकी संख्या और भी बढ़ा दी गई है। इस नये डॉककी गिनती संसारके सबसे अच्छे डकों में की जाती है। गाडनरीचमें जो नई जेटियां इस नये डाकके लिये बनी हैं, वे बहुत ही अच्छी और वैज्ञानिक ढंगपर हैं। अब ऐसा विचार हो रहा है कि भविष्यमें स्ट्रैण्ड रोडकी जेटियां स्वदेशके व्यापारके लिये नियत कर दी जायं और गार्डन रीचकी विदेश जाने वाले जहाजोंके लिए।

पोर्ट कमिश्नरोंके अधिकारमें यात्रियोंके उतरने चढ़नेके लिये भी अनेक घाट हैं। इनमें आऊटराम घाट (Outram Ghat) और चांदपाल घाट (Chandpal Ghat) देखने योग्य हैं। ये दोनों घाट एडेन गार्डनके निकट ही हैं। योरपसे आने वाले यात्री प्रायः आऊटराम घाटपर ही उतरते हैं। रंगून और सुदूर पूर्व आने जाने वाले भी यहीं चढ़ते उतरते हैं। यहां डाक्टरी जांच और चुंगीके लिये अलग २ कार्यालय हैं। एक छोटा सा होटल भी है, जहांसे गंगाका बड़ाही आकर्षक दृश्य दिखलाई पड़ता है। चांदपाल घाट छोटे छोटे स्टीमरोंका मुख्यघाट है। सर्व साधारणके लिए ऐसे स्टीमरों द्वारा आवागमनका क्रम सन् १६० में आरंभ किया गया था। और अब तो वर्षमें लगभग १॥ करोड़ मनुष्य इन स्टीमरों द्वारा यात्रा करते हैं। ऐसे कुछ प्रसिद्ध स्थानोंका विवरण, जहां स्टीमर द्वारा जाना होता है, अगले परिच्छेदमें दिया गया है।

नाविक शिक्षा देनेके लिये बंगाल पाइलट सर्विस (Bengal



pilot service)नामकी एक संस्था है,जो ब्रिटिश साम्राज्यके प्रधान नाविक-शिक्षालयोंमेंसे है। बहुत अधिक सतर्कता पूर्वक रहनेके कारण शोचनीय घटनाएं अब कम होती हैं, परन्तु पहले ऐसा नहीं था। इसी हुगलीमें सन् १६६४ में जेम्स और मेरी (Games & mary) नामके दो सुन्दर जहाज नष्ट हो गये थे। गार्डन रीचमें जहाज पहुंचने पर उसकी रक्षाका भार्पोर्ट-कमिश्नरोंके ऊपर हो जाता है, और उस समय वे जहाज उन्हींकी आज्ञामें रहते हैं।

हुगली तटपर बसे रहनेके कारण ही कलकत्ता विदेशोंसे व्यापार करनेमें समर्थ है, और इसी व्यापारने ही कलकत्ताको इतना वैभवशाली और प्रसिद्ध नगर बनाया है। बड़े २ जहाज बड़ी आसानीसे हुगलीमें आते जाते हैं। जॉब चारनकके समय का वह छोटा सा गांव ही आज ब्रिटिश साम्राज्यका द्वितीय नगर है, यह केवल लण्डनसे ही छोटा है। सन् १९२१ की मनुष्य-गणनाके अनुसार हवड़ाको मिलाकर कलकत्ताकी जन संख्या १३,२७,५४७ थी। सन् १९२१ में कलकत्ता सदरकी मनुष्य-गणना इस प्रकार थी।

हिन्दू	६४३,०१३
मुसलमान	२०९,०६६
ईसाई	३९,१५४
यहूदी	१८,२०



इसके अतिरिक्त चीनी और आरमोनियन इत्यादि लोगोंकी बहुत बड़ी संख्या थी। उस समयसे अब तक कलकत्ताकी जन संख्यामें बहुत वृद्धि हुई है।

कलकत्ता और इसके आस-पास करीब २५० मिलें हैं, और इनमें ५०००० से अधिक मनुष्य काम करते हैं।

नगरका नागरिक-शासन कारपोरेशनके अधिकारमें है। सन् १९२३ में बंगाल काउंसिलमें पास किये हुए कानूनके अनुसार इसका पुनर्संगठन हुआ। अब इसमें ८५ सदस्य रहते हैं, जिनमें १० प्रान्तीय सरकार द्वारा और ७५ करदाताओं और सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा चुने जाते हैं, और पांच एल्डरमैन, जिनका निर्वाचन सदस्यों द्वारा होता है। कारपोरेशनके प्रधान मेयर और डिप्टी मेयरको सदस्य प्रतिवर्ष चुना करते हैं। इनके अलावा कारपोरेशनको एक एकजीक्यूटिव आफिसर(Executive officer) चुननेका भी अधिकार है, जो सब स्कीमों (Schemes) को कार्य्य रूपमें परिणत करता है। सदस्यों (Councillors) के निर्वाचनके लिये कलकत्ता ३२ भागोंमें विभक्त है। व्यापारिक संस्थाओंको अलगसे वोट देनेका अधिकार है। स्त्रियां भी वोट देने या निर्वाचनके लिये खड़ी हो सकती हैं। शासनके लिये भी कलकत्ता ३२ हलकों या वार्डों (Wards) में विभक्त है। कारपोरेशनकी आय वार्षिक दो करोड़ बारह लाख रुपयोंसे भी अधिक है। यह आय प्रधानतः व्यापार, गाड़ियों, जानवरों इत्यादि, पर लगाए हुए कर और निश्चित



लगानसे होती है। कारपोरेशन पर ६॥ करोड़ रुपयोंका ऋण भी है। कलकत्ताके पूर्वतल्ला नामक स्थानमें खम्भोंपर रक्खी हुई लोहेकी पानीकी टंकी संसारमें दूसरी सबसे बड़ी समझी जाती है। यह कुछ ही वर्ष पहले लगी है; और इससे समस्त नगरको यथेष्ट रूपेण जल मिलता है।

कलकत्ता इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट ।

सन् १९११ के कानूनके अनुसार नगरका सुधार कार्य ११ ट्रस्टियोंकी एक कमेटीके हाथों कर दिया गया। इसका अध्यक्ष या चेयरमैन सरकार द्वारा नियुक्त होता है। जूटकर, यात्रिकर और निर्दिष्ट चुंगीके अतिरिक्त इसे सरकार और कारपोरेशनसे भी कुछ मिलता है। घनी बस्तीको खुला बनाना, सड़कें चौड़ी करना; नई सड़कें और खुली जगहें निकालना इत्यादि इस ट्रस्टने अनेकों काम किये हैं। नगरके मध्य भागकी गन्दी जगहोंको नष्टकर इसने बहुत सी नई सड़कें निकाली हैं।

इनमें सबसे मुख्य सेन्ट्रल एवेन्यू है, जिसका नाम अब उस पुरुषपुङ्गवकी स्मृति रक्षार्थ चित्तरञ्जनएवेन्यू रख दिया गया है। श्यामबाजारमें एक मैदान बनाया गया और नई सड़कें निकाली गयी हैं। इसीतरह काशीपुर, कड़ाया, रसारोड भावानीपुर इत्यादि अनेक स्थानों में बहुत कुछ सफाई, और नई २ सड़कें और मैदान बने हैं।





सड़कें बाजार और बस्ती।

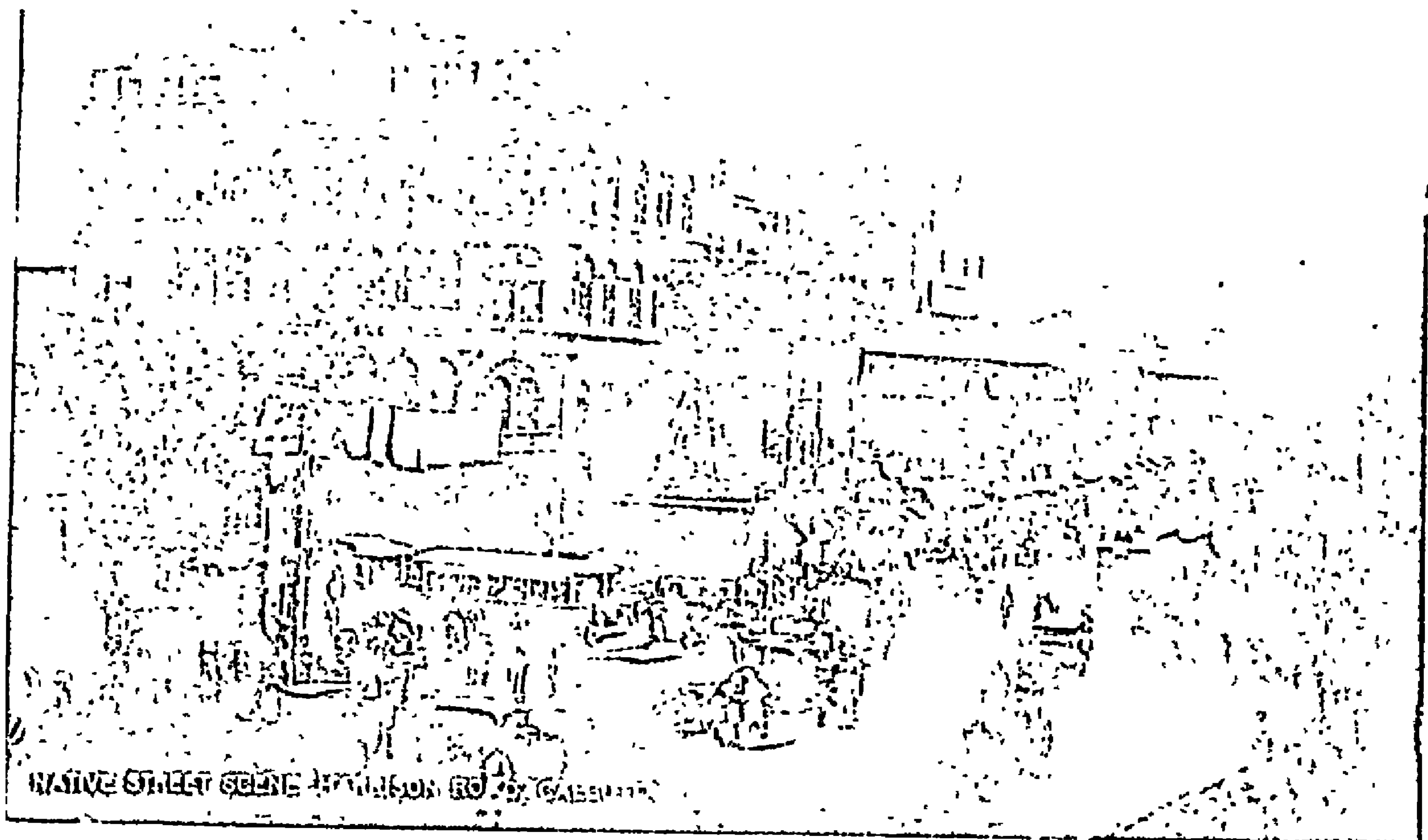
साधारण तौर पर शहरके दो भाग किये जा सकते हैं—बहूबाजार और लालबाजारके इस तरफ उत्तरी कलकत्ता और उस तरफ दक्षिणी-कलकत्ता। डलहौसी स्कवायरके चारों ओरके व्यापारक्षेत्रको छोड़कर उत्तरी भागमें प्रायः भारतीयही बसते हैं। इस हिस्सेमें उतनी अधिक सफाई नहीं है जितनी दक्षिण कलकत्तामें है। उस तरफ अंगरेजोंकी ही बस्ती है और वही कलकत्तेका सबसे सुन्दर भाग है। बड़े बड़े होटल, आकाशसे बातें करनेवाली सुरम्य अट्टालिकाएं और उनके सामनेका प्रशस्त मैदान कलकत्ता की खास चीजोंमें हैं।

अस्तु, अभी हम आपको उत्तरी कलकत्तेका ही दिग्दर्शन करावेंगे। कलकत्तेके इस भागके भी दो प्रधान हिस्से किए जा सकते हैं। एक बङ्गालियोंकी बस्ती और दूसरा जहां देशवाली और मारवाड़ी बसते हैं। बहूबाजार और बीडनस्ट्रीटके बीचके चित्तरञ्जन ऐवन्यू की पश्चिम ओर प्रायः मारवड़ी और देशवाली ही रहते हैं। इसको छोड़कर उत्तरी कलकत्तामें केवल बङ्गाली ही रहते हैं। उत्तरको ओर बस्ती बहुत दूर तक चली गई है,



और आगे चल कर गांवकी बस्ती शुरू हो जाती है। वहांके मकान विशेषतः मिट्टी और बांसके बने होते हैं। इस तरफ कलकत्तेकी सीमापर बागबाजार और शामबाजार हैं। यहां भी बस्ती घनी है। मकान पक्के हैं।

उत्तर कलकत्ताकी मुख्य मुख्य सड़कोंके नाम ये हैं। सेन्ट्रल एवेन्यू, जिसका नाम अब चित्तरञ्जनऐवन्यू रक्खा गया है, उत्तरमें बीडन स्ट्रीटसे शुरू होकर दक्षिणकी ओर चौरङ्गी रोड पर निकलती है; स्ट्रेण्ड गङ्गा किनारे ठीक नीमतल्ला घाटसे शुरू होकर उत्तरसे दक्षिणको जाती है। दरमाहट्टा सड़क उसीके निकटसे निकलती है, इसका नाम आगे चलकर क्लाइव स्ट्रीट हो जाता है और यह डलहौसी स्ट्रीट पर खतम होती है। चितपुर रोड भिन्न भिन्न नामोंमें नगरकी पूरी लम्बाई में जाती है, यह आगे जानेपर कलकत्ताकी सबसे प्रसिद्ध सड़क चौरङ्गी रोडमें मिल जाती है। चितपुर रोडमें सीधे जाने पर कालीघाट मिलता है। इसीके पूर्वमें एक ऐसी ही लम्बी सड़क है जिसका नाम कार्नवालिस स्ट्रीट है, आगे चलकर इसका क्रमशः कालेज स्ट्रीट, वेलिंगटन स्ट्रीट, वेलेस्ली स्ट्रीट और उड स्ट्रीट नाम पड़ता है। यह उत्तरमें शामबाजारसे शुरू होकर दक्षिणमें थियेटर रोडमें मिलती है। आमहर्स्ट स्ट्रीट कार्नवालिस स्क्वायरके दक्षिण-पूर्व मानिकतल्ला स्ट्रीटसे शुरू होकर बहूबाजारमें निकलती है। अन्तिम सड़क है प्रसिद्ध सर्कुलर रोड, जो कलकत्ताकी पूर्वीय सीमा है। यह चितपुर

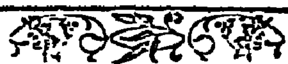


कलकत्तेका व्यापारिक केन्द्र बड़ाबाजार।



से हेस्टिंग्स तकको जाती है।

पूर्वसे पश्चिमकी ओर अनेक सड़कें जाती हैं। लालबाजार की सड़क डलहौसी स्क्वायरके पाससे शुरू होकर सर्कुलर रोडमें निकलती है। चितपुर रोडके उधर इसी सड़कका नाम-बऊबाजार वेहिंगटन स्ट्रीट और बैठकखाना हो जाता है। स्ट्रेण्डरोडसे आरम्भ होकर कैनिंगस्ट्रीट सर्कुलर रोडकी ओर जाती है, फिर इसका नाम कोलूटोला पड़ता है और अन्तमें यह मिरजापुर स्ट्रीटके नामसे सर्कुलर रोडमें निकलती है। इसके उत्तर ओर जानेपर हरीसन रोड मिलता है, जो हवड़ा स्टेशनसे सीधे जाकर सियालदह स्टेशन तक चला गया है। हवड़ा स्टेशनसे लेकर सिंदुरियापट्टी (हरीसनरोड और चितपुर-रोड का मोड़) तकके हरीसनरोडको बड़ा बाजार भी कहते हैं। यह मारवाड़ियोंकी घनी बस्ती है। खूब ऊंचे २ मकान हैं; और यह कलकत्तेका व्यापारकेन्द्र भी है। इसके उत्तरमें मछुआबाजारकी सड़क है, चितपुररोडकी पश्चिम ओर इस सड़कका नाम काटन स्ट्रीट हो जाता है। मछुआबाजार को सड़क सर्कुलर रोडके आगे भी बहुत दूर गौसवर्क्स तक चली गई है। बांसतल्ला और मुक्ताराम बाबू स्ट्रीटकी सड़क क्लाइव स्ट्रीट और कानैत्रा-लिस स्ट्रीटके बीचमें है। रतसकारगार्डेन स्ट्रीट दरमाहट्टासे शुरू होती है और बारानसीघोष स्ट्रीट और सुकिया स्ट्रीटके नामसे सर्कुलर रोडकी ओर जाकर मिल जाती है। बीडन स्ट्रीट नीमतल्ला स्ट्रीट और सर्कुलर रोडके बीचमें है। इसके मध्य-



भागमें एक सुन्दर बाग है। इसके भी उत्तरमें ग्रेस्ट्रीट एक खासी चोड़ी सड़क है और बीडन स्ट्रीटके सामने सर्कुलरोडकी ओर जाता है। चितपुर रोडकी पश्चिम ओर इसी सड़का नाम शोभाबाजार स्ट्रीट हो जाता है, जो कलकत्ताकी सबसे पुरानी सड़कोमेंसे है, श्यामबाजार स्ट्रीट शोभाबाजार स्ट्रीट और चितपुर--रोडके मोड़से शुरू होकर सर्कुलर रोड पारकर बेलगछियाको जाती है।

कलकत्तेके उत्तरी भागके प्रधान बाजारोंके नाम राधाबाजार नया और पुराना चीनाबाजार बड़ा बाजार और तिरहट्टी बाजार है। पहले दो बाजारोंमें कागज, घड़ी, स्टेशनरीकी हर एक चीजें, शीशेके गिलास, छाता लालटेन, मोमजामा, ऊनी कपड़ और और बहुतसी चीजें मिलती हैं। तिरहट्टी बाजारमें तरकारी इत्यादि के अतिरिक्त कसाइयों की भी दुकाने हैं यहाँ अण्डे बड़ी तादादमें बिकने को आते हैं इसके एक किनारे बड़ी सड़कपर जूते तथा तस्वीरोंकोभी बड़ी बड़ी दुकाने हैं। विशेषतः बड़ेबाजारमें कपड़ेका व्यापार होता है। सिंदुरिया पट्टीके मोड़से लेकर हवड़ा स्टेशनके बीचतक हजारों कपड़ेकी दूकाने हैं। जवाहिरात, मेवा, पुस्तकें और दवाओं इत्यादिकी भी अनेकों दूकाने हैं। गगनचुम्बी अट्टालिकाएं, मनुष्योंका इतना आवागमन, और ट्राम, मोटर, गाड़ी, रिक्शा, बसों का इधर उधर दौड़ना देख कर एक नए आदमीको आश्चर्य चकित रह जाना पड़ता है।

कलकत्तेका व्यापारकेन्द्र नगरके बीचके दक्षिण भागमें है



और यह क्लाइव स्ट्रीट, क्लाइवरोड, स्ट्रैण्ड रोड, फेयरली प्लेस, हेयर स्ट्रीट, हेस्टिंग्स स्ट्रीट, एस्प्लेनेड गवर्नमेण्ट प्लेस इत्यादिमें फैला हुआ है। परन्तु व्यापार दृष्टिसे क्लाइव स्ट्रीटका जो महत्व है, वह किसी दूसरे स्थानका नहीं। व्यापारकी शक्तिका पूरा २ पता यहीं मिलता है। न मालूम कितने बड़े बड़े व्यापारी और सौदागर इसे अपना गढ़ बनाए हुए हैं। कलकत्ता-की प्रसिद्ध दूकाने डलहौसी स्क्वायर, ओल्ड कोर्ट हाऊस स्ट्रीट, (Old Cort house) गवर्नमेन्ट प्लेस,(Govt. place.) चौरंगी (Chouringhee) और पार्क स्ट्रीट(Park st.) में है।

बड़ा बाजार, धरमतल्ला और वेन्टिंक स्ट्रीटके बीचका भाग अभी कुछ ही दिन पहले बहुत ही गन्दा था। कलकत्ता इम्पूव-मेन्ट ट्रस्टकी कृपासे अब यह बहुत साफ हो गया है। और सेन्ट्रल ऐवन्यू इसीके बीचसे निकलती है। इसी भागमें धरम-तल्लाके उत्तरमें चांदनी चौक नामका बाजार है। यहां की गलियां बिलकुल भूल भूलैयासी हैं। दूकानोंमें यावत चीजोंका संग्रह रहता है; और यह कलकत्तेके प्रधान बाजारोंमेंसे है। धरम-तल्लाके उत्तरमें सेन्ट्रल एवेन्यू और बेटिंक स्ट्रीट की सीधमें चौरंगी नगरकी सबसे सुन्दर सड़क है। यह लग भग दो मील लम्बी और ८० से १०० फीट चौड़ी है। इस पथमें पूर्ण पार्श्वमें बड़े २ होटल, बड़ी २ दूकानें और एकसेएक बढ़कर आलीशान मकान है और दूसरी ओर एकसे एक बढ़कर, मैदान। आगे चलकर इसी चौरङ्गीका नाम रसा रोड हो जाता है और यह कालीघाटसे



होती हुई, जहां कालीघाटका प्रसिद्ध मन्दिर है, टालीगंज तक जाती है। हालहीमें यह ट्रस्ट द्वारा बहुत दूर तक १५० फीटतक चौड़ी कर दी गई है और इसका नाम बदलकर आशुतोष मुखर्जी रोड रख दिया गया है। यह कलकत्ताकी सबसे चौड़ी सड़क है, और इसमें ट्राम, मोटर और बैलगाड़ियोंके लिये अलग २ पथ बने हैं।

चौरंगीसे थोड़ा हटकर पूर्वमें वेलस्ली स्ट्रीट (Wellesli st.) है, जो खासी चौड़ी और सुन्दर सड़क है। इसके पूर्व पार्श्वमें वेलेस्ली स्क्वायर, मदरसा या मुस्लिम कालेज और वेलिंगटन स्क्वायर(Wellington Square)और दूसरे किनारे पर नया बना हुआ इस्लामिया कालेज है। वेलेस्ली स्ट्रीटके भी पूर्वमें तालतल्ला नामकी बस्ती है, इसमें मुसलमानोंकी संख्या अधिक है। पार्क स्ट्रीट चौरङ्गीसे आरंभ होकर पूर्व की ओर सर्कुलर रोडमें निकलती है। ट्रस्टने इसीकी सोधमें एक नई सड़क बनाकर उसका नाम न्यूपार्क स्ट्रीट(New park st) रख दिया है। सच पूछा जाय तो पार्क स्ट्रीटसे ही अंग्रेजों की बस्ती शुरू होती है। और इसके दक्षिणमें प्रायः सभी उन्हींके मकान हैं। दक्षिण कलकत्ताकी पश्चिमसे पूर्वके जाने वाले मुख्य पथ पार्क स्ट्रीट, मिडिलटन स्ट्रीट (Middleton st.) हैरिङ्गटन स्ट्रीट,(Harington st)और थियेटर रोड (Theatre Road.)हैं और उत्तर-दक्षिण जानेके रोसेल स्ट्रीट(Russele St कैमक स्ट्रीट (Camac St.) उड स्ट्रीट(Wood St.) लोडन स्ट्रीट (Louden St) और रॉडन स्ट्रीट (Randen St.) है।

कलकत्ते के पार्श्ववर्ती स्थान ।

पूर्वमें गंगाको छोड़कर कलकत्तेके चतुर्दिक अनेकों न्यूनाधिक प्रसिद्ध स्थान हैं। नगरके बिलकुल उत्तरमें काशीपुर है जहां बन्दूकोंके सरकारी कारखाने हैं (Gov Gun Foundry & Rifte shell fectories) यहां कई जूट कलें भी हैं, और कुछ दिनों पहले यह स्थान अपनी चीनीकी मिलोंके लिये विख्यात था। काशीपुरका स्टीमरघाट बड़ा सुन्दर है और वह निकटकी चित्र-विचित्र अट्टालिकाओंके कारण और भी सुहावना मालूम देता है।

काशीपुरके दक्षिणमें चितपुर गांव है, जो ३०० वर्षोंसे वहीं स्थित है। इसका नाम पहले चित्रपुर था और यह अपने काली मन्दिरमें बड़ी संख्यामें की गई नरबलिके कारण प्रसिद्ध था। यहीं चितपुरके नव्वाब मोहम्मद रजाखांका मकान और वाटिका भी थी, जिनके हाथोंमें अंगरेजोंके अधिकारमें दीवानी जानेके बाद कई वर्ष बंगालका शासन था।

बेलगछिया और पाइकपाड़ाकी बस्तियां चितपुरके पास ही हैं। प्रसिद्ध बेलगछिया बेहला Belgachia Villa. में पहले ब्रिटिश भारतके गवर्नर जेनरल लार्ड आकलैंड रहते थे। बादको यह भवन द्वारकानाथ टैगोरके हाथमें आया और अब इस पर पाइकपाड़ा राजपरिवारका अधिकार है। जब सन् १८७५ में सप्तम एडवर्ड यहां आए तो उन्हें भारतीयोंकी ओरसे इसी भवनमें भोज दिया गया था।



चितपुरमें सर्कुलर नहर (Circular Canal) हुगलीमें मिल जाती है। इसके दक्षिणमें, पुल पार करके नारकुलडाँगाको मिलती है जहां ओरियण्टल गैस वर्क्सका विशाल कारखाना है।

सियालदह कलकत्तेके पूर्वमें है। सन् १७५७ में यह एक तंग और गन्दी बस्ती थी और आज वही सियालदह नगरके मुख्य २ स्थानोंमेंसे है। यहां ईस्टर्नबंगाल रेलवेका बड़ा भारी स्टेशन है और इसके कारण इसका बंगालके प्रधान २ जूट पैदा करने वाले स्थानोंसे सुगम सम्बन्ध स्थापित हो गया है। कलकत्तेका प्रसिद्ध कैम्बल अस्पताल यहीं है। सियालदहके पूर्वमें साल्ट वाटर लेक्स (Salt water lakes.) हैं।

और भी दक्षिण जानेपर हम एण्टाली (Entally) में पहुंचेगे। यहां यूरोपियन लोगोंकी बस्ती अधिक है। बड़े २ हातोंमें अनेक सुन्दर मकान बने हैं। हाल हीमें यहां कई कल कारखाने बने हैं। म्युनिसिपल कसाई खाना (Municipal slaughter house) भी यहीं है। यहां नालियोंका पंपिंग स्टेशन (Pumping station) भी है जहांसे पम्प किया जाकर नगरका सारा मैला, साल्ट वाटर लेक्समें पहुंचता है और फिर वहांसे नहरमें बह जाता है। म्युनिसिपल रेलवे सर्कुलर रोडके एक किनारे ही सियालदहके पाससे लेक तक चली गयी है और नित्य ही लदकरका हजारों मन कूड़ा करकट ढोकर ले जाती है।

बालीगंज एण्टालीसे आगे, सर्कुलर रोडके पूर्वमें है। यहां एक सुन्दर मैदान है, जिसके पास ही सिपाहियोंकी बारकें

(Barakes) हैं और गवर्नरके शरीर-रक्षकोंकी परेडके स्थान हैं। मैदानके चारों ओर और सड़कोंके किनारे २ भारतीय और अङ्गरेज लक्षाधीशोंके बड़े २ हातोंमें बने हुए सुविशाल भवन हैं। यहीं सुन्दर सदर्न पार्क (Southern park) भी है, जिसमें जल-विहारके लिये एक बड़ी भारी और मनोहर झील भी बनाई गई है। यह झील प्राच्य देशोंकी प्रधान झीलोंमें गिनी जाती है।

बालीगंजके पश्चिममें भवानीपुर है। यहां प्रधानतः बङ्गालियोंकी ही बस्ती है। धातु कर्मकारोंकी भी यथेष्ट संख्या है। हाईकोर्ट और अलीपुर कोर्टमें वकालात करने वाले वकील और अटार्नी भी विशेष परिमाणमें हैं। लण्डन मिशनरी सोसायटीका विद्यालय, प्रेसीडेन्सी जेनरल हास्पिटल और पागलखाना भवानीपुरमें ही हैं। भवानीपुर प्रसिद्ध कालीमन्दिरके पथमें पड़ता है इसलिये यहां चौबीसों घण्टा मनुष्योंका तांतासा बंधा रहता है।

कालीघाट भवानी पुरके दक्षिणमें है। यह भी भवानीपुरकी भांति ही घना बसा हुआ है। यहांके मुख्य २ मकान प्रधानतः कालीमन्दिरके अधिकारी पुरोहित हालदारोंके हैं। वर्तमान काली मन्दिर आधुनिक ढंगपर बना हुआ है और यह चौधरी परिवार द्वारा सन् १८०९ में बनवाया गया था। मां कालीका मन्दिर, जहां अब तक असंख्य बकरोंकी बलि दी जा चुकी है और भक्त और भिखमंगे टूटे पड़ते हैं, प्रत्येक मनुष्यके लिये दर्शनीय



स्थान है।

टालीगंज और भी दक्षिणमें रसारोडकी सीमापर है। कालीघाटसे होती हुई ट्राम यहां तक आती जाती है। टालीगंजकी बस्तीका बनना अभी पूरा नहीं हुआ है और रेसकोर्स और गॉल्फ क्लब (Golf clubs) के अतिरिक्त कोई विशेष दर्शनीय स्थान नहीं है। टालीगंजके आगे ट्राम नहीं जाती। टालीगंज और बालीगंजके बीचकी बारिया हाट रोड एक खूबसूरत सड़क है। टालीगंजमें कई भव्य हिन्दू मन्दिर भी हैं, जो कहा जाता है, सन् १७६६ ई० में बने थे।

टालीगंजके कुछ ही आगे रसापुगलाकी बस्ती ऐतिहासिक दृष्टिसे कुछ महत्व रखती है। वहां मैसूरके टीपू सुलतानके ११ लड़कोंके महलोंके ध्वंसावशेष अब भी देखे जा सकते हैं। श्रीरंगपट्टमके साथ ही टीपू सुलतानके पतनके पश्चात् शाहजादे और उनके परिवार मद्रासके निकट बेलोरके दुर्गमें कैद करके रक्खे गये थे। सन् १८०६ ई० के बेलोरके गदरमें साथ देनेके सन्देह पर वे बेलोरसे बंगाल भेज दिये गये। कलकत्ता पहुंचने पर इन्हें टालीगंजमें घर बनाकर बस जानेकी पूर्ण स्वतन्त्रता मिल गई। लार्ड कार्नवालिसके पास धरोहर स्वरूप जो दो शाहजादे थे उनमें मईजुद्दीन, सुलतान छोटा और टीपू सुलतानका तृतीय पुत्र था। वह अनवरशाह रोडपर बने हुए "खास महल" में रहता था। मुनीरुद्दीन शाह भी टीपू सुलतानके पुत्र थे और स्वर्गीय बख्तियार शाह, सी० आई० ई० के पितामह थे। ये



नाच-कोठीमें रहते थे। वर्तमान समयमें रसपुगलाका "पुल पारमहल" कलकत्तेका सबसे सुन्दर महल है। यह महल स्वर्गीय शाहजादा गुलाममोहम्मद शाह, जी० सी० आई० ई० का है। धर्मतल्ला और टालीगंजकी मस्जिदें इन्हींकी बनवाई हुई हैं। शाहजादा साहबकी विलायत-यात्राके समयमें उनको भेंट किया हुआ महारानी विक्टोरियाके हस्ताक्षर युक्त चित्र और राज परिवारकी कई तस्वीरें अब भी उनके वंशजोंके पास यत्न पूर्वक रक्खी हुई हैं।

अलीपुरमें भी भवानीपुरके पश्चिममें कलकत्ताका एक निकट वर्त्ती सुन्दर स्थान है। खिदिरपुरके रेसकोर्सके पास की गंगानहर परके जीरट वृज (Zeerut bridge) से वहां सुगमतासे जा सकते हैं। अलीपुर २४ परगना और प्रेसीडेन्सी डिवीजनका हेडकार्टर है। यहाँ एक भारतीय सेना रहती है। आर्मी क्लोदिंग डिपार्ट मेण्ट(Army clothing dept) गवर्नमेंट टेलीग्राफ स्टोर यार्ड और इसका कारखाना (Goverment telegraph store yard and workshop)बंगाल गवर्नमेंट प्रेस, और प्रेसीडेन्सी जेल भी यहीं हैं। गोरे यहां कम संख्यामें हैं, परन्तु इधरकी आब हवा अच्छी होनेके कारण इनकी बस्ती बढ़ती जाती है।

कलकत्तेका चिड़ियाखाना (Calcutta Zoolojical gar dens)और बायसरायके ठहरनेका स्थान बेलवेडियर (Belwedere)भी अलीपुरमें ही हैं। हेस्टिंग्स हाउस भी यहीं है, और इन सबोंका विशेष विवरण अगले परिच्छेदमें दिया गया है।



खिदिरपुर अलीपुरके पश्चिममें है। यह बहुत घना बसा हुआ है, जिनमें भारतीय अधिक परिमानमें हैं। यद्यपि खिदिरपुर विशेषकर डकके लिये ही ख्यात है फिर भी इसके अतिरिक्त कुछ दर्शनीय स्थान हैं। मिलिटरी आरफन स्कूल (Military orpham school.)

सेन्ट स्टीफेनका गिरजाघर, सरकारी डक, और माजूचली बाजार, यहांके मुख्य स्थान हैं। सन् १६८० में कर्नल हेनरी वारसन, ने जिनका गवर्नर जेनरल हेस्टिंग्ससे विरोधभाव था, यहां कई नये डक और जंगी और व्यापारी जहाजोंकी मरम्मतके लिए एक नौसेनाका घाट बनवाया था। आठ वर्षों तक तन मन धनसे इस कामको सफल बनानेमें लगभग १० लाख रुपये लगा देनेके बाद आर्थिक अभावके कारण उन्हें इसे स्थगित कर देना पड़ा। उनके बाद ये डक इस्टइंडिया कम्पनीके प्रधान मिलटरी इन्जीनियर कर्नल किड(Coronel kyd)के दो पुत्रोंके हाथों आया; और यह इन्हींसे पूरा हुआ।

खिदिरपुरके उत्तरमें इसके और मैदानके बीचमें टाली 'नहर बहता है। यह सन् १७७५ ई० में कर्नल टाली(Coronel Tolly द्वारा बनवाई गई थी। इसका नाम पहले गोविन्दपुर नहर था। यह गंगासे सम्बन्ध रखती है। आगे चलकर यह नहर चितपुरके उत्तरको सर्कुलर नहर(Circular canal)जो हुगलीमें मिल जाती, मिलती है। इस जलमार्ग द्वारा सुन्दर और पूर्व बङ्गालसे यथेष्ट परिमान में माल आता है। यहां भी नहरपर एक पुल है जिसका नाम पहले सन् १७१५ ई० में कंपनी द्वारा दिल्ली सम्राटके पास भेजे



गए दूतोंके प्रधान एडवर्ड सरमन(Edward sarman)के नामपर था। परन्तु अब इसे खिदिरपुर ब्रिज कहकर पुकारा जाता है। धरमतल्लाके एस्प्लेनेड जंक्शनसे जो ट्राम खिदिरपुर डक तक जाती है, वह इसी पुलपरसे होकर जाती है।

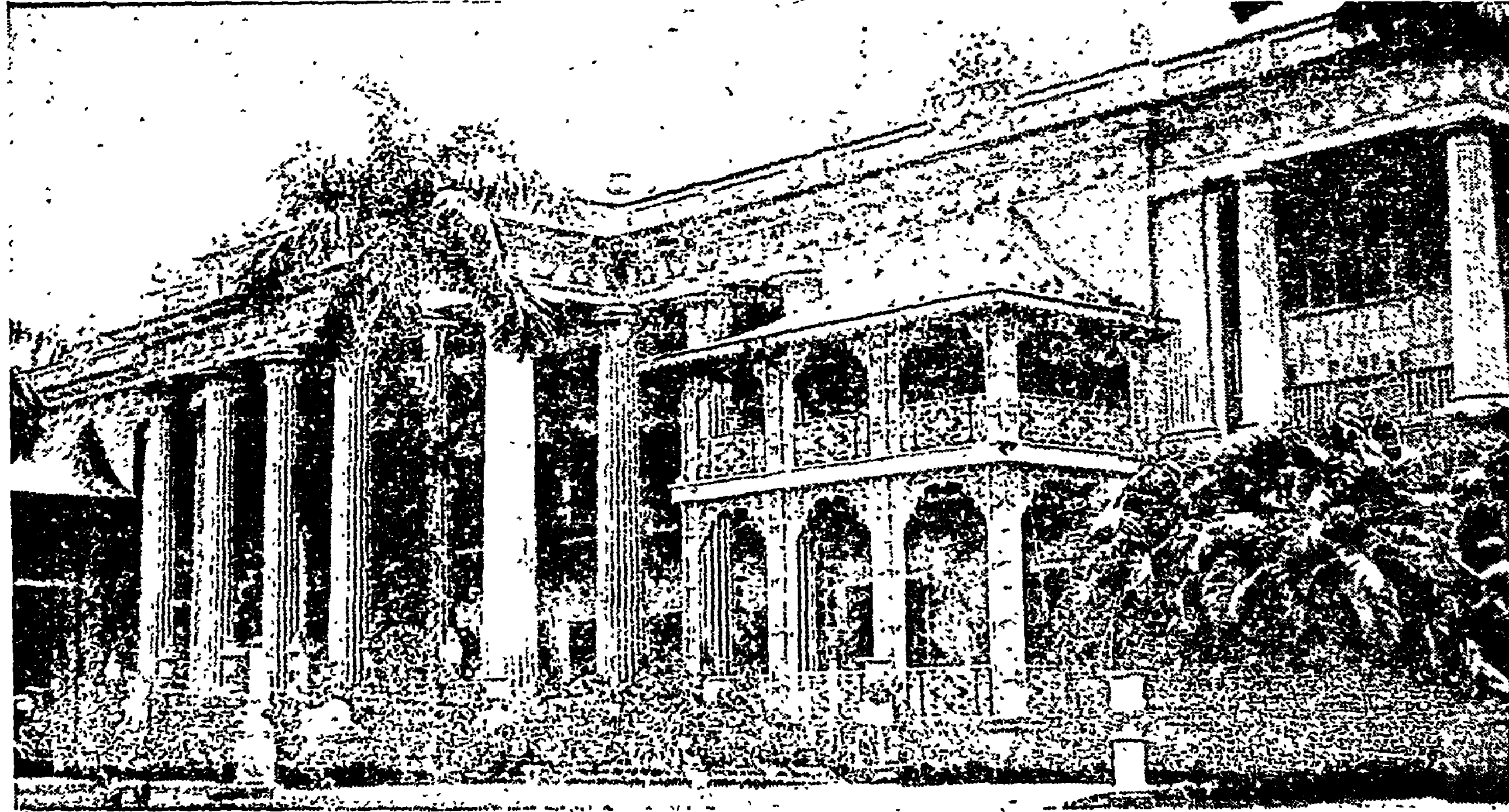
पुलसे कुछ दूर हटकर पश्चिम दिशामें हेस्टिंग्स है जो रेसकोर्ससे लेकर स्ट्रैंड रोड तक फैला हुआ है। यह सरकारी बस्ती है, और यहां विशेष रूपेन सैनिक अफसर और पोर्ट कमिश्नरोंके हार्बर मास्टर्स डिपार्टमेण्ट(Harbour Masters deparment के कर्मचारी ही रहते हैं। यहां नाविक और सैनिक संघ भी हैं। बंग इतिहास प्रसिद्ध नव्वाब मुरशिदाबादके दीवान महाराज नन्दकुमारको फाँसी हेस्टिंग्समें ही हुई थी। यह अन्यायपूर्ण कार्य ५ अगस्त सन् १७७५ ई० में हुआ था। हेस्टिंग्सको लोग कुली बाजारके नामसे भी जानते हैं। क्योंकि पहले फोर्ट विलियमके बनानेमें लगे हुए सहस्रों कुली और कर्मचारी यहीं रहते थे।

हेस्टिंग्सकी पश्चिम दिशामें, टाली नहरपर एक दूसरा पुल, जिसका नाम हेस्टिंग्सब्रिज(Hastings bridge)है। पहले यहां एक बड़ा सुन्दर लटकनेवाला पुल था,जो मार्किस आफ हेस्टिंग्स Marquis of Hastngs) की स्मृतिमें बनाया गया था। सन् १८७४ ई० में यह अचानक टूटकर नष्ट हो गया और उसके स्थानमें वर्त्तमान खंभोंपर खड़ा हुआ पुल बना,हेस्टिंग्सब्रिजसे स्ट्रैंडरोड और इसकी शाखायें नदीके किनारे२उत्तरकी ओर जाती हैं पोर्ट कमिश्नरोंकी रेलवे स्ट्रैंडरोडकी जेटियोंसे खिदिरपुर डक



तक जाती आती है। टाली नहरका लोहेका पुल, जिस-पर होकर रेल जाती है, ऐसे वैज्ञानिक ढंगपर बना हुआ है जो बड़े स्टीमरके आवागमनके समय ऊपर उठा दिया जा सकता है।

हेस्टिंग्सब्रिज पारकर दक्षिण दिशामें जानेपर हम गार्डेन रीच (Garden Reach)में पहुंचते हैं। यह कलकत्तेकी निकटवर्त्तिनी सबसे पुरानी बस्ती है। यह पहले नदी-तट दो मील तक सुन्दर और सुरम्य अट्टालिकाओंसे शोभित थी, यह वर्षों कलकत्ताके अंग्रेज धनिकोंका निवासस्थान था। सन् १८५७ ई० में अवधके अन्तिम नव्वाब वाजिदअलीशाह यहां आकर बस गये। तबसे यहां अनेकों परिवर्त्तन हुये। वे और उनके बहुतसे कर्मचारी यहां बड़ी अदालतके प्रधान जज सर लारेन्सपील(Sir Laurence Peel)के विशालभवनमें ठहरे। नव्वाबने आसप्रासके कई मकान और जमीन खरीद ली, इस कारण यहां यूरोपियनोंकी संख्या कम हो गई। विगत पचास वर्षोंमें गार्डेन रीचमें अनेक महत्वपूर्ण परि-वर्तन हुए हैं। नवाब वाजिदअलीशाहकी मृत्युके पश्चात् उनकी सारी सम्पत्ति एक सङ्घ(Syndicate ने खरीद ली और नव्वाबके कर्मचारीगण वह स्थान छोड़कर इधर उधर चले गये। उनके जाते ही यहां कई जूट मिलें, रस्सी बनानेके कारखाने,लम्बे चौड़े डक और उनसे सम्बद्ध माल उतारनेका स्थान और फैक्टरियां खड़ी हो गईं। खिदिरपुर और गार्डेनरीचकी ऐसी काया पलट हो गई जिसे देखकर कोई कहही नहीं सकता कि यह स्थान कभी अंग्रेजोंकी पुरानी बस्ती



राजेन्द्र मल्लिकका प्रसिद्ध भवन ।



था। गार्डेनर विदेशोंमें कुली भेजनेकी एजेन्सियोंका प्रधान केन्द्र है। बंगालनागपुर रेलवे कम्पनीका प्रधान कार्यालय भी यहीं है।

पांचवां परिच्छेद।

कलकत्तेकी खुली जगहें।

कलकत्ता नगरकी खास २ चीजोंमें मैदान और सुन्दर पार्कोंका विशेष स्थान है। चौरङ्गीके सामनेका मैदान नगरका सबसे बड़ा मैदान है। यह लगभग २ मील लम्बा और सवा मील चौड़ा है। यहां संध्या समयका दृश्य बड़ाही मनोहर होताहै झुंडके झुंड लोग हवाखोरीके लिये निकलते हैं, जगह जगह फुटबाल, हाकी, टेनिस, क्रिकेट इत्यादिके खिलाड़ी इधर उधर दौड़ रहे हैं। यहां जब कोई बढ़ियां मैच (Match) होती है तो इस प्रकार भीड़ होती है कि मालूम पड़ता है पूरा कलकत्ता उमड़ पड़ा हो। इसीके दक्षिण पार्श्वमें घुड़दौड़का मैदान (Race course) है, जो एशिया भरमें अद्वितीय हैं।

बड़े मैदानकी सृष्टिका श्रेय क्लाइवको है क्योंकि उसीने फोर्ट बनानेका विचारकर जंगलको कटवा डाला और इसे सैनिक व्यवस्थाके लिए निश्चित किया। यह मैदान कारपोरेशनके बाहर



है। अब यह स्वप्नमें भी कोई नहीं सोच सकता कि १७० वर्ष पहले यह मैदान डकैत, चीता, और जङ्गली सुअर जैसे हिंस्र पशुओंसे भरा था। ऐसा कहा जाता है कि जहां आजकल अङ्गरेजोंके गिरजाघर है वहां पहले वारेन हेस्टिंग्स शिकार खेलता था और उस स्थानसे निरापद होकर लौट जाना एक मनुष्यके लिए बड़ा भारी काम समझा जाता था।

जिस समय मैदान अपने पेड़ोंके लाल फूलोंसे आच्छादित रहता है उस समय वह बहुतही भला मालूम देता है। और गरमसे गरम दिनमें भी वृक्षोंकी सुखद शीतल छाया सूर्यके तापसे व्याकुल पथिकको आह्लादित कर देती है। यह कलकत्ताका सौभाग्य है कि गरम दिनोंमें भी रातको ओस पड़ती है, और मैदान बारहों महीने हरा भरा रहता है।

मैदानकी सबसे पुरानी सड़क है कोर्स (The Course) जो ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीटकी सीधमें चली गई है। इसीका नाम आगे चलकर रेडरोड और खिदरपुररोड हो जाता है। यद्यपि यह सड़क हवाखोरीके लिये बनाई गई थी फिर भी उस समय जब हवा चलती थी तो धूलही धूल हो जाती थी। आज-कल यह कलकत्ताकी सबसे खुली सड़क है और गवर्नमेंट हाउस (Govet., House)से लेकर खिदिरपुर ब्रिज तक जाती है। इस सड़कके पश्चिम एक चौड़ी सड़क और है जिसका नाम सेक्रेटरी वाक (Secretarys Walk) है और यह सन् १८२० में बनाई गई थी। किलेके दक्षिणमें घोड़ोंके लिए एक छोटासा

मैदान है जिसका नाम एलेनबरोकोर्स (Ellenbouroyh Course) है,और पूर्वमें रेस कोर्स,और विक्टोरिया मेमोरियल Victoria Memorial) है।

इडेन गार्डेन (Eden Garden) कलकत्तेकी खूबसूरत जगहोंमें है। कुछ लोग समझते हैं कि इसका नाम अंग्रेजीके "इडेन" शब्द,जिसका अर्थ स्वर्ग है,के ऊपर रखा गया है, परन्तु ऐसा नहीं है। लार्ड आकलैण्डकी जो, भारतके वायसराय रह चुके हैं, इडेन नामकी दो बहनोंपर ही इसका नाम रक्खा गया है। यह बाग उनकी उदारताका द्योतक है।

इडेन गार्डेन हाईकोर्ट(High Court)के दक्षिणमें, गवर्नमेंट हाउस और गंगाके मध्यमें स्थित है। बागके भीतरके सुन्दर लाल टेढ़े मेढ़े पथ बड़ेही भले मालूम देते हैं, और कृत्रिम सरोवरसे तो इसकी शोभा द्विगुणित हो गई है। सबेरे शाम यहां लोगोंका अच्छा जमाव रहता है। इडेन गार्डेनके भीतरका बौद्ध-मंदिर सन् १८४५ में युद्धके बाद प्रोम नगरसे यहां लाया गया और बड़ाही सुन्दर है। गार्डेनके भीतर एक छोटासा साफसुथरा मैदान भी है; इसीके बीचमें बैण्ड बजानेका स्थान है। यहां पहले बैन्ड बजता था परन्तु अब कारपोरेशनने बन्द कर दिया। जगह जगह रंग बिरंगे पुष्प वृक्ष बड़े चित्ताकर्षक हैं। झीलके कमल भी अपना सानी नहीं रखते। कलकत्ता क्रिकेट क्लबकी ग्राउन्ड (Play Ground) यहीं है,जो भारतवर्षमें सर्वोत्तम है।

डलहौसी स्क्वायर (Dalhousi Sq.)

इस स्थानका ऐतिहासिक महत्व है और यह प्राचीन कलकत्ताका केन्द्र रह चुका है। यह गवर्नमेंट हाउसके कुछ उत्तर में है और सबसे आसानीसे ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीटसे पहुंचा जा सकता है। यह लगभग २५ एकड़ भूमिमें है और अपने मनोहर सरोवर और चतुर्दिककी सुरम्य विशाल अट्टालिकाओंके कारण संसार भरमें अद्वितीय माना जाता है। कलकत्ताके जन्मकालमें यह तालाब पानी पीनेके लिए सरकार द्वारा खुदवाया गया था और लोगोंको इसमें स्थान करनेसे रोकनेके लिये इसके चारों ओर जङ्गले लगा दिए गये थे। प्राचीन फोर्ट विलियम इसीके पार्श्व-में था और ब्लैकहाल इसके सामनेके बड़े पोस्टआफिसके उत्त-रमें सटा हुआ है। इसके कुछ ही हाथ दूरपर उस दुर्घटनामें मरे हुए लोगोंके नामकी स्मृतिमें बनाया हुआ हालवेल मानुमेन्ट है

इस क्वायरके अतिरिक्त नगरमें और भी छोटे बड़े सार्वजनिक बाग हैं जैसे, बीडन स्क्वायर, कालेज स्क्वायर कार्नवालिस स्कायर, वेलिंगटन स्क्वायर राडन स्क्वायर, बालीगंज दान इत्यादि।

इनमें अधिकतर छोटे बागही हैं परन्तु कलकत्ता जैसी घनी बस्तीके लिये तो ये स्वर्गतुल्य हैं। नगरकी आब हवाको और भी अच्छा बनानेके लिए इम्प्रूवमेंट ट्रस्टने कई नये पार्कोंको

बनाना आरंभ किया है, जिनमेंसे कुछके विवरण नीचे दिये जाते हैं।

सदर्न पार्क। (The Seuthern Park)

इसका क्षेत्रफल १३५ एकड़ है और यह वालीगंजमें लेक-रोडपर गरिया हाटरोड और रसारोडके मध्यमें स्थित है। इसमें विशेष दर्शनीय एक कृत्रिम झील है जो आधमील लम्बी है और जिसमें बोट चलानेकी खूब सुविधा है। यहां कलकत्ता बोडिंग क्लब (Calcutta Bourding)का प्रधान कार्यालय भी है। नगरकी घनी वस्तीसे दूर रहनेपर भी यह बाग बड़ी आसानीसे देखा जा सकता है।

ईस्टर्न पार्क (Eastern Park) एक दूसरा नया पार्क जिसका नाम ईस्टर्न पार्क होगा पार्कसर्कसके पूर्वमें बन रहा है। पार्कसर्कस आजकल आवागमनका केन्द्र हो रहा है और यहां नगरके सभी हिस्सोंसे ट्राम आती जाती रहती है। पार्कमें फुटबाल और क्रिकेट ग्राउन्ड भी रहेगी।

काशीपुर-चितपुर पार्क

Cassipur=Chitpur Park

जिस स्थानपर यह पार्क बन रहा है, वहांकी बड़ी आवश्यकता भी थी। यह लगभग ७६ एकड़ भूमिमें है और तल्ला वाटर वर्क्स (Talah Water works) के निकटही है। यह वाटर वर्क्स बारकपुर रोडके पूर्वमें कुछही दूरपर है।



फुटबाल और क्रिकेट ग्राउन्डके अतिरिक्त यहां एक छोटीसी झील भी बनाई गई है। फूलोंके पेड़ भी अच्छी संख्यामें हैं। कलकत्तेका रेडिओ ब्रोडकास्टिंग स्टेशन(The Calcutta Broad casting Station)भी इसी पार्कमें है।

संध्या और सवेरे समय कलकत्तेके सभी पार्क और मैदान मनुष्योंसे भर जाते हैं। परन्तु सवेरेके समय कुछ और ही बात है। जाड़ेके दिनोंमें मैदान ओससे ढका रहता है। धनी अंग्रेज अपने घोड़ोंको इधर उधर दौड़ाते नजर आते हैं। गरमी के दिनोंमें तीसरे पहर हाकी, टेनिस और फुटबाल देखनेको हजारोंकी संख्यामें मनुष्य इकट्ठे होते हैं; बरसातमें रगबी और शीतकालमें क्रिकेट प्रधान खेल है। टालीगंजमें दो बढ़िया गाल्फ क्लब भी हैं रायल कलकत्ता गाल्फ क्लब (Royal Calcutta GolfClub)और टालीगंज क्लब(Tallygunge Club) एडेन गार्डन और हाईकोर्टके बीच स्ट्रैंडरोडपर अंग्रेजोंके लिए स्नानागार भी बना है जो एकसौ फीट लम्बाई और उक्त क्लबके सदस्य ही इसमें जा सकते हैं।

कलकत्ता रेसकोर्स (Calcutta Race Course)

मैदानके दक्षिण पार्श्वका घुड़दौड़का मैदान, जो विक्टोरिया मेमोरियलसे लेकर हेस्टिंग्स तक है; भारतवर्षमें सर्वोत्तम है। मेम्बरोंके देखनेके लिये बनी हुई विशाल गैलरियोंके अतिरिक्त और भी तीन गैलरियां हैं जहां :क्रमशः १०) रु०, ५) रु० और ३) रुपये



का टिकट होता है। बड़े दिनोंमें कलकत्तामें घुड़दौड़ प्रधान वस्तुओंमें है और किंग-एम्परर कप और वायसराय कपकी रेसें मुख्य रेसोंमेंसे हैं।

वारकपुरमें एक दूसरा नया रेसकोर्स बन रहा है, जो करीब २ पूरा हो चुका है, और बिलकुल आधुनिक ढंगका है। कलकत्तेसे वहां तक रेल सम्बन्ध भी शीघ्र होने वाला है।



छठां परिच्छेद

कलकत्त के दर्शनीय स्थान।

प्रत्येक दर्शक, चाहे वह रेल-पथसे आवे अथवा स्टीमरसे, कलकत्त की भूमिपर पैर रखते ही यहांकी विशाल इमारतें, यहांका जनस्रोत और मोटर, ट्राम आदिका अविश्रान्त आवागमन देखकर अवश्य आश्चर्य चकित हो जायगा। बहुत काल पहिले ही कलकत्ता "महलोंका नगर" कहा जाता था और अब तो नई नई सड़कों और आधुनिक ढंगपर बनाये हुए ऊंचीसे ऊंची अट्टालिकाओंको देखकर "महलोंका जंगल" कहा जा सकता है।

कलकत्ता इतना विशाल नगर है कि घूमनेकी इच्छा रखने वाला मनुष्य यही सोचकर घबड़ा जाता है कि क्या २ देखा जाय। इस परिच्छेदमें कलकत्तेके मुख्य २ दर्शनीय स्थानोंका विवरण दिया गया है जिससे दर्शक कम समय और कम

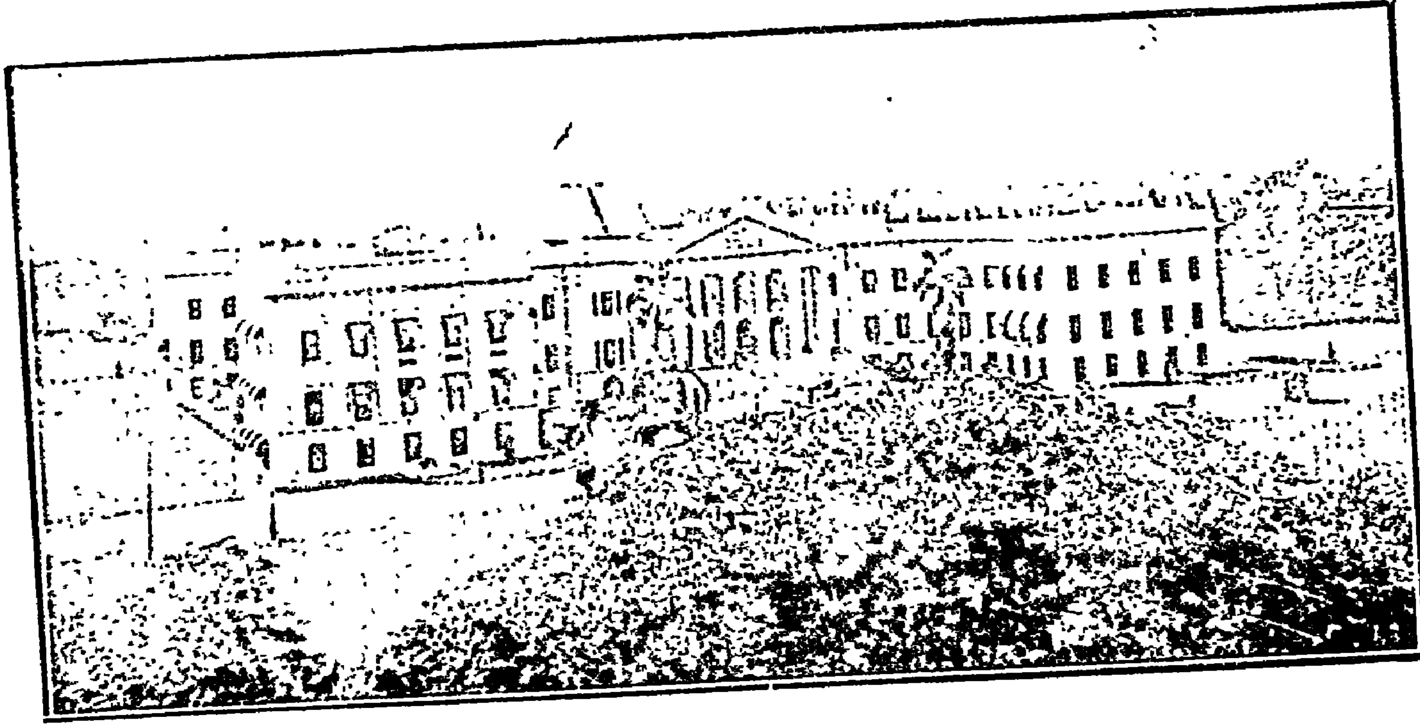


कष्टमें उन्हें देख लें ऐसे उपाय बताए गए हैं ।

ओल्ड कोर्ट हाउस स्थित ग्रेट ईस्टर्न होटल (Great Eastern Hotel) और चौरंगीके ग्रेण्ड होटल और कान्टिनेण्टल होटल (Grand Hotel and Continental Hotel कलकत्तेके मुख्य अंग्रेजी होटल हैं। और भारतीयोंके छोटे बड़े होटल करीब २ प्रत्येक बड़ी सडकों पर हैं। ठहरनेके लिये हरीसन रोड तथा अन्य स्थानोंपर भी कई धर्मशालायें हैं ;जहां तीन दिन तक ठहरा जा सकता है।

गवर्नमेंट हाउस (Government house)

वर्तमान गवर्नमेंट हाउस या लाट साहबकी कोठी जनवरी सन् १८०३ ई० में लार्ड वेलेस्ली द्वारा खोली गई थी। यह एक सफेद भव्य इमारत है और इसके ऊपर एक सुन्दर गुम्बद है। यह मैदानकी उत्तरी सीमा पर है। इस भवनके मध्य भागमें दरबारका कमरा है और इसमें इस तरहसे खिड़कियां लगाई गई हैं कि सब ओर हवा आ सके। इस कोठीके बनवानेमें लगभग १३॥ लाख रुपये व्यय हुये थे। यह इमारत ६ एकड भूमिमें स्थित है और इसके चारों ओर फूलोंके पेड़ और सुन्दर छोटे २ मैदान बड़ी खूबसूरतीसे लगाये गये हैं। गवर्नमेंट हाउससे मैदानका दृश्य बड़ा ही मनोहर जान पड़ता है; बड़ी दूर तक केवल हरी जमीन ही दिखाई देती है। मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है; इसके सामनेकी सीढ़ियोंकी लम्बी कतार बड़ी भली मालूम देती है और अन्य गवर्नर या उच्च पदाधिकारी इसी द्वारसे



कलकत्ताका गवनमेण्ट हाउस ।



प्रवेश करते हैं। कुलमें ६ द्वार हैं; उत्तर और दक्षिण दिशाके लोहेके विशाल प्रवेश द्वार अभी हालहोमें बनाए गये हैं; और बाकी पूर्व और पश्चिमके चारों दरवाजे अर्धगोलाकार बने हुए हैं जिनपर एक एक सिंहकी विशाल मूर्तियां हैं।

गवर्नमेंट हाउसके दक्षिण कोणसे पश्चिम ओर जानेसे ही इडेनगार्डन मिलता है, जिसका विवरण अगले परिच्छेदमें दिया जा चुका है। इडेनगार्डनमें घूमते हुये, उत्तरकी ओर जानेपर सामने ही बृहद्‌काय हाईकोर्ट (बडी अदालत) मिलेगा।

बड़ी अदालत (*The High Court*)

यह सुन्दर इमारत स्ट्रैण्ड रोडके पास ही है। यह सन् १८७२ ई० में बनकर समाप्त हुई। सन् १७७४ ई० में स्थापित सबसे बड़ी अदालत (Supreme Court) ही "जो भारतीयोंको अत्याचारसे बचाने और उन्हें अंगरेजी कानूनकी उपयोगिता बतानेके लिए" खोली गई थी, बादको हाई कोर्ट बना दी गई। इसमें २८० फोटका चुम्बी बुर्ज है। जहांसे नगर और मैदानका बड़ा ही आकर्षक दृश्य दिखलाई पड़ता है। इसके भीतर छोटसा सायेदार बाग और सुनहली मछलियोंसे भरा हुआ एक छोटा तालाव है। जिसके बीचमें एक फौव्वारा भी है। कहा जाता है यह सुन्दर भवन याइपर्स (Ypres) स्थित टाउनहालके ढंगपर बनवाया गया है। जो गत यूरोपीय महासमरमें नष्ट हो गया।



हाईकोर्ट के निकट ही स्ट्रैण्ड रोडके मोड़पर—

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया

(Imperial Bank of India) का सुविस्तृत भवन है। जहां इस बैंकका हेड आफिस है। इसका नाम पहले बंगाल बैंक (Bank of Bengal) था। सन् १८०६ में भी बैंक यहीं पर था परन्तु इसका नाम गवर्नमेन्ट बैंक आफ बङ्गाल (Government Bank of Bengal) था।

हाईकोर्टके बगलमें पूर्वकी ओर कलकत्तेका **टाउन हाल** (*Town Hall*) है। यह टाउन हाल सन् १८१३ ई० में बनकर तैयार हुआ था और इसके बनाने में सात लाख रुपये खर्चा हुये थे जो अधिक परिमानमें जनता द्वारा लाटरीसे मिला था। इसमें दो मंजिलें हैं। ऊपरी तल्लेमें एक बहुत बड़ा हाल है जो १७२ फीट लम्बा और ६५ फीट चौड़ा है। आजकल बङ्गाल व्यवस्थापिका सभा (The Bengal Legislative Council)की बैठक यहीं होती है। व्यवस्थापिका सभाका भवन इडेन गार्डेन और टाउनहालके बीचमें अभी बन ही रहा है। इसके अतिरिक्त बड़ी २ सार्वजनिक सभायें भी यहीं होती हैं। टाउनहाल और हाईकोर्टमें ऐतिहासिक महत्वपूर्ण चित्रोंके अच्छे संग्रह हैं।

टाउनहालके बगलमेंही और लाटसाहबकी कोठीके सामने गवर्नमेंटप्लेसके पश्चिम पार्श्वमें सड़ककी पूरी लम्बाईतक

सरकारी खजाना है।

(The Treasery Buildings)

यह भवन सन् १८८४ ई० में सरकारी कार्यालयोंके लिए बनाया गया था। राजधानी कलकत्तासे दिल्ली बदल जानेके कारण यह अब दूसरेही काममें लाया जाता है। जहां पहले इम्पीरियल सेक्रेटेरियट (Imprial Secretariat) था वहीं अब ज्योतिषसंघ (Astronomical Society) का वृहद् पुस्तकालय है, जो प्रत्येक वृहस्पतिवार और शुक्रवारको संध्या समय ५ बजेसे ७ बजेतक खुला रहता है। इससे कुछ ही दूर उत्तर दिशामें,

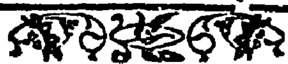
सेन्टजानगिरजाघर (*St. John's Church*)

यहां जाब चारनक तथा अन्य प्रसिद्ध अंग्रेजोंकी कबरें है।

सेन्टजान गिरजाघरके दक्षिणमें हेस्टिंग्स स्ट्रीट (Hastings St.) जिसमें कि ७ नं० के मकानमें वारेन हेस्टिंग्सकी द्वितीय पत्नी मैडम इमहोफ (Madam Imhoph) जो फ्रेञ्च महिला थीं रहती थीं। व्याहके बाद तीन वर्षतक वारेन हेस्टिंग्स स्वयं इस मकानमें रहते थे और गवर्नमेंट हाउसमें उनका कार्यालय मात्र था। और भी उत्तर जानेपर हम—

डलहौसी स्क्वायर (*Dalhausie Sq,*)

में पहुंचते हैं। इस स्क्वायरका पूर्ण विवरण अगले परिच्छेदमें



दिया जा चुका है।

स्क्वायर चारों ओर विशाल भवनोंसे घिरा हुआ है और इनमें भी सबसे भव्य—

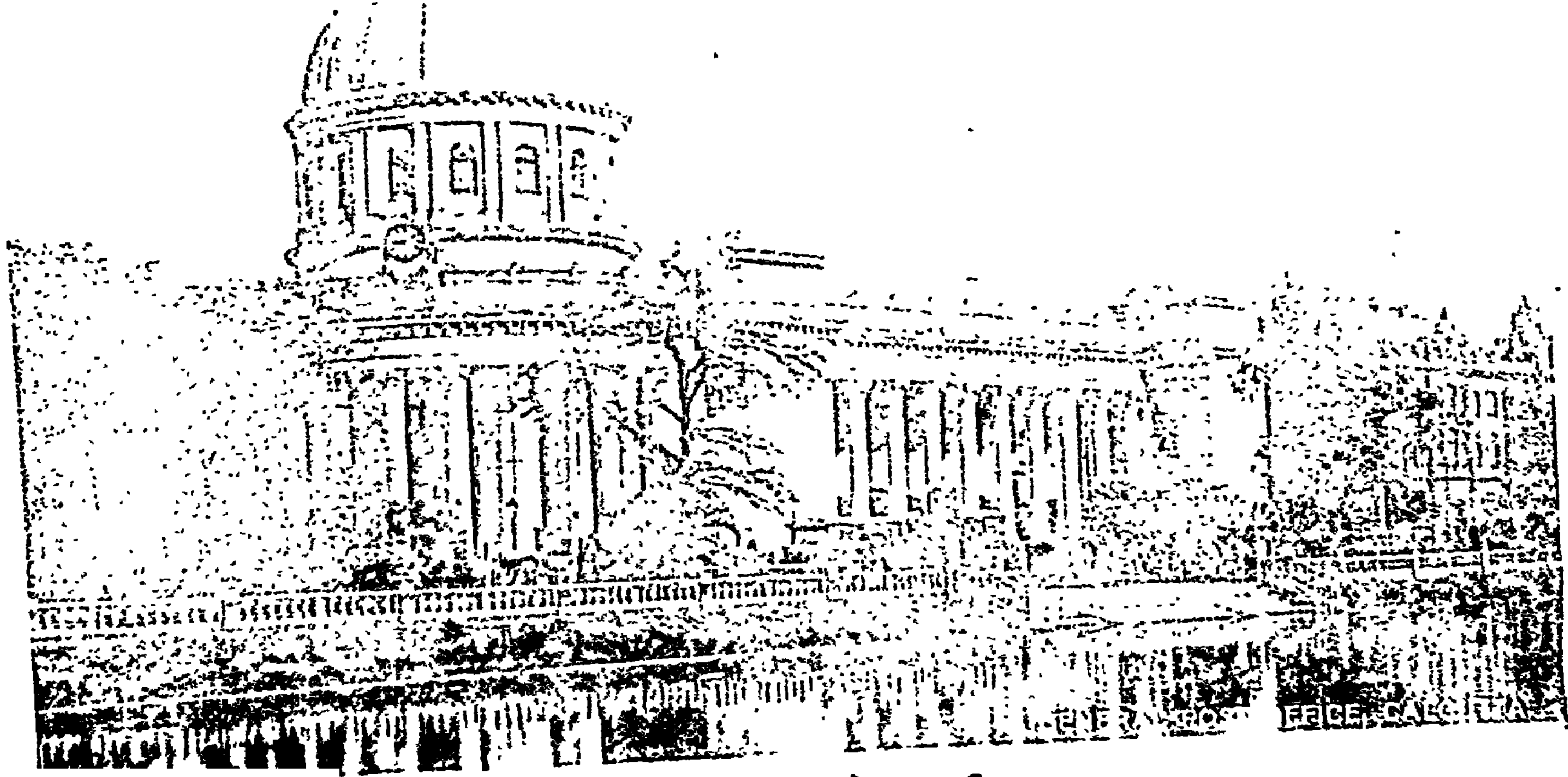
बड़ा पोस्टआफिस
(The General post Office)

है। यह सुदृढ़ इमारत स्क्वायरके पश्चिम ओर है। इस दूधके समान धवल भवनका गगनचुम्बी विशाल गुम्बद और भारी २ खंभे वास्तवमें दर्शनीय है। यह सन् १८६८ ई० में खोला गया था और प्राचीन फोर्ट विलियमकी कुछ भूमिपर स्थित है। फर्शपर जगह जगह गड़े हुये पीतलके पत्तर प्राचीन फोर्टकी मोटी दिवारोंके द्योतक हैं। पोष्टआफिससे सटा हुआ उत्तरकी ओर सुप्रसिद्ध—

कालकोठरी (Black Hall)

का स्थान है

बड़े पोस्टआफिसपर लगी हुई सूचना बतलाती है कि यह स्थान भीतर है। द्वारके भीतरही काले संगमरमरकी फर्शका एक घिरा हुआ स्थान है, जो चौड़ाईमें उतनाही १४ फीट १० इंच और लम्बाईमे कुछ छोटा है। कालकोठरीकी लम्बाई तो १८ फीट थी परन्तु उसका कुछ हिस्सा कस्टम हाउसमें चला गया है। जैसा कहा जाता है, इसी स्थानपर स्थित कोठरीमें १४६ अंग्रेज कैद कर दिये गये थे जिनमेंसे केवल २३ ही जीवित निकले यह घटना २० जून सन् १७५६ ई० की रातकी है।



कलकत्तेका बड़ा पोष्टआफिस ।



पार्श्वस्थित लाल ईंटकी इमारतपर लगी हुई सूचनाके अनुसार "उस दीवालसे १६ फीट पीछे पुराने फोर्ट विलियमका पूर्व प्रवेशद्वार था, जहांसे ब्लैकहालमें मरे हुये मनुष्योंकी लाशें लाई जाकर २१ जून सन् १७५६ ई० को पासकी खाईमें फेंक दी गई थीं"। इसी जगहपर—

हालवेलस्मारक (The Holwell monument)

है।

जान जेफ़ानिया हालवेल (John Zephania Holwell) ने, जो ब्लैकहालसे जीवित लौटे हुए कुछ मनुष्योंमेंसे था, पहले यहांपर एक स्मारक बनाया था। सन् १८२१ में वह हटा दिया गया था, परन्तु सन् १६०२ ई० में लार्ड कर्जनने उसी स्थानपर संगमरमरका वर्तमान स्मारक बनवाया, जो पहले हालवेल द्वारा ईंटके बने स्मारकके रूप और आकारका है। उन मृतकोंके अतिरिक्त और भी कई बातें उसपर अङ्कित हैं। डलहौसी स्क्कायरके उत्तरमें—

राटईर्स बिल्डिङ्ग Writers Building

है, जो स्क्वायरकी सीमाके सामानान्तर रूपसे लम्बी है। यह पहले ईष्टइण्डिया कम्पनीके सामान्य कर्मचारियों या क्लर्कोंके लिये बनाई गयी थी और उस समय बिलकुल साधारण थी; परन्तु सर ऐशली एडेन (Sir Ashley Eden) द्वारा इसका भव्य अग्रभाग बननेपर इसकी बिलकुल कायापलट हो



गई। कलकत्तेका सबसे पहला गिरजाघर-सेण्टएनीका गिरजा-घर, जो सन् १७०९ ई० बना था राइटर्स बिल्डिङ्गके पश्चिम कोन-पर था।

वर्तमान मिशन रो (Mission Row) का नाम पहले रोप वाक (Rope Walk) था और इसके और टैंकस्कायर (वर्तमान डलहौसी स्कायर) के बीचमें एक भी मकान नहीं था।

मैंगो लेन (Mangoe Lane) और डलहौजी स्कायरकी पूर्व सीमाके मोड़पर—

करेन्सी आफिस (Crency Ouffice)

है। यह विशाल मकान पहले आगरा ऐण्ड मास्टर मैंस बैंक (Agra and Masterman's Bank) के लिये बना था। इसके बीचका हाल बहुत बडा बना है और देखने योग्य है।

डलहौसी स्कायरकी दक्षिण सीमा और ओल्डकोर्ट हाउस स्ट्रीटके मोड़ परका भारी और खूबसूरत महल जैसा मकान टेलीग्राफ आफिसका है। अब यहां पार्सल आफिस और डेड लेटर आफिस (Dead Letter Cffice) है। इससे सटा हुआ, वेलेस्ली प्लेस (Wellesley Place) में टेलीग्राफ आफिसका नया भवन है, जो आधुनिक ढंगके सुगमातिसुगम रूपसे कार्य करने वाली मशीनोंसे युक्त है।

यों तो डलहौसी स्कायरमें अनेक प्रस्तर मूर्त्तियां हैं; परन्तु सबसे अधिक दर्शनीय स्वर्गीय महाराजा दरभंगाकी ही है। यह



सफेद संगमरमरकी सुन्दर मूर्त्ति मिष्टर आँनस्लो (Mr., E. Onslow) द्वारा बनाई गई है। यह स्कायरके दक्षिण पश्चिम कोनेपर है।

इसके ठीक सामने, काउन्सिल हाउस ष्ट्रीटमें—

व्यापारिक अजायबघर ।

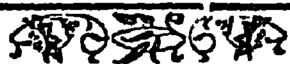
(Commercial Museum)

जो लाल ईटोंकी लम्बी इमारत है। यहां भारतीय वस्तुओंके सम्बन्धकी पुस्तकें इत्यादि ही हैं। यह प्रति दिन १०॥ बजे सबेरेसे ५॥ बजे शाम तक खुला रहता है और शनिवारको २॥ बजे तक। इसमें प्रवेश निःशुल्क है।

डलहौसी स्कायरकी दक्षिण सीमापर हेयर ष्ट्रीट है, जिसका नाम डेविड हेयर (David Hare) के नाम पर है। ये चर्च लेनके मोडपर रहते थे; घड़ी बनानेका काम करते थे; बड़े ही सहृदय थे और ये भारतमें अंग्रेजी शिक्षाके जनक समझे जाते हैं। छोटी अदालत हेयरष्ट्रीटमें ही है और पहले इसीकी भूमिके एक भाग पर बरफका बड़ा भारी डिपो था। यह ५० वर्षों तक उस स्थान पर था और इसकी बरफ अमेरिकाकी जमी हुई झीलोंसे आती थी। हेयरष्ट्रीट और स्ट्रैंडरोडके चौरास्तेपर—

मेटकाफ हाल (The Matcalfe Hall)

है जो सर चार्ल्स मेटकाफकी स्मृतिमें सार्वजनिक चंदेसे सन् १८४०—४४ में बनाया गया था। यह एथेन्सके वायुमन्दिर



(The Temple of ukuind, at Athens)के ढंग पर बनाया गया है। यहां पहले एक सार्वजनिक पुस्तकालय था जो बादको सन् १९०३ ई० में लार्ड कर्जन द्वारा वर्तमान बृहद्पुस्तकालय इम्पीरियल लाइब्रेरी (Impirial Library) में परिणत कर दिया गया। सन् १९२६ ई० में यह लाइब्रेरी वहांसे हटा कर कर्जन पार्क (Curjon Park) के सामनेकी मिलिटरी डिपार्टमेंटके सुदीर्घ भवनमें लाई गई, और मेटकाफहालमें अब इनकम टैक्स आफिस है।

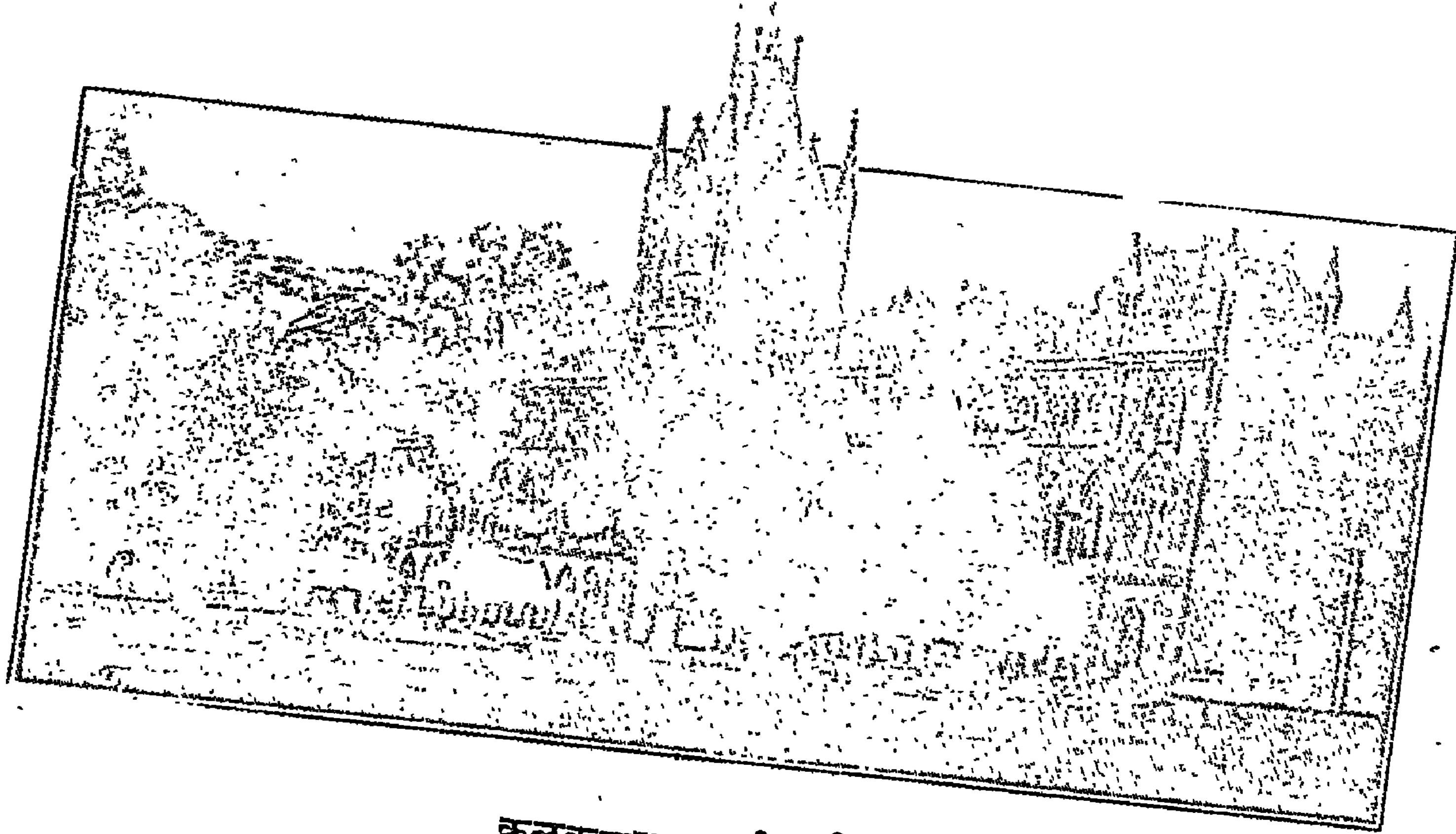
क्लाइव स्ट्रीट (Clive Street)

का रास्ता डलहौजी स्क्वायरके पश्चिमोत्तर कोनेसे है।

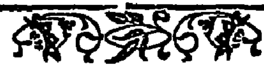
यह कलकत्ताके बड़े २ आफिसोंका प्रधान केन्द्र है और इसके उभय पार्श्वमें गगनचुम्बी सुविस्तृत अट्टालिकायें कलकत्तेके व्यापारिक वैभवकी द्योतक हैं। जहां आजकल रायल एक्सचेंज बिल्डिङ्ग है वही पहले क्लाइवका टाउनहॉल था। क्लाइवष्ट्रीट पूर्वकी सबसे अधिक प्रशस्त सड़कोंमें गिनी जाती है और इसमें मोटरगाड़ीका अविश्रांत आवागमन ठीक लण्डन या न्यूयार्क जैसा है। क्लाइव ष्ट्रीट गंगाके समानन्तर रूपसे दक्षिणको जाती है और इसका बड़ा भाग नदीसे निकाला गया है। सुप्रसिद्ध हवड़ा पुलसे क्लाइव ष्ट्रीट बहुत दूर नहीं है।

हवड़ा पुल। (Howrah Bridze)

यह तैरता हुआ हवड़ा पुल सन् १८७४ में सर ब्रैडफोर्ड



कलकत्ताका हाईकोर्ट।



लेस्ली (Sir Bradfard Leslie) द्वारा २२ लाख रुपयेमें बनवाया गया था और यह संभवतः संसार भरमें अपने ढंगका अद्वितीय है। हवड़ा और कलकत्ताके बीच केवल एक यही पुल है। पुलका मध्य भाग बड़े २ जहाजों और स्टीमरोंके आने जानेके लिये सुविधानुसार हटाया जा सकता है। कई वर्षोंसे अधिक परिमाणमें आवागमनके योग्य एक नवीन पुल बनानेका विचार हो रहा है; परन्तु धनाभावके कारण यह भी कार्यरूपमें परिणत नहीं किया जा सका है।

हैरिसन रोड (Harrison Road)

हवड़ापुलसे ही हैरीसन रोड शुरू होती है और यह कलकत्ते के दो बड़े स्टेशनोंके बीचका मुख्य पथ है। हैरीसनरोड अपने दोनों ओरके ऊंचे २ मकान और अपनी मनुष्य और ट्राम मोटर इत्यादिकी विकट भीड़के कारण कलकत्तेमें एक विशेष स्थान रखता है। अधिकतर इस सड़कमें धनी मारवाड़ी ही रहते हैं। चित्र विचित्र वस्तुओंकी दूकनोंकी लम्बी कतारें वास्तवमें दर्शनीय हैं। सन् १८८६ में आरम्भकी जाकर यह सन् १८६२ में बनकर तैयार हुई इसकी चौड़ाई ७५ फीट है और यह भाग कलकत्तेमें सबसे अधिक घना बसा हुआ है स्ट्रेण्डरोडमें हवड़ापुलके उत्तरमें—

टकसालघर। (The Mint)

है, जिसे संसारमें अद्वितीय होनेका सौभाग्य प्राप्त है। अङ्क



तो यहां केवल चांदी, तांबा और निकिलके सिक्के ही बनाये जाते हैं। यों तो दिन भरमें इस टकसालमें २०००००० रुपये भी बनते हैं; परन्तु साधारणतया ६००००० रुपये बनाये जाते हैं।

इसके कुछ ही दूर आगे—

नीमतल्ला घाट।

है। यहां हिन्दू लोग अपने मुर्दे जलाते हैं।

गवर्नमेण्ट हाऊससे कुछ दूर दक्षिण जानेपर हमें—

कर्जन पार्क (*Curzon Park*)

मिलता है। यह लार्ड कर्जनके शासन-कालमें बनाया गया था इसके सामने पूर्वो एस्प्लेनेड (Esplanade) है। इसी पार्कके उत्तरमें सामने ही एक विशालकाय सुदृढ विल्डिङ्ग भारतसरकारके सेनिक विभागके लिये बनवाइ गई थी। परन्तु आजकल यहां अनेक कार्यालय आ गये हैं। इम्पीरियल लाइब्रेरी कण्ट्रोलर आफ आर्मी फैक्टरी एकाउन्टस (Centroller of Army Factory acounts.)कंट्रोलर आफ मिलिटरी एकाउन्टस (Controller of Army Factory accts) पुरातन तत्व निरीक्षण विभागके प्रधानका कार्यालय (Supdt. of Archaeological Survey) इत्यादि।

इम्पीरियल लाइब्रेरी सर्वसाधारणके लिये १० बजे सबेरेसे ७ बजे रात तक खुली रहती है।

एस्प्लेनेड जंकशन कलकत्तेका सबसे बड़ा चौरास्ता है।



बेन्टिक स्ट्रीट, चित्तरंजन एवेन्यू, धरमतल्ला स्ट्रीट, चौरंगी रोड आदि एस्प्लेनेडमें आ कर मिल जाती हैं। चौरंगीमें ग्रेण्ड होटलके ठीक सामने मैदानमें एक ऊंचीसी लाईन दिखलाई पड़ती है जिसका नाम—

आक्टरलोनी मानूमेन्ट।

(Octerlony Monument)

है। यह लाट १६५ फीट ऊँची है और नेपाल-विजेता सर डेविड आक्टरलोनी(Sir David Octerlony)की स्मृतिमें सार्वजनिक चन्देसे बनवायी गयी थी। यह लाट ईंटकी बनी है और इसके भीतर चक्करदार सीढ़ियां है। जिनसे बिलकुल ऊपर पहुंचा जाता है। यद्यपि चढ़नेमें पहले कुछ कष्ट होता है। परन्तु ऊपर पहुंचकर हृदय प्रसन्न हो उठता है। यह प्रायः बन्द ही रहती है। परन्तु इसमें जानेकी स्वीकृति पुलिस कमिश्नर, लालबाजारसे मिल सकती है।

चौरंगीमें ही दक्षिण ओर आगे जाने पर लिन्डसे स्ट्रीट मिलती है जो—

न्यूमार्केट (*The New Market*)

जानेका सबसे सहज रास्ता है। इसे हाग मार्केट भी कहा जाता है।

यह बाजार ईंटका बना हुआ है और खूब लम्बा चौड़ा है, लिन्डसे स्ट्रीटपर तो यह ३०० फीट चौड़ा है। इसमें एक बुर्ज

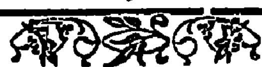


है जिसमें एक बड़ीसी घड़ी लगी है। यह सन् १८७४ ई० में ६॥ लाख रुपयोंके व्ययसे बनी थी ; परन्तु तबसे इसमें और भी अधिक धन लगाया जा चुका है। आजकल यह बाजार संसारमें अद्वितीय है। इसमें ४००० दूकाने हैं और उनमें कोई भी वस्तु क्यों न हो, मिल सकती है। बाहरसे कलकत्ते आनेवालोंके लिये तो यह वास्तवमें अवश्य दर्शनीय है। नानाप्रकारकी चीज चांदी और पीतलके बर्त्तन, हाथीदांतकी बहुमूल्य मूर्त्तियां, काश्मीरी लकड़ीपरके काम, दरियां, रेशम, शाल, ज़रीका कपड़ा, और भारत और पूर्व देशोंकी तरहरकी चीजें देखकर जी लेनेको करता है। इनके अतिरिक्त दवायें, लोहेकी सामग्रियां, स्टेशनरीके समान किताबें, तरकारी और फलकी दूकानें, बनियोंकी दूकानें इत्यादि भी हैं। यद्यपि यहां चीजें अच्छी मिलती हैं फिर भी एक अपरिचित व्यक्ति बड़ी आसानीसे ठग लिया जाता है। बाजार घूमनेका सबसे अच्छा समय शामका है जब सारी दूकानें बिजलियोंके प्रकाशसे जगमगा उठती हैं। और सबेरे सौदा खरीदनेके लिये मेम,साहिब और खानसामोंकी भीड़ लगी रहती है।

कुछही दूर आगे बढ़नेपर सदर स्ट्रीटके नुकरपर मटमैले रंगकी इमारत—

अजायबघर (The Indian messeum)

की है। यह विशाल-भवन आगेसे ३००फीट और भीतर २७० फीट चौड़ा है। बीचमें घासकी एक सुन्दर दालान है। अजायब घर बृहस्पतिवार और शुक्रवारको छोड़कर, सप्ताह भर



१० बजेसे ४ बजे शामतक खुला रहता है। उपर्युक्त दो दिनोंमें केवल विद्यार्थी हो जा सकते हैं। प्रवेश निःशुल्क है। भीतर प्रवेश करनेपर दर्शकोंको पहले नीचेके भागको देखकर तब सीढ़ीसे, जो मुख्यद्वारके निकट है, ऊपर जाना चाहिये। नानाप्रकारकी अद्भुत चीजें बड़े ही सुन्दर ढंगसे लाकर रक्खी गई है। प्राणितत्व, पुरातनतत्व, प्रकृति-शास्त्र कला, अर्थ-शास्त्र, व्यापार इत्यादि विषयक संग्रह अपूर्व हैं। ब्रह्मादेशके अन्तिम राजा थिबाका स्वर्णसिंहासन दर्शनीय है। नित्यप्रति सहस्रों मनुष्य इसे देखने जाते हैं और नानाप्रकारकी विचित्र वस्तुओंको देखकर हैरतमें आ जाते हैं। इसीके बगलमें कलाका सरकारी शिक्षालय है।

विक्टोरिया मेमोरियल
(The Victoria Memorial)

महाराणी विक्टोरियाका यह विराट स्मारक केवल कलकत्ता या भारतवर्षकोही नहीं वरन् संसार भरकी आधुनिक समयमें बनी अद्भुत इमारतोंका मुकुटमणि है। यह रेसकोर्सके ठाक दक्षिणमें है और अपनी स्थितिका परिचय अपने गगनचुम्बी विशाल गुम्बदसे देता है। यह भवन केवल संगमरमरका ही बना है।

इसकी नींव सन् १९०६ ई० में वर्त्तमान भारतसम्राट पंचम-जार्ज द्वारा डाली गई थी और यह सन् १९२१ ई० में युवराज द्वारा खोला गया। लार्ड कर्जननेही सर्व प्रथम विचार किया कि एक ऐसा स्मारक बनना चाहिये जिसमें विख्यात पुरुषोंके



चित्र, मूर्त्तियां और भारत संबन्धी, ऐतिहासिक महत्वके कागज-रक्खे जायं। भारतके देशी नरेशों और धनिकोंने इसके लिये प्रचुर धन दिया। इसका खाका सर विलियम इमर्सनने खींचा था और इसे मार्टिन कम्पनी(Martin & Co.)ने ७६ लाख रुपयेमें सरकार द्वारा दी हुई उसको भूमिपर बनाया। पहले पुराना जेल था जहां पचास वर्ष पहले अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति कैद थे।

विक्टोरिया भवनके पास पहुंचनेपर उसके विराट आकार और सुन्दर कलाको देखकर चकित रह जाना पड़ता है। यह भवन जोधपुरके प्रसिद्ध सफेद संगमरमरका बना हुआ है। बीचका सुन्दर गुम्बद २०० फीट ऊंचा है और इसके ऊपरकी 'जयलक्ष्मी' की पीतलकी मूर्त्ति १६ फीटकी है। यह मूर्त्ति ३ टन भारी होनेपर भी इस कुशलतासे रक्खी गई है कि इससे वायुपरिवर्त्तन मालूम पड़ता है।

भीतर प्रवेश करते समय सामनेही लार्डकर्जनकी पीतलकी भव्य-मूर्त्ति है, और चारों कोनोंपर व्यापार, शान्ति, खेती, और अकालमें साहाय्यकी मनुष्याकृति-मूर्त्तियां हैं और भीतर जानेपर महाराणी एक अतीव सुन्दर सिंहासनापर बैठी हुई हैं।

भवनके भीतर प्रवेश करनेपर महाराणी विक्टोरियाकी एक दूसरी संगमरमरकी मूर्त्ति है, जिसमें उनके राज्यारोहरणके बादका चित्र है। इसके चारों ओर महाराणीकी घोषणा भिन्न भिन्न भाषाओंमें अङ्कित है। ऊपर सिर उठानेपर और भी चित्र दिखलाई पड़ते हैं जो सभी महारणीके जीवनसे सम्बन्ध रखने-



वाले हैं। चित्रों और मूर्त्तियोंके अतिरिक्त महाराणी विक्टोरियाकी निजी वस्तुयें भी हैं जिनमें उनके पियानो और लिखनेका टेबुल मुख्य है। यहांके अनेक सुन्दर चित्रोंमें वह चित्र जिसमें सम्राट एडवर्ड (समय युवराज) का फरवरी सन् १८७६ में जयपुर प्रवेश दिखलाया गया है, विशेष रूपसे दर्शनीय है। इसको बनाने वाले वेरेशेगिन (Verestchagin) नामके शिल्पकार यह बहुत बड़ा और सजीव चित्र है। नवीन वृटिश भारतके चित्रोंका संग्रह विशेष है और इनमें भी प्राचीन कलकत्ताके चित्र तो देखने योग्य हैं ही। पुराने फोर्ट विलियमकी भी एक सफल प्रतिमूर्त्ति है जिसमें कालकोठरीका स्थान दिखलाया गया है। विक्टोरिया भवनका दूसरा द्वार लोअर सर्कुलर रोडसे है और इस ओर एक विशाल अर्धगोलाकार पर सम्राट सप्तम एडवर्डकी मूर्त्ति है। भवनके पास लार्ड कर्जनकी सफेद संगमरमरकी मूर्त्ति है। पश्चिममें एक पण्डित और एक मुसलमान बीचमें वारेन हेस्टिंग्सकी, भी और पूर्वमें रोमनवस्त्र पहने लार्ड कार्नवालिसकी मूर्त्ति है।

विशेष स्वीकृति मिलनेपर गुम्बदके शिखर तक पहुंचा जा सकता है। इसपरसे कलकत्ताका एक अनोखा दृश्य दिखाई देता है

विक्टोरिया भवनमें प्रवेश निःशुल्क है और यह सर्वसाधारणके लिये १० बजे सबेरेसे संध्या समय ५ बजे तक खुला रहता है। प्रत्येक शुक्रवारको इसमें ॥) आना प्रवेश शुल्क लगता है। यह भवन सोमवारको बन्द रहता है। चित्रोंकी दो गैलरियां ऐसी



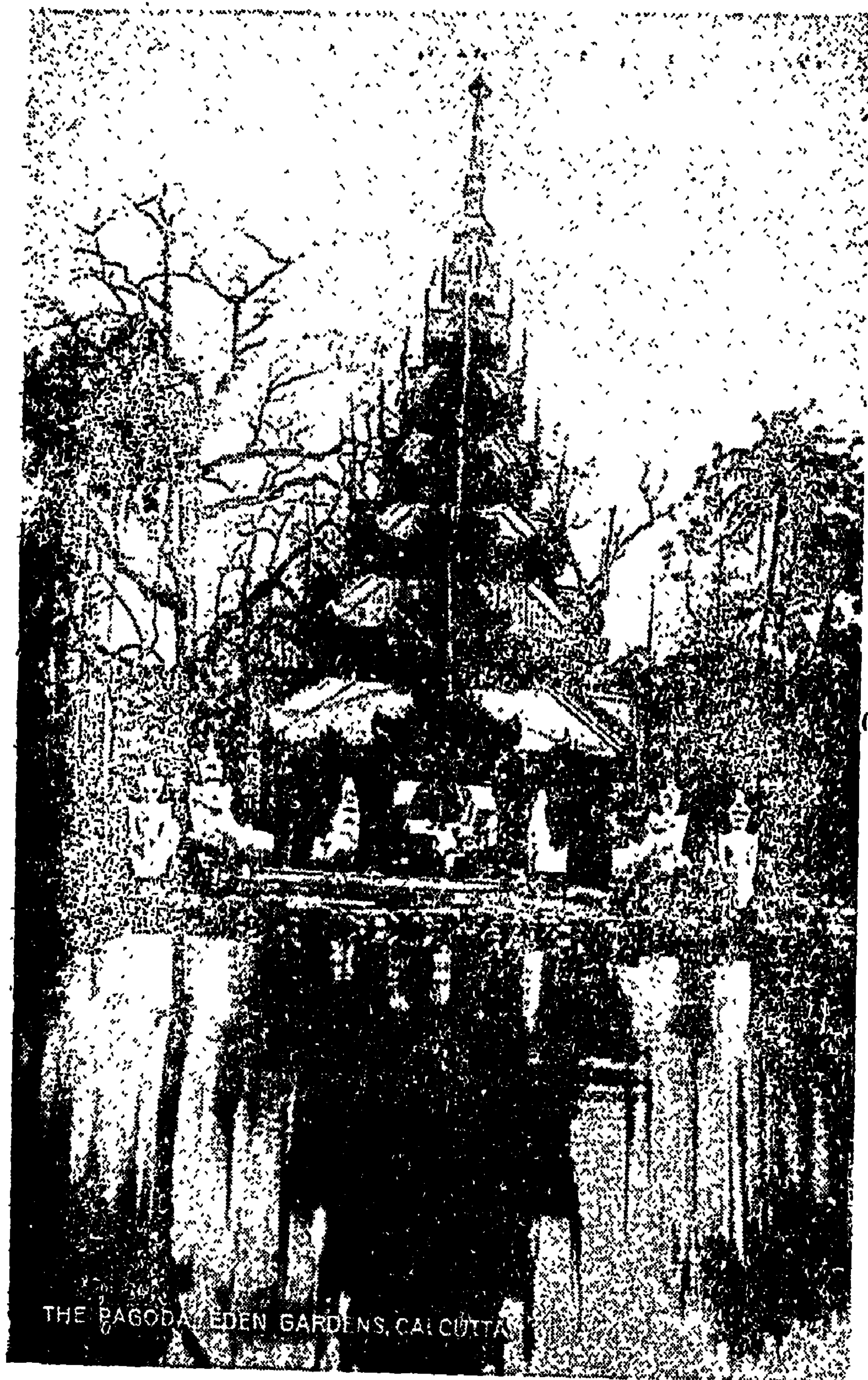
भी हैं जहां जानेमें ।) आना प्रवेश शुल्क भी लगता है।

कलकत्तेका किला (Fort William)

वर्तमान किलेका बनना सन् १७५० ई० में क्लाइव द्वारा प्लासीके युद्धके बाद आरम्भ किया गया था और यह सन् १७७३ में पूरा तैयार हुआ। इसके बननेमें २० लाख रुपये खर्च हुए थे। आकारमें यह एक अष्टकोणके समान है, जिसके ५ कोण कलकत्तेकी ओर और तीन गंगाकी ओर हैं। इसके चारों ओर एक पचास फीट चौड़ी और ३० फीट गहरी खाई है जो आवश्यकतानुसार नदीके जलसे भर दी जा सकती है। किलेमें १०००० मनुष्य रह सकते हैं और इसपर भिन्न प्रकारकी ६०० तोपें चढ़ाई जा सकती हैं। किलेके भीतर भारतीय और गोरी सेनाके लिये साफ सुथरी बारकें बनी हैं। इसके अतिरिक्त इसमें तोपखाना रसदखाना और परेड इत्यादिके लिये सुन्दर मैदान भी हैं। इसके अन्दर दो गिरजाघर भी हैं।

आउटराम इन्स्टीट्यूट (Outram Institute)

जो अब सैनिक शिक्षालय बना दिया गया है, पहले गवर्नमेंट हाउस था। किलेमें जाने-आनेके सात द्वार हैं जिनमें एक पार्क स्ट्रीटकी सीधमें जाती हुई आउटराम रोडकी सीमा पर है। विक्टोरिया भवनके ठीक पश्चिममें मैदानकी दक्षिण सीमा पर—



एडेन-गार्डनका बौद्ध-मन्दिर ।



घुड़दौड़का मैदान (Race Course)

है जिसका विवरण अगले परिच्छेदमें दिया जा चुका है।

विक्टोरिया भवनके दक्षिण द्वारके ठीक सामने ही—

प्रेसीडेन्सी जेनरल अस्पताल

और सैनिक अस्पताल हैं। पहले सन् १७६८ ई० में सरकार ने एक छोटेसे मकानमें इसे खोला था। परन्तु अब यह कलकत्तेके प्रधान अस्पतालोंमें गिना जाता है। इसकी इमारत बहुत ही खूबसूरत और बड़ी है।

सर्कुलर रोडमें पश्चिमकी ओर बढ़िये और आगे चलकर जीरट ब्रिजसे नहर पार करने पर आपको अलीपुरका—

चिड़ियाखाना The Zoolosical Garden)

मिलेगा। यहां तरह २ के पशु, पक्षी और सर्प इत्यादि बिलकुल स्वाभाविक ढंग पर रक्खे गये हैं। अभी हाल हीमें दो चीतेके बच्चे लाये गये हैं जो बिलकुल बकरीकी तरह रक्खे जाते हैं; उन्हें मांस नहीं दिया जाता। यहां भी सुन्दर तालाब और चित्र विचित्र पुष्प वृक्ष बड़ी खूबसूरतीसे लगाये गये हैं। चिड़ियाखाना प्रतिदिन सूर्योदयसे सूर्यास्त तक खुला रहता है। प्रतिदिन प्रवेश शुल्क एक आना रहता है केवल रविवारको १२ बजे के बाद १) एक रुपया लगता है क्योंकि उस दिन यहां मिलिटरी बैंड बजा करता है।

चिड़ियाखानाके बिलकुल निकट ही—

बेलवेडियर (Belwedere)

का मुख्य प्रवेश द्वार है। कहा जाता है पहले वारेन हेस्टिंग्स यहीं रहता था; परन्तु इसका कोई मान्य प्रमाण नहीं है। यह बात अवश्य सत्य है कि ७ अगस्त सन् १७८०को वारेन हेस्टिंग्स द्वारा घायल होकर सर फिलिप फ्रांसिस यहीं लाये गये थे।

सन् १८५४ ई० से लेकर सन् १९१२ तक यह बंगालके छोटेलाटका निवासस्थान रहा, परन्तु अब कलकत्ता आनेपर वाइसराय यहाँ ठहरते हैं। यह इमारत तीन मंजिला है। इसके चारों ओर सुन्दर हरे मैदान और फूलके पेड़ लगे हैं। यह नित्य सर्वसाधारणके लिये खुला रहता है।

अलीपुर रोडमें कुछ दूर जाने पर बेलवेडियरके पश्चिममें—

वनस्पति बाग

है। यह बाग सन् १८२० में विलियम केरी (William Carey) द्वारा स्थापित किया गया था। इस प्रसिद्ध मनुष्यकी मूर्ति वहां अब भी है। ऐसे तो केरी मोचीका काम करता था, परन्तु वह एक अध्यापक और उपदेशक भी था। वह कई भाषायें जानता था। पहले उसीने ईसाइयोंकी धर्म-पुस्तकका बंगला, उड़िया, हिन्दी, मराठी, संस्कृत, आसामी, पञ्जाबी, पश्तो, काश्मीरी तेलगू और कोंकणी भाषामें अनुवाद किया था। उसने श्रीरामपुरमें एक कालेज भी स्थापित किया। सन् १८२१ में वह फोर्ट विलियममें बंगलाका अध्यापक नियुक्त हुआ। वह एक सफल



बागवान भी था और उसीने श्रीरामपुरका बोटानिकल गार्डेन खोला था। उसका देहान्त सन् १८३४ में हुआ।

आगे चलकर अलीपुर रोड जजकोर्ट रोडमें मिल जाता है और यहीं—

हेस्टिंग्स हाउस (Hastings House)

जहां प्रथम गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्स अपनी द्वितीय पत्नी मैडम इमहोफके साथ रहता था। बादको यह मकान लार्ड कर्जनने खरीद लिया और इसे अतिथिगृह बनाया जो फिर लड़कोंके स्कूलमें परिणत कर दिया गया।

कुछ दूर आगे बढ़नेपर डायमण्ड हारबर रोडमें—

खिदिरपुर हाउस (Kiderpur house)

मिलता है। रिचार्ड वारवेल, जो वारेन हेस्टिंग्सकी शासन सभाके सदस्य थे, रहते हैं। ऐसा ख्याल किया जाता है कि वारेन हेस्टिंग्स और सर फ्रांसिसका युद्ध यहीं हुआ था। यहां खूब जुआ खेला जाता था। सर फिलिपफ्रांसिसने अपने एक मित्र को लिखा था "मैंने आज तीन लाख रुपये जीते हैं। अब यहां मिलिटरी आरफन स्कूल है।

अलीपुरके दक्षिण-पूर्वमें कालीघाट है जहां विख्यात—

कालीजीका मन्दिर।

है। इसका जन्म-काल अन्धकारमें है। इसके सम्बन्धमें



निम्न लिखित दन्तकथा प्रचलित है।

देवी सती भगवान् शिवकी पत्नी थीं। उनके मृत्यु हो जानेपर दुःखसे व्याकुल होकर सतीका शव कन्धेपर रख शिव सारे संसारमें घूमने लगे। वे दुःखसे इतने पागल हो उठे थे कि देवताओंने समझा, ये अब संसार नष्ट कर डालेंगे। जब शिवके शान्त होनेकी कोई युक्ति न रही तब विष्णुने अपना चक्र फेंक उस शिवके ५१ टुकड़े कर डाले जो पृथ्वी पर छितरा गये। जहां २ वे टुकड़े गिरे वहीं स्थान पवित्र हो गये। कहा जाता है कि जहां सतीका अगूंठा गिरा वहीं काली मन्दिर बनवा दिया गया।

वर्तमान मन्दिर बहुत पुराना नहीं है; यह सन् १८०६ में बनवाया गया था। मन्दिर जानेके पथके दोनों ओर भिखमंगोंकी लम्बी कतार चली गई है जो यात्रियोंको बड़ा तङ्ग करते हैं। मन्दिरमें पूजाके लिये नित्य प्रति अनेकों बकरे बलि किये जाते हैं। और दूर्गापूजा तथा अन्य बड़े त्योंहारों पर तो यह संख्या बहुत अधिक हो जाती है। मां कालीकी लम्बी लाल २ जीभ निकाले रक्तवर्ण नेत्रोंकी काली मूर्त्ति अतीव भयङ्कर प्रतीत होती है।

जैन मंदिर।

जैन मन्दिर नगरके उत्तर में मानिकतल्ला स्ट्रिटमें है और यहाँ अपर सर्कुलर रोडसे आसानीसे पहुँचा जा सकता है। वास्तवमें यहां तीन मन्दिर हैं, जिनमें मुख्य मन्दिर जैनियोंके



दशवें आचार्य शीतलनाथजीका है। ये मन्दिर राय बद्रीदास बहादुर जौहरी, द्वारा सन् १८६७ ई० में बनवाये गये थे।

टेम्पुल स्ट्रीट (Temple St.) के द्वारसे घुसते ही बड़ा सुन्दर दृश्य सामने आता है। स्वर्ग सदृश्य भूमिपर मनोहर मन्दिर भी मनोहर मालूम पड़ता है। यह उत्तर भारतकी जैन-शिल्पकलाका ज्वलन्त उदाहरण है। मन्दिरके सामने संगमरमरकी सीढ़ियां बनी हैं और इसके तीन ओर चित्ताकर्षक बरान्दे बने हुए हैं। दीवारों पर रंग बिरंगे छोटे २ पत्थरके टुकड़े जड़े हुये हैं। और दालान तथा छत इस खूबीसे बनाये गये हैं कि उनपर से आंख हटानेको जी नहीं चाहता। शीशे और पत्थरका काम भी उतना ही नयनाभिराम है। छतके मध्यमें एक बड़ा भारी फानूस टङ्गा है मन्दिरके चारों तरफ सुन्दर बगीचा बना है जिसमें बढ़ियासे बढ़िया फौव्वारे, चबूतरे इत्यादि बने हैं। कोनेपर एक छोटासा तालाब है, जिसमें रङ्ग बिरङ्गी सुनहली मछलियां अठखेलियां करती रहती हैं। कई आतिथ्यागार भी बने हुए हैं। बागीचेके उत्तरमें शीशमहल है इसमें दीवाल, छत, फानूस, कुर्सियां इत्यादि सभी वस्तुयें शीशेही की हैं। इसके भीतरका भोजनागार सबसे अधिक देखने योग्य है। ये मन्दिर और बगीचा अवश्य ही किसी चतुर शिल्पीका कार्य है और इसका नकशा स्वयं रायबहादुर बद्रीदास जीने सोचा था। ये मन्दिर नित्यप्रति सर्वसाधारणके लिये निःशुल्क रूपसे खुला रहता हैं। चांदनी रातमें मन्दिरकी शोभा



अनुपम होतो है और उस समय आनेकी स्वीकृति अधिकारियोंसे मिल सकती है।

कलकत्तेमें कम संख्यामें होनेपर भी जैनियोंका व्यापारमें विशेष हाथ है। ये बहुत धनो हैं। और अधिकतर जवाहिरात का काम करते हैं। जैन-मन्दिरसे लौटते समय रास्तेमें पड़ता है।

पारसियों का शान्तिमन्दिर

यह मन्दिर वेलियाघट्टा मेनरोडमें स्थित है, जो सियाल-दहके पूर्वमें है। इसके चारों ओर बड़े २ खजूरके वृक्ष और तालाब हैं। चतुष्कोणके बीचमें एक सफेद पुता हुआ बुर्ज है। जो सन् १८२२ में बनाया गया था। इसके पीछे दुहरी छत है और एक दूसरा बड़ा बुर्ज है। यह सन् १६१२ में बना था। सीढ़ियां चढ़ने पर एक छोटा सा दरवाजा मिलता है, जहांसे केवल "नसालार" ही शव को भीतर ले जाते हैं। बुर्जका भीतरी भाग तीन हिस्सोंमें विभक्त है; इनमें एक शव आसानीसे आ सकता है। पहले भागमें पुरुष, दूसरेमें स्त्री, और तीसरेमें बच्चे रख दिये जाते हैं। सब जगह शान्ति विराजती है। शव खुले रख दिये जाते हैं और चील कौए मांस नोच नोचकर उन्हें खा डालते हैं। हड्डियां गिरकर एक कुएमें इकट्ठी होती हैं जहांसे वे नाली द्वारा बहा दी जाती हैं। पारसी लोग अग्नि, जल, और मिट्टीको पवित्र मानते हैं इसीलिये पवित्र वस्तुओंके अपवित्र होनेके भयसे वे अपने मुर्दोंको न तो जलाते ही हैं और न गाड़ते हैं।

राजेन्द्र मल्लिकका सुन्दर मकान

यह मुक्ताराम बाबू स्ट्रीटमें है और इसके दो रास्ते हैं; एक तो चितपुर रोडसे और दूसरा चित्तरंजन एवेन्यूसे यह प्रसिद्ध महल बिलकुल घनी बस्तीमें स्थित है। और इसके भीतर घुसते ही एक अपूर्व दृश्य सामने आता है। सामने ही एक समाधिस्थ सन्यासी और ग्रीक देवीकी सुन्दर मूर्तियां हैं। बागमें एक छोटा मोटा चिड़ियाखाना भी है जिसमें नाना प्रकार के पक्षी हैं। सारस भी बहुत है जो बागमें इधर-उधर स्वच्छन्द विचरा करते है।

महलके भीतर भी अनेकों मूर्त्तियां और एकसे एक बढ़कर चित्र हैं। एक बड़ीसी मूर्ति है जिसमें महारानी विक्टोरिया राज्यारोहण वस्त्र पहने दिखलाई गई हैं। तैल चित्रोंमें एक सर जोशुआ रीनाल्डस (Sir Joshua Reynolds) द्वारा और दो रूबन्स (Rubens) द्वारा बने हुए हैं। एकमें सेण्ट सेबेस्टियनका जीवनोत्सर्ग और दूसरेमें सेन्ट कैथरीनका विचित्र विवाह चित्रित है। दूसरे चित्रको एक सज्जनने ७५००० रुपये देकर लेनेकी इच्छा की थी परन्तु यह अस्वीकार कर दी गयी!

उत्तर भागमें ठाकुरबाड़ी है, जहां नित्यही सैकड़ों कंगालोंको भोजन कराया जाता है। कुमार ब्रजेन्द्र मल्लिकके सौजन्यसे सर्व-साधारण १० बजेसे ५ बजे सन्ध्यातक निःशुल्क रूपसे सब चीजें देख सकते हैं।

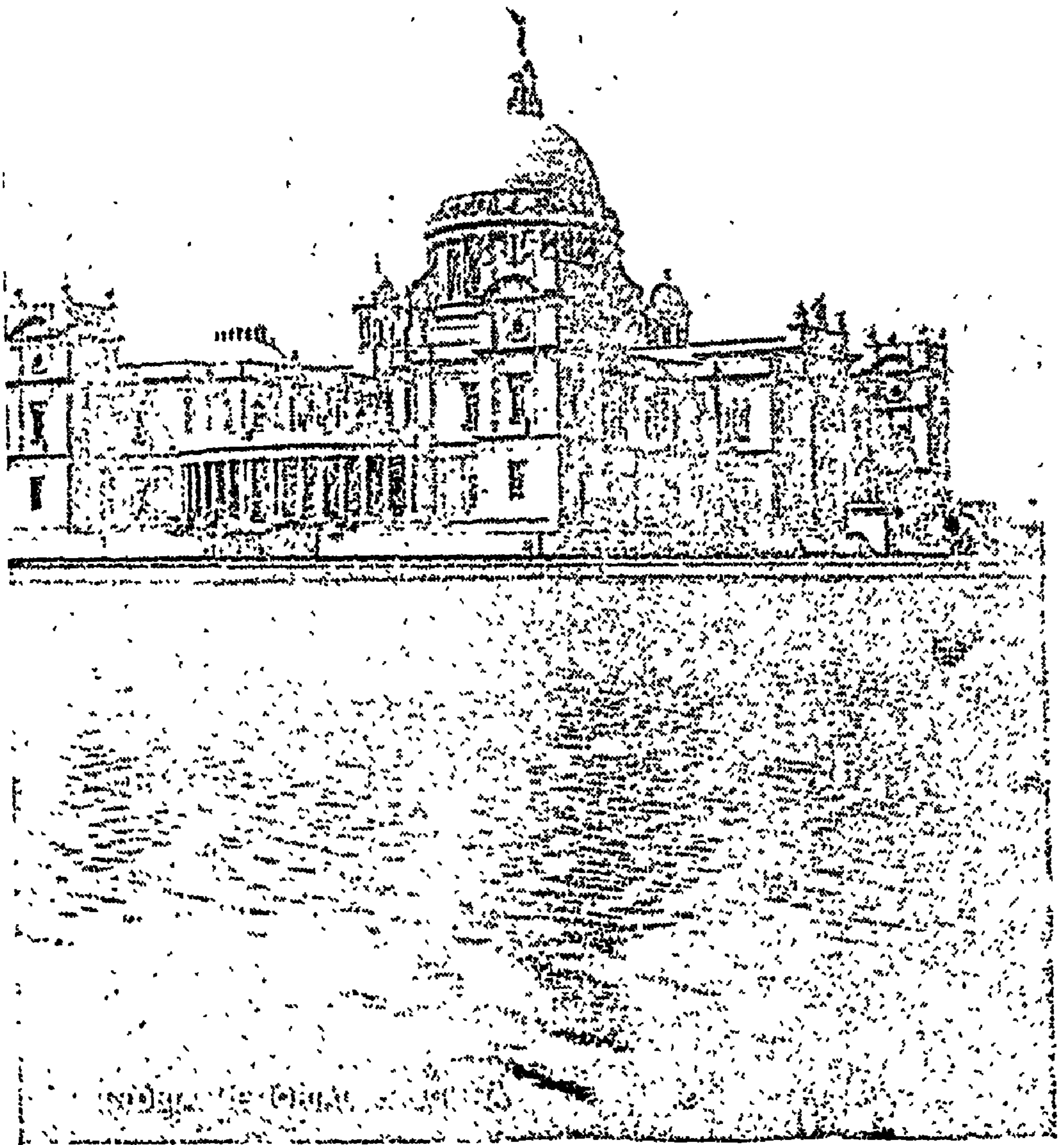
चीनालोगोंकी बस्ती China Town

कलकत्तेकी चीना लोगोंकी बस्ती भी देखने योग्य स्थान है। इनकी सड़कें तंग टेढ़ी मेढ़ी और भद्दी हैं। और बदबू का तो कुछ पूछना ही नहीं। इसका रास्ता बड़ाबाजारसे है।

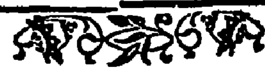
इनकी बस्तीमें देखने योग्य स्थान इनके भोजनालय हैं, जहां सब प्रकारके पक्षियोंका मांस मिलता है। चीनी लोग सर्वा-भक्षी हैं तिलचट्टा, छिपकली तक खा जाते हैं। इनकी बस्ती भोजनागार, जुआके अड्डे, और अफीमचियोंसे भरी हुई है। कुछ पैसे देकर इनके अफीम पीनेके स्थान देखे जा सकते हैं। ये लोग किस तरहसे अफीमकी बीड़ी बनाकर पीते हैं, यह भी देखने योग्य है। इनके जुआ खेलनेके अड्डे सदा "चीनियोंसे भरे रहते हैं। कलकत्तेमें इनकी जूते की बहुत दूकाने हैं और ये कागजके फूल और पंखिया इत्यादि खूब सुन्दरतासे बनाते हैं।

लस्कर मेमोरियल The Lascar Memorial

मैदानकी दक्षिण सीमापर गंगाके सामने लस्कर मेमोरियल है। यह स्मारक ऊंचा और पत्थरका बना हुआ है। बिलकुल ऊपर एक पीतलका चमकता हुआ गुम्बद है जो दूरसे ही साफ दिखलाई पड़ता है। इसके चारों कोनेपर चार छोटे २ बुर्ज हैं। गुम्बदके ऊपर एक छोटा जहाज है जो वायु दिग्दर्शक



विक्टोरिया मेमोरियल।



यन्त्रका काम देता है। सीढ़ीसे ऊपर जानेपर नदी और मैदान का बड़ाही मनोहर दृश्य दिखलाई पड़ता है। यह स्मारक गत यूरोपीय महासमरमें मारे गये बङ्गाल और आसामके लस्करोंकी स्मृति रक्षार्थ बनवाया गया है।

मैदानमें अनेक मूर्त्तियां भी बनी हुई हैं जो प्रायः सभी छोटे या बड़े लाटसाहबोंकी ही हैं।

सिनेटहाल (Senate Hall)

कलकत्ता विश्वविद्यालयका सीनेट हाल सन् १८७३ ई० में खोला गया था। यह इमारत बड़ी भारी है और इसके खम्भे खूब बड़े २ हैं। आगे सीढ़ियोंकी लंबी कतारें हैं। ऊपर जानेपर सामनेही माननीय प्रसन्नकुमार टैगोरकी सजीवाकार मूर्त्ति है। बीचका बड़ा कमरा २०० फीट लम्बा और ६० फीट चौड़ा है। इसकी छत सुदीर्घ स्तम्भोंपर अवलम्बित है। इसके दोनों ओर २० फीट चौड़े बरामदे हैं। प्रवेश स्थानपर बड़े २ आचार्योंकी अर्द्ध-मूर्त्तियां हैं। सन् १८५७ में स्थापितके बादसे १८७२ तक कलकत्ता विश्वविद्यालयका कोई निजका भवन नहीं था।

इसके पीछेही दरभंगा बिल्डिंग है। इसके बनवानेके लिये स्वयं दरभङ्गा नरेशने २॥ लाख रुपये दिये थे। इसमें विश्वविद्यालयका पुस्तकालय ला कालेज, विश्वविद्यालयके कार्यालय और ला कालेजके प्रिंसिपलके रहनेका स्थान है।

सातवां परिच्छेद

कलकत्तेके निकटवर्त्ती स्थान ।

कलकत्तेके आस पासही ऐसे अनेक स्थान हैं जिन्हें एक दिनमेंही देखा जा सकता है और उनका विवरण इस परिच्छेदमें दिया जाता है। तीन रेलवे रहनेके कारण उन स्थानोंमें जानेकी और भी अधिक सुविधा है। इनके अतिरिक्त जी ऊबनेपर गंगा और उसके किनारे २ दूर तक चले गये बड़े २ जहाजों और ऊंचे ऊंचे भवनोंको देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है।

बोटैनिकल गार्डेन

यह सुविस्तृत और पसिद्ध बाग गङ्गाके उसपार शिवपुरमें है और कलकत्तेसे तीन मील दूर है। बोटैनिकल गार्डेन जानेके दो रास्ते हैं, सड़कसे और स्टीमरसे, परन्तु सड़क खराब रहनेके कारण लोग स्टीमर द्वारा जाना ही अधिक पसन्द करते हैं। स्टीमर एडेन गार्डेनके सामनेके चांदपाल घाटसे छूटते हैं और पहुंचनेमें केवल ४० मिनट लगते हैं।

यह बोटैनिकल गार्डेन जेनरल किड (General Kyd)के आदेशानुसार ईस्टइण्डिया कम्पनी द्वारा सन् १७८६ में स्थापित किया गया और जेनरल किड ही इसके प्रथम सुपरिंटेण्डेण्ट थे। यह बात ध्यान रखने योग्य है कि सुपरिटेण्डेण्टके मकान



की भूमिपरही पहले मखवा थानाका मुगलगढ़ था और प्रथम ब्यापारिक केन्द्र बेतोर इसके पासही था ।

गार्डेन २७३ एकड़ भूमिपर बना हुआ है और नदीके सामने यह ५६०० फीट लंबा है। बागके भीतर मोटर और पैदल चलने योग्य अच्छे पथ हैं और गार्डेन पार्टी इत्यादिके लिए तो यह स्थान सर्वोत्तम है। इसमें अनेकों सायेदार सुन्दर जगहें, ईंटके छोटे २ घर भी हैं जिनमें ठहरनेकी स्वीकृति सुपरिटेण्डेण्ट द्वारा मिल सकती है।

गार्डेमें स्टीमरसे उतरनेका स्थान ओरओडोकसा एवेन्यू (Oreodka Avenue) के सामनेही है। इस एवेन्यूकी बड़े २ खजूरके वृक्षोंकी लम्बी कतारें देखनेमें बड़ीही सुहावनी प्रतीत होती हैं। इस एवेन्यूके अंतमें बोटैनिकल गार्डनके संस्थापक जेनरल किडका एक सुन्दर स्मारक है। इसकी बांयी ओरके हुकर एवेन्यूके भीतरसे जानेपर वट-वृक्षोंकी कतारें मिलती हैं जिनके अंतका विशालकाय वटवृक्ष डेढ़ सौ वर्षोंसे सिर ऊंचा किये खड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि यह संसारमें सबसे बड़ा वृक्ष है। इसका घेरा ९०० फीटका है। इसकी शाखाओंसे मोटी २ लटकती हुई ३०० जड़ें पृथ्वीमें घुस गई हैं, जिनसे वृक्षको सहारा और पुष्टि दोनों मिलती हैं। इसका मुख्य तना पहले ५१ फीट मोटा था, परन्तु अब यह कुछ खराब होगया है और कुछ काट भी डाला गया है।

इस वटवृक्षके दाहिने हाथ कुर्जा एवेन्यू है और इसकी बांई



ओर द्वितीय सुप० डा० वाल्टर राक्सबराका स्मारक है। आगे जानेपर यह एवेन्यू ऐन्डरसन् एवेन्यूसे मिल गया है। बांयी ओर फूलोंकी अच्छी बहार देखनेको मिलती है और यहां दो विश्रामागार भी हैं। दाहिने तरफ एक छोटासा पामहाउस(Palm House) है और इसके सामनेही कुछ दूरपर बड़ा पामहाउस या शान्तिनिकेतन है। ग्रिफिथ-एवेन्यूकी दाहिनी ओर विलियम ग्रिफिथ और बांयी ओर विलियम जैकके स्मारक हैं। दोनोंही वनस्पति-शास्त्रके अच्छे ज्ञाता थे। बड़ा शान्तिनिकेतन अष्ट-कोणके आकारका है, और इसकी प्रत्येकभुजा ८५ फीट लम्बी है। इसका व्यास २१० फीटका है; बीचका गुम्बद ५० फीट ऊंचा है। इसका ढांचा लोहेका है और उसके ऊपर लोहेका ही जाल बिछा हुआ है जो घाससे छाया गया है। भीतर छोटी चट्टानें बनी हैं जिनके बीचके टेढ़ेमेढ़े लाल पथ बड़ेही सुन्दर मालूम पड़ते हैं। भिन्न २ प्रकारके पौधोंका संग्रह इतना उत्तम है कि संसारके कुछही पामहाउस इसकी समता कर सकेंगे। खजूरके पेड़ जमीनपर लगे हैं और अन्य पौधे गमलोंमें बड़ी खूबसूरतीसे सजाकर रक्खे गये हैं।

एण्डरसन् एवेन्यूके पासके विश्रामागारके सामने ही आर-चिडहाउस(Orchid House)का प्रवेशद्वार है। गरमीके दिनोंमें आरचिडके फूलोंकी बहार देखते ही बनती है और अन्य ऋतु-ओंमें भी इसकी विचित्र पत्तियां और शाखायें बड़ी सुन्दर दीख पड़ती हैं। इस वाटिकामें आरचिडके अतिरिक्त और भी कई



प्रकारके पोधे हैं। यहांसे दूसरी ओरसे बाहर निकलनेपर हम अपनेको किड एवेन्यूके निकट पाते हैं, जो बागके शिवपुरके प्रवेशद्वार तक चली गई है। इस द्वारकी दाहिनी ओर नदी तटके निकट वालिस एवेन्यू है। उसी पथपर चलनेसे हम फिर राक्सवरा एवेन्यूसे होते हुये वटवृक्षके पास पहुंचते हैं।

कुर्जा एवेन्यूसे फिर होते हुये इसकी दाहिनी तरफके देवदारु वृक्षोंकी सुन्दर कतारोंवाले किंग एवेन्यूमें घूसिये। फिर दाहिने हाथ मुड़कर आप टामसन एवेन्यूमें पहुंचते हैं, जो बड़े पामहाउस से होता हुआ एन्डरसन् एवेन्यू तक चला गया है। इस एवेन्यू तथा आगेके डायर एवेन्यूको पारकर हम पालिमरा ब्रिज या पुल पर पहुंचते हैं जिसके बिलकुल निकट तालवृक्षोंकी बड़ी ही सुन्दर कतारें हैं। इस तालकाननके अंत हवड़ा-द्वार है जहांसे मोटरगाड़ी इत्यादि आती जाती है।

इस वृहत् और सुरुचि पूर्ण उपवनका वर्णन इतनेमें समाप्त नहीं हो सकता। इनके अतिरिक्त इनसे भी सुन्दर अनेक मनोहर स्थान तथा पथ हैं। जगह २ छोटे तालाब इसकी शोभाको द्विगुणित कर देते हैं। इस बनस्पति-बागका नानाप्रकारके असंख्य वृक्षों तथा पौधोंका अपूर्व संग्रह जगत प्रसिद्ध है। संसारके अन्य बड़े बड़े बोटैनिकल गार्डेनोंमें भी पौधे इत्यादि यहींसे भेजे जाते हैं। सर जोसेफ हूकरने चीनदेशसे सबसे पहले चायका पेड़ लाकर यहीं लगाया था। और सर क्लेमेंटस मार्खम दक्षिण अमेरिकासे कुनैन (Quinine) का वृक्ष



लाये थे। ये दोनों ही पौधे यहां सफल रूपसे लग गये थे। गार्डेनके भीतरका वनस्पतियोंका अजायब घर देखने योग्य है।

बोटैनिकल गार्डेन सूर्योदयसे अस्त होने तक सर्वसाधारणके लिये प्रतिदिन निःशुल्क रूपसे खुला रहता है।

राजगंज।

राजगंज बोटैनिकल गार्डेनसे कुछ आगे है और स्टीमर इससे आगे नहीं जाते। लौटनेमें लग भग ३ घण्टे लगते हैं। रास्तेमें डक, नई जेटियां, गार्डेनरीच और अवधके भूतपूर्व नव्वाबका महल पड़ता है। दूसरे तटपर शिवपुर इन्जीनियरिंग कालेज और बोटैनिकल गार्डेन हैं।

बजबज।

यह राजगंजसे निकट है और यहाँ सड़कसे जानेमें अधिक सुविधा है। यहां देखने योग्य केवल:तेलका बड़ाभारी कारखाना, कई जूट मिलें और फैक्टरियां हैं।

डायमण्ड हारबर।

यह कलकत्तेसे भूमिपथ द्वारा ३० मील दूर है। डायमण्ड हारबर नदीके तटपर है और पहले ईस्टइण्डियां कम्पनीके जहाज यहीं लंगर डालते थे। उस समय यहां लंगर डालना खतरेसे खाली नहीं था, और अब भी बड़े २ जहाज हुगलीमें डायमण्ड हारबरसे आगे नहीं जाते। यहां एक रेलवे स्टेशन, डाकखाना और एक डांक-बंगला भी है। पासहीमें चिंगड़ी



कालका किला भी है। यों तो डायमण्ड हारबरको दिन भरमें कई ट्रेनें जाती हैं, परन्तु उनसे जाना अधिक कष्टकर है, सोभी गरमीके दिनोंमें विशेष रूपसे।

बारकपुर।

बारकपुर सन् १७७२ से ही सैनिक छावनी रह चुका है। यहां बारकें (Banacks) रहनेके कारण इसका बारकपुर पड़ गया। पहले इसका नाम चानक था। सयालदह स्टेशनसे बारकपुरको दिन भरमें कई ट्रेनें जाती हैं, फिर भी वहां मोटरसे जाना अधिक आनन्द-प्रद है। यह कालकत्तासे १४ मील दूर है।

कार्नवालिस स्ट्रीटमें सीधे जानेपर सर्कुलर नहरके ऊपर पुल मिलता है। इसको पार करने पर हम बारकपुर ट्रंकरोडमें जा पहुंचते हैं। पास ही ईस्ट इण्डिया कंपनीका बनाया हुआ एक छोटासा बुर्ज है और ऐसा ही एक और बुर्ज ग्यारहवे मीलपर है यहां पर एक और देखने योग्य चीज़ है— तल्ला टंकी। यह पानीकी टंकी खंभोंपर रक्खी गई है और संसारमें सबसे बड़ी समझी जाती है। सड़कका अधिक भाग बड़े २ वृक्षोंसे आच्छादित है। जिससे धूपका बचाव हो जाता है। रास्तेमें ही टीटागढ़ पड़ता है, जहां जूट और कागजकी मिलें हैं। इन्जीनियरिंगके बड़े २ कारखाने भी हैं। टीटागढ़से थोड़ी ही दूरपर बारकपुर है।



बारकपुरमें भी लाट साहबकी कोठी है। अब यहां बङ्गाल गवर्नर ठहरते हैं। यह कोठी सुन्दर भूमि पर स्थित है और यहां एक विशाल वटवृक्ष है।

बारकपुर पार्क २५० एकड़ भूमिमें है। यह कलकत्तेके निकटस्थ सुन्दर स्थानोंमेंसे गिना जाता है। सन् १८१३ में जब लार्ड मिन्टो यहां थे तब उन्होंने लिखा था "बारकपुर बहुतही अच्छा स्थान है।"

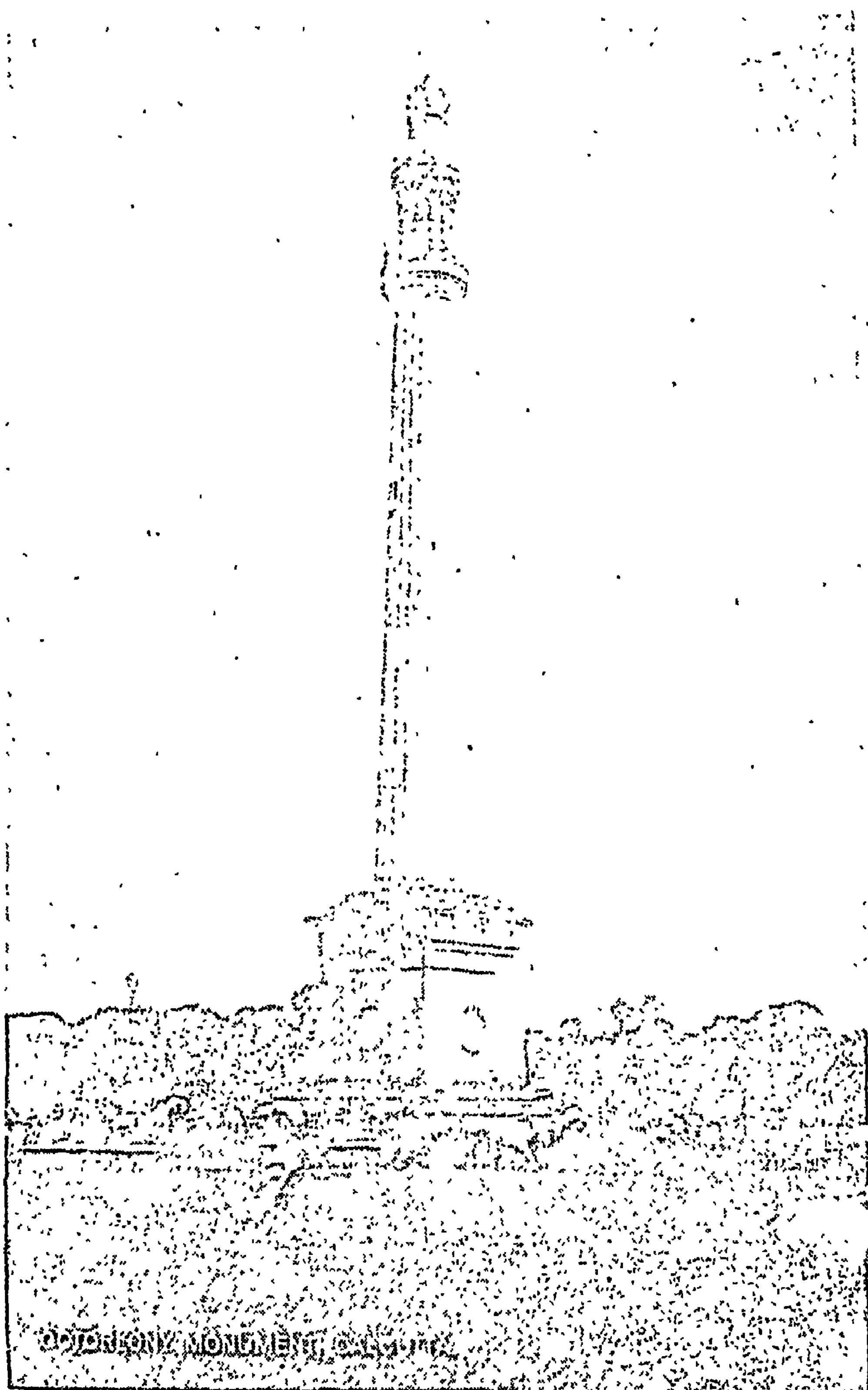
बारकपुरमें भारतीय और गोरी सेनाओंके रहनेके लिये खूब स्थान हैं। यह बात ध्यान रखने योग्य है कि सन् सत्तावनका गदर यहां की परेड ग्राउन्डसे ही आरम्भ हुआ था। सन् १८२४ में भी यहां एक बलवा हो हो चुका था।

बारकपुरमें धनी यूरोपियन भी पर्याप्त संख्यामें हैं। यहां कई खूबसूरत बंगले भी हैं। बारकपुर अपने रेसकोर्सके लिये प्रसिद्ध है। सन् १८१६ में भी यहां घुड़दौड़ होती थी। घुड़दौड़का नया मैदान अब लगभग समाप्त हो गया है। और यह भारतवर्षमें सर्वोत्तम होगा। ठीक मैदान पर ही एक रेलवे स्टेशन भी है।

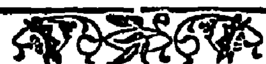
यहांसे तीन मीलपर मुनीरामपुर है। जहां पुल्टा वाटरवर्क्स है। यहींसे कलकत्ता नगरके लिये पानी आता है। कुछ ही आगे ईशापुरमें बारूदका सरकारी करखाना है।

सिरामपुर।

सिरामपुर हुगलीके तटपर है। यहां पहले सन् १७५५ में



ऑक्टरलोनीका मानूमेंट।



डेनिश लोगोंका अधिकार था १८०८ में इसे अंग्रेजोंने छीन लिया; परन्तु यह फिर १८१५ में डेनिश लोगोंको लौटा दिया गया सन् १८२४ अंगरेजोंने उनसे सिरामपुरको १२ लाख रुपयेमें खरीद लिया ।

यहांका प्रसिद्ध सिरामपुर कालेज केरी, मार्शमैन और वाड नामके तीन पादड़ियोंने स्थापित किया था। उन्होंने यहां एक प्रेस खोलकर बाइबिलको भारतकी प्रत्येक भाषा तथा चीनीभाषामें भी छपवाया था। प्रथम बंगला समाचारपत्र और दिफ्रैन्ड आफ इण्डिया, जो आजकल स्टेटसमैनमें सम्मिलित है; पहले पहल यहींसे निकला था। इसको सुनकर अवश्य आश्चर्य होगा कि इन तीनों पादड़ियोंमें केरी मोचीका काम करता था, मार्शमैन एक दूकानमें नौकर था और वाड एक चित्रकारके यहां काम सीखता था।

सिरामपुर कालेजको सुन्दर इमारत नदीके तटपर है और देखने योग्य है। यहांके पुस्तकालयमें पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। केरीकी कुरसी भी बड़े यत्नसे रक्खी हुई है।

सिरामपुरमें कई बड़ी २ जूट मिलें हैं और यहां रेशमका अच्छा व्यापार है। यह स्थान कलकत्तेसे १३ मील दूर है। हबड़ा स्टेशनसे यहां ट्रेन भी जाती है और ग्रेन्ड ट्रङ्करोडसे होकर मोटर भी और बारकपुरके सामने हुगलीके उस पार तो यह है ही।



चन्द्रनगर।

यह सिरामपुरसे सात मील पर है। यहां भी हवड़ा स्टेशन से रेल जाती है।

चन्द्रनगर फ्रेंच उपनिवेश है। यों तो यह स्थान सन् १७०० से ही फेञ्च लोगोंके अधिकारमें है, परन्तु इसकी उन्नत दशा भारतके सर्वश्रेष्ठ फ्रेञ्च शासक डुप्ले (Dupleix) के आगमन कालसे ही आरम्भ होती है। सन् १७४० में जब कलकत्ताकी स्थिति बिलकुल नहींके समान थी, उस समय चन्द्र नगर धन वैभवमें शीघ्रता पूर्वक आगे बढ़ रहा था।

डुप्ले नदी तटके उस मकानमें रहता था जहां वर्तमान गवर्नमेंट हाउस है और यहीं बैठकर उसने भारतमें फ्रेञ्च शासन स्थापित करनेका विचार किया था। सन् १७६३ में अंग्रेजोंने चन्द्र नगरको अधिकृत कर लिया, परन्तु बाईस वर्षके पश्चात यह फिर फ्रेञ्चोंको मिल गया और तबसे यह उन्हींके अधिकारमें है। ब्रिटिशभारत इसका राजनीतिक या व्यापारिक किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं है। फ्रेञ्च लोग वर्षमें अंग्रेजोंसे केवल ३०० बक्स अफीम लेते हैं। अंग्रेजोंने ऐसी शर्त करली है जिससे कि फ्रेञ्च लोग अफीम बनाकर उसका व्यापार न कर सकें। चन्द्रनगर नदीके तटपर सुन्दर ढंगसे बसा हुआ है और भारत का छोटा फ्रांस प्रतीत होता है।



चिन्सुरा।

चिन्सुरा चन्द्रनगरके तीन मील आगे है। यहां भी रेल पथ और राजपथ दोनों ही हैं। पहले यह डच लोगोंके अधिकारमें था परन्तु सन् १८२४ में अंग्रेजोंने डच लोगोंको सुमात्रा द्वीप देकर बदलेमें उनसे चिन्सुरा ले लिया।

यहांका किला, जो सन् १६८७ में बना था, पचास वर्ष पहले ही नष्ट कर दिया गया। यहांका हुगली कालेज एक विशाल भवनमें है जो फ्रेञ्च जेनरल पीरनका था। इस जेनरल ने मरहठोंकी सेवामें प्रचुर धन कमाया था। पहले इङ्गलैंडसे आये हुये रंगरूट और सेना चिन्सुरामें ठहरती थी। यहां अब बारकोंकी लम्बी २ कतारे बनी हैं जो दूसरे ही काममें लायी जाती हैं। ये बारकें पुराने किलेकी भूमिपर बनी हैं।

हुगली।

विदेशियोंमें सर्व प्रथम पुर्तगीजोंने यहां सन् १५४० में अपनी कोठी खोली और १५९९ ई० में एक किला बनाया था। सन् १६२५ में डच लोगोंने भी अपनी कोठी यहीं खोली। १६३१ ई० में हुगलीको मुगल सेनाने अपने अधिकारमें कर इसे अपना बन्दरगाह बनाया। कलकत्तेकी स्थापना करनेके पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनीका एजेण्ट जाब चारनक सपरिषद् यहीं रहता था।

हुगलीका इमामबाड़ा देखने लायक जगह है। यहां यात्रियोंके



ठहरने के लिये एक सराय भी है। इसका प्रवेश-द्वार एक बड़े घंटाघर के नीचे से है। दालानमें एक लम्बा तालाव है, जिसके बीचमें एक फौव्वार भी है। यह इमामबाड़ा मुहम्मद मुशीन द्वारा छोड़े हुए प्रचुर धनमेंसे बनाया गया है। बाकी धनसे बंगालमें कई मद्रसे और मुस्लिम छात्र वृत्तियां नियुक्त हैं। इमामवाड़ा आज कल एक मौलवीके तत्वावधानमें है।

हुगली एक अच्छा स्थान है। वहां सार्वजनिक चन्देसे महाराणी विक्टोरियाकी जुबिलीकी यादगारमें बनाया हुआ एक सुन्दर विक्टोरिया हाल भी है। यहां की वार्षिक आय ४६ लाख रुपयेके लगभग है और जनसंख्या ३२ हजार। जुबिली नगरके बीचमें है। हुगलीमें रेलवे स्टेशन एक भी नहीं है। अधिकारियोंका ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है और सम्भवतः वह भी शीघ्र ही बन जायगा।

बंडेल।

पुर्त्तगीजोंकी सेवासे प्रसन्न हो कर गोआ नरेशने उन्हें पुरस्कार स्वरूप बंडेलका इलाका दिया था। पुर्तगीजोंने यहां अपना किला भी बनाया था। पहले यहां यूरोपियनोंकी अच्छी बस्ती थी और अनेक सुन्दर मकान थे; परन्तु अब उनका कोई चिन्ह तक नहीं है। यहां एक गिरजाघर भी है जो सन् १५९९ मे बना था और यह बंगालका सबसे प्राचीन गिरजा था। १६३२ ई० में मुगलों द्वारा हुगली विजयके समय जल।



दिया गया था परन्तु १६६१ में यहां नया गिरजाघर बना दिया गया।

बंडेल हुगलीके आगे है। हवड़ासे दिन भरमें यहां अनेकों ट्रेनें आती जाती हैं। बंडेल पहले छेनाके लिये प्रसिद्ध था।

गरियाहाट रोड।

यह सड़क लगभग बीस मील लम्बी है और बालीगञ्जके पास है। इस सड़कका आनन्द केवल मोटर या बाइसिकिलसे ही मिल सकता है। चन्द्रदेवकी शीतल शुभ्र ज्योतिमें तो यह द्विगुणित हो जाता है। पार्कस्ट्रीटमें प्रवेशकर लूडनस्ट्रीटसे होते हुये हम लोअर सर्कुलर रोडमें पहुंचते हैं। कुछ दूरतक बांयी ओर चलनेपर हमें बालीगञ्ज ष्टोर रोड मिलता है। इसी सड़कमें बालीगञ्ज मैदान तक जानेपर गरियाहाट रोड आता है। यह सड़क बालीगञ्जके भीतरसे जाती है। कुछ दूर आगे जानेपर हमें दाहिनी ओर लेकरोड मिलता है, जिसपर नया सदर्न-पार्क स्थित है। रेलवे लाइन पास करनेके बाद सड़क सीधी चली गई है। इसका अधिकांश भाग वृक्षोंसे अंकित है। सड़कके दोनों ओर धानके खेत हरे भरे लहलहाते हैं। चौरास्ता आनेपर दाहिनी ओर मुड़ जाइये।

रास्तेमें सुन्दर एवेन्यू मिलता है और आप टालीनहरके निकट पहुंच जाते हैं। सड़क रीजेण्ट पार्कसे होती हुई जाती है। यह यूरोपियनोंकी नई बस्ती है और यहां अच्छे २ बंगले

इत्यादि बन रहे हैं आगे यह रोड रसारोडमें एक रेलवे पुलके नीचेसे जाता है और यहींसे इम्प्रूवमेंट ट्रस्टकी नई बनी सड़क आरम्भ होती है। कुछ दूरतक यहां दो पथ हैं; एक मोटर इत्यादिके लिये और दूसरा बैलगाड़ियोंके लिये। ट्राम बीचमें चलती है। रसारोडमें सीधे जानेपर हम शीघ्रही चौरङ्गीमें जा पहुंचते हैं।



आठवां परिच्छेद

धर्म और जातियां।

कलकत्ता निवासियोंमें तीन चौथाईके लगभग हिन्दू है और सन् १९२१ की मनुष्यगणनाके अनुसार इनकी संख्या ६४३०१३ है। इनके कई जातीय विभाग भी हैं और इनकी भाषा और इनका रहन-सहन एक दूसरेसे बहुत कुछ भिन्न है। यों तो कलकत्तेमें सभी प्रांतके हिन्दू रहते हैं फिर भी इनमें बङ्गालियोंकी संख्या विशेष है।

बंगालियोंमें भो जातीय व्यवहारोंमें संकुचित हैं। इनमें दहेजकी प्रथा और भी भीषण है। गांवोंमें तो गरीब लोग अपना घर वेचकर लड़कीका विवाह करते हैं। विजातिमें ये विवाह नहीं करते। एक कुलीन गृहस्थ अपनेसे नोचे परिवारमें विवाह नहीं कर सकता। कट्टर सनातनियोंमें समुद्र-यात्रा वर्जित है। परन्तु इनमें विदेशी सभ्यता बड़े जोरोंसे फैल रही है। परदा इनमें बहुत कम होता है। स्त्रियां भी शिक्षित होने लगी हैं। बङ्गाली समाज भारतमें सर्वाधिक शिक्षित समाज है।

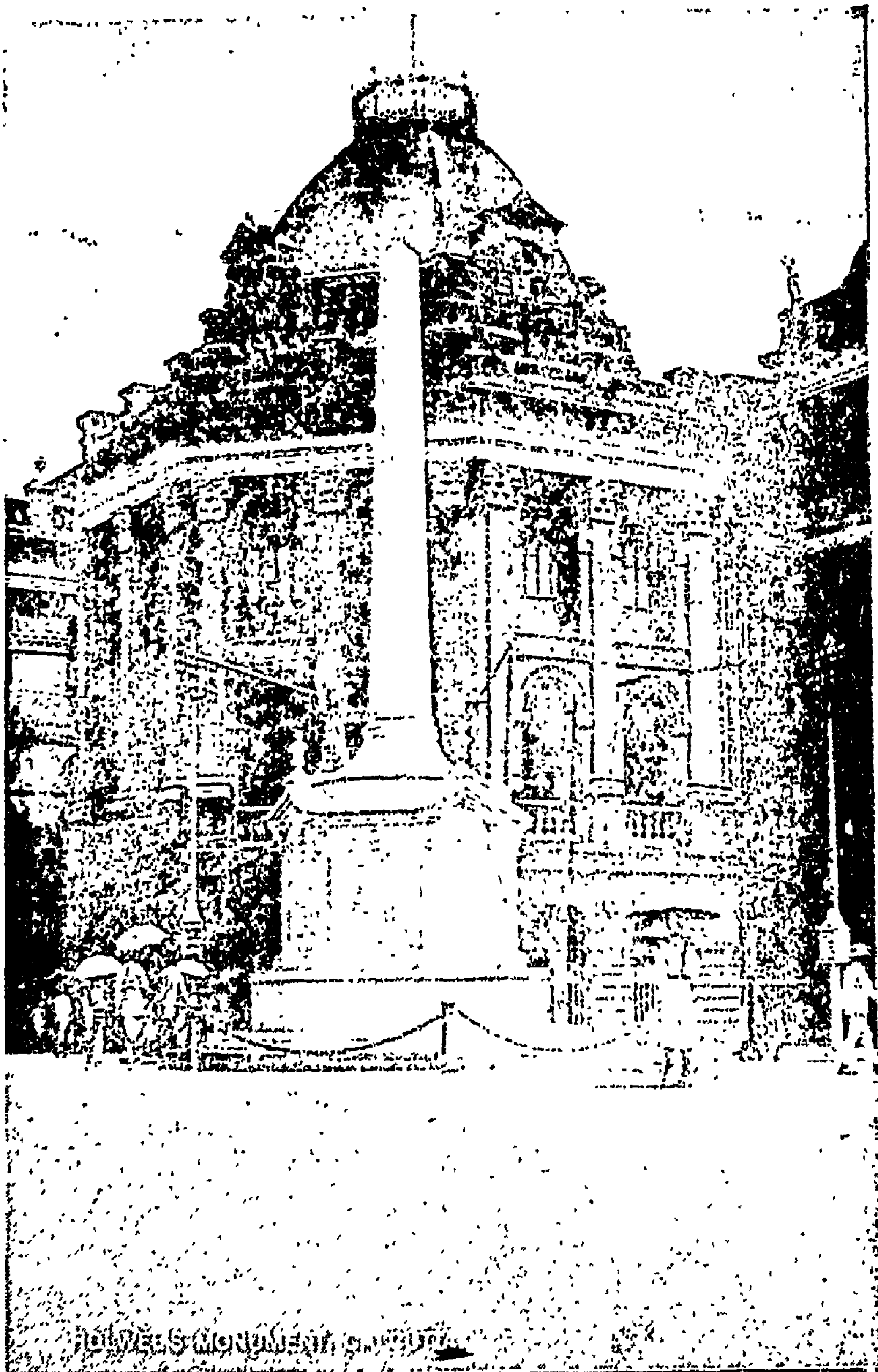
इनका प्रधान त्योहार दुर्गापूजा है, जो अक्टूबरके अन्तिम सप्ताहमें होता है। इस त्योहारपर सैकड़ों बकरे मां दुर्गाकी भेंट किये जाते हैं। बङ्गालभरमें उस समय खूब धूम मचती है; महिषासुरमर्दिनि दुर्गाकी विशाल और सुन्दर-मूर्त्तियां निकाली



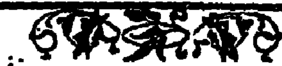
जाती हैं और अंतमें गंगामें विसर्जित कर दी जाती हैं। इस अवसरपर सरकारी दफ्तर और बैंक, स्कूल इत्यादि लगभग १२ दिनोंतक बन्द रहते हैं।

सन् १९२१ की ही मनुष्यगणनाके अनुसार मुसलमानोंकी संख्या २०९०६६ है। इनका धर्म इस्लाम है और ये एक ईश्वर मानते हैं। इनमें दो फिरके हैं, शिया और .सुन्नी, यह दोनों ही अपने अपनेको इसलामका मुखिया समझते हैं। इतना होने पर भी इनमें विशेष भिन्नता नहीं है। दोनोंका ही कुरान अरबी भाषामें है, कहीं २ इनमें ईसाई मतसे भी समानता पाई जाती है पुनर्जन्म, स्वर्ग और नर्कपर इनका विश्वास है। ये वर्षमें ४० दिन उपवास करते हैं। पैगम्बरका सच्चा बन्दा दाढ़ी रखता है और अपनी सामर्थ्यके अनुसार अनेक शादियां कर सकता है। सुअरका वध करना ये पाप समझते हैं और पशु इत्यादिका मांस तभी खाते हैं जब वह गर्दनसे काटा जाय।

मुसलमानोंका मुख्य त्योहार मुहर्रम है। यह त्योहार फातिमा और अलीके पुत्र हुसैनकी मृत्युके शोकमें मनाया जाता है। ९ अक्तूबर सन् ६८० को करबलामें हुसैनका बध कर डाला गया और इसके कुछही समय पहले उसका बड़ा भाई खालिफ यज़ीद द्वारा जहर देकर मार डाला गया था। इस त्योहारपर ये लोग १० दिनतक उपवास करते हैं। सातवीं रातको बुराक एक जानवर जिसपर चढ़कर मोहम्मद स्वर्ग गये थे की प्रतिमा बनाकर उसका जुलूस निकाला जाता है। दशवीं



हॉलवेल मानूमेंट।



रात कतलकी रात है। इस समय इनको बड़ा जोश होता है और ये लोग "हाय हसन" "हाय हसन" कहकर बड़े जोरोंसे अपनी छाती पीटते हैं। इनका यह जुलूस देखने योग्य होता है। कई वर्ष पहले ये इसी त्योहारपर बड़ा भारी दंगा भी मचा चुके हैं।

सन् १९२६ में तुच्छसे बाजेके प्रश्नको लेकर ही कलकत्तेमें महीनों दंगा मचा रहा। सैकड़ों घायल हुये; पचासों मौत के मुँहमें जा पड़े, न मालूम कितने घर उजड़ गये केवल पारस्परिक वैमनस्यके कारण। हे भगवन्! वह दिन कब आयेगा जब हम हिन्दू और मुसलमान सगे भाईकी तरह गलेसे गला मिलाकर भारतको स्वर्ग सदृश बनावेंगे!

बंगाली बाबू।

बंगालके रहने वाले बङ्गाली हैं और ये बाबू कहलाना अधिक पसन्द करते हैं। बङ्गाली लोग भारतमें सबसे अधिक शिक्षित समझे जाते हैं; परन्तु यह बात भी सच है कि जितने क्लर्क बङ्गालमें मिल सकते हैं उतने और कहीं नहीं। इनका रंग अधिकतर सांवला होता है। इनका शरीर-गठन बिलकुल साधारण होता है। कद नाटा; शरीर दुबला, नंगा सिर, बदन पर कमीज, पैरमें चट्टी इनका सदाका रूप है। ये भात और मछली खाते हैं; तेलका व्यवहार इनमें बहुत अधिक है। कालेजके बङ्गाली छात्र चाय और सिगरेट न पीना सभ्यताके विरुद्ध समझते हैं। शरीरसे मजबूत न रहने पर भी ये क्रिकेट, फुटबाल,



हाकी अङ्गरेजोंसे भी अच्छी खेलते हैं। परन्तु इन्हें शारीरिक परिश्रम नापसन्द है।

मस्तिष्क इनका बड़ा सुन्दर होता है। कानूनी पेशेमें ये दुनियामें सानी नहीं रखते। जितने धुरन्धर महापुरुष बङ्गालने उत्पन्न किये हैं, उतने भारतके किसी प्रान्तने नहीं। इनमें भी कलकत्ता-विश्वविद्यालयने अधिक या सभी बड़े २ आदमियोंको उत्पन्न किया है। बङ्गालियोंमें अङ्गरेजीका बहुत अधिक प्रचार है। अङ्गरेजी सभ्यता भी इनमें खूब फैली हुई है। कलकत्ते नगरके रहने वाले बङ्गालियोंमें गांवमें रहने वालोंकी अपेक्षा अधिक जातीय सुधार हुये हैं। राजनीतिमें ये लोग खूब दिलचस्पी लेते हैं। प्रत्येक बङ्गालीको समाचार पत्र पढ़नेका शौक है और यहां बङ्गलाके भी अनेक पत्र पत्रिकायें हैं।

मारवाड़ी ।

संख्यामें कम रहने पर भी कलकत्तेमें मारवाड़ी विशेष रूपसे धनिक हैं। कलकत्तेके व्यापार-संसारमें इनका विशेष स्थान है। शेयरमार्केट, जूट मिलें, कपड़ेका व्यापार, दलाली इत्यादि सभी व्यापारिक केन्द्रोंपर मारवाड़ी मौजूद हैं। ये व्यापारमें ही रत हैं। राजनीतिमें बहुत कम भाग लेते हैं; शीक्षाका भी इनमें विशेष प्रचार नहीं है। परन्तु आजकल इनमें तरह २ के अच्छे सामाजिक सुधार हो रहे हैं, जिससे मारवाड़ी समाजका भविष्य उज्वल दिखलाई पड़ता है।

मारवाड़ी लोग राजपुतानाके रहनेवाले हैं। इन्हे भी शारी-

रिक परिश्रमसे बिलकुल नफरत है, इसी कारण ये प्रायः स्थूल-काय होते हैं। इनके और एक युक्त प्रांतीयके पहिनावेमें अन्तर केवल इतनाही है कि ये एक विचित्र ढंगसे पगड़ी बांधते हैं जो खूब लम्बी और पतली होती है। अधिकतर यह हलके पीले या गुलाबी रंगकी होती है।

सिख।

स्टेशनसे बाहर निकलते ही सबसे पहले दाढ़ी रक्खे हुये और पगड़ी बांधे सिख मोटर ड्राइवर दिखलाई पड़ते हैं। प्रायः ६० फी सदी टेक्सी मोटरोंपर सिखोंको ही ड्राइवर देख कर यह ख्याल उठने लगता है कि शायद टेक्सी चलानेका ठेका इन्हींने ले रक्खा है; कमसे कम एक नया आदमी ऐसा अवश्य सोचेगा। सिख जैसी युद्ध प्रिय और वीर जातिको ऐसे शांतिप्रद धन्धेमें लगे देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है; परन्तु यह बात भी ध्यानमें रखनी चाहिये कि इनको मशीनोंसे अधिक प्रेम है।

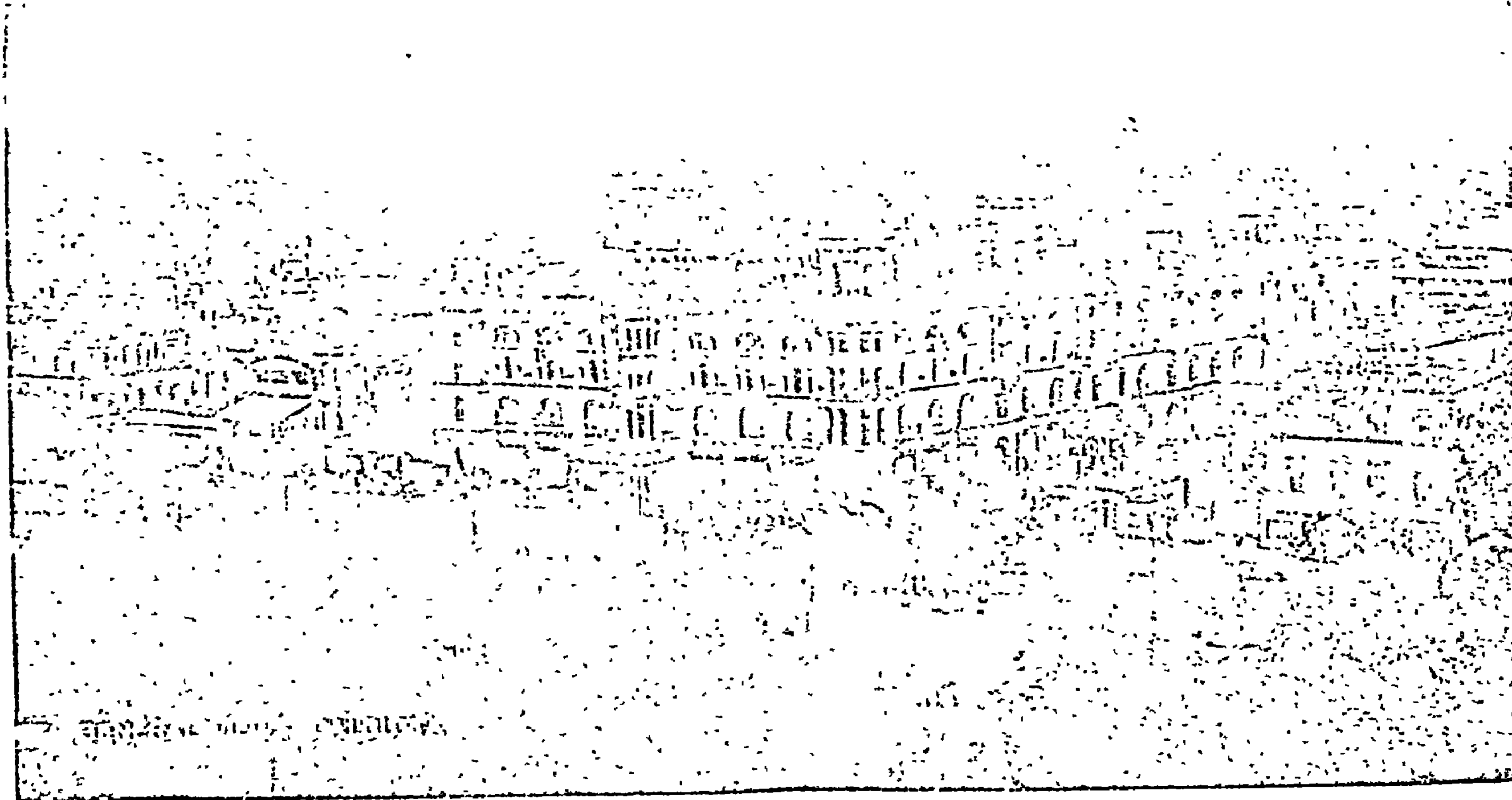
इतने मनुष्योंमें सिखोंको पहचान लेना बिलकुल आसान है। सिख लोग बड़ी पगड़ी बांधते हैं। कृपाण सदा साथ रखते हैं। ये अपनी दाढ़ी नहीं मुड़ाते वरन् उसे ऊपरको ओर मोड़ देते हैं। ये बाल भी नहीं बनवाते; उसको ये सिरपर जूड़ाकी तरह लपेट लेते हैं और उसपर एक कंघा गाड़ लेते हैं जिसे ये धर्मादेशानुसार सदा पासमें रखते हैं। इनका शरीर लम्बा और गठा हुआ होता है। कोई २ सिख अपनी पगड़ीमें चक्र लगाते हैं, जो लोहेका होता है और एक इञ्च चौड़ा होता



है। इसमें खूब धार होती है। यदि यह शत्रु पर जोरसे फेंका जाय तो उसकी गर्दन अवश्य कट जायगी। सिख लोग किसी भी रूपमें तम्बाकूका सेवन नहीं करते। युद्धमें ये बड़े ही निपुण और वीर होते हैं। धर्मके नाम पर हंसते २ बलिदान हो जाना इनके लिये लड़कोंका खेल है। इतना होने पर भी इनमें शिक्षा नहीं के बराबर है। राजनीतिमें भी ये बहुत कम दिलचस्पी लेते हैं। कलकत्ता नगरमें इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं है।

गुरखा नैपाली।

कलकत्तेमें एक दूसरी योद्धा जाति भी है। जिस प्रकार सिख अपनी पगड़ी, कृपाण और लम्बे चौड़े शरीरके लिये प्रसिद्ध हैं, उसी प्रकार नैपाली लोग भी अपने नाटे कद, छोटी २ आंखें और खुखड़ीसे पहचाने जाते हैं। ये लोग नैपालके पहाड़ी प्रदेशके रहने वाले हैं। इनका कद नाटा होता है, मुश्किलसे कोई गुरखा ५ फीट ५ इञ्चसे लम्बा होगा। कष्ट कर पहाड़ी देशमें रहनेके कारण ये परिश्रमी और फुर्तीले होते हैं। ये अपना राष्ट्रीय शस्त्र खुखड़ी सदा साथ रखते हैं। यह करीब २० इञ्च लम्बी होती है और इसका दांत चौड़ा होता है। एक ही वारमें इससे आदमीके हाथके जैसी मोटी पेड़की डाल काटी जा सकती है। युद्धमें इसका वार पास खड़े हुए शत्रुपर भी किया जा सकता है और फेंक कर भी, जिसका क्षत बड़ा भीषण होता है। ये लोग अपनी खुखड़ी म्यानसे व्यर्थ ही नहीं निकालते क्योंकि इनका विश्वास है कि खुखड़ी जब बाहर



कलकत्ता नगरका पूरा दृश्य ।

निकले तो उसे रक्त अवश्य मिलना चाहिये। गुरखा युद्ध कौश-लके लिये प्रसिद्ध तो हैं ही, परन्तु शिकारमें भी ये सिद्ध हस्त हैं। केवल मात्र खुखड़ी लेकर ही हिंसक जन्तुओंको मार डालते हैं। इनमें इतनी युद्ध प्रियता होने पर भी इन्हें पुष्प इत्यादिका स्वाभाविक सौन्दर्य खूब प्रिय है। बकरी और गाय का मांस छोड़ कर ये सब प्रकारका मांस खाते हैं। तम्बाकू और शराबका सेवन भी ये खुले तौरसे करते हैं। जर्मन युव-राज, फ्रेडरिक विलियमने गुरखोंके सम्बन्धमें निम्नलिखित शब्द कहे थे—"ये छोटे शरीरके होनेपर भी बड़े ही फुर्तीले और साहसी होते हैं। न तो भूतसे डरते हैं न प्रेतसे।"

काबुली।

लम्बे और मजबूत शरीर वाले काबुली भी कलकत्तेके नाग-रिकोंमें एक विशेष स्थान रखते हैं। पहाड़ी मुल्कके निवासी होनेपर भी ये काबुली यहां लोगोंको व्याजपर रुपया उधार देनेका व्यवसाय करते हैं। ये काबुली लोग लंबे, हृष्ट पुष्ट और सुन्दर गौरवर्णके होते हैं। इनकी आंखे नीली या भूरी होती हैं। इनके बाल लंबे और बराबर कटे होते हैं। दो या तीनके गुट्टमें ये काबुली रास्तेमें जोरसे बातें करते हुये जाते प्रायः दिखाई पड़ते हैं। इनके हाथमें तीन चार फीटका एक मजबूत डंडा सदा मौजूद रहता है। इनकी वेश भूषा बड़ी ही विचित्र होती है। इन्हें देखकर एक नये आदमीको भी हंसी

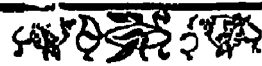
बिना आये नहीं रह सकती । एक लम्बा सफेद और चौड़ा पायजामा, सफेद कमीज, नाना प्रकारके रंगोंके कपड़ेसे बनी हुई वास्केट जिसपर ज़रीका काम किया गया हो, और दूधके समान सफेद पगड़ी, जिसके बीचमें नुकीली मखमली टोपी ऊपर उठी हुई हो, इनका राष्ट्रीय पहिनावा है। इनका भयानक रूप और मोटा डंडा देखकर कर्जदारोंकी सिट्टी गुम हो जाती है। ब्याज भी ये बेहद वसूल करते हैं। रुपया चुकानेमें आनाकानी देख कर ये अपने डंडेको भी खूब स्वतन्त्रता पूर्वक काममें लाते हैं। यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि कलकत्तेमें इनकी संख्या दालमें निमकके बराबर है।

देशवाली।

कलकत्तेमें देशवाली भी संख्यामें अधिक नहीं हो कम नहीं हैं। देशवाली कहनेसे युक्त प्रांतके निवासियोंका बोध होता है। इनमें अधिकांश स्वतन्त्र व्यवसाय नहीं करते। कलकेके दरवान या जमादार भाइयोंमें भी इनकी विशेष संख्या है। ये लोग लम्बे चौड़े और शरीरसे पुष्ट होते हैं। कसरतसे इन्हें बड़ा प्रेम है। महावीर हनुमान तथा अन्य हिन्दू देवताओंके ये अनन्य भक्त हैं। गुरखोंकी भांति इनमें भी सचाई और स्वामिभक्तिकी मात्रा अधिक रूपमें रहती है। इनमें भी कई प्रसिद्ध व्यक्ति हैं जो कलकत्ता नगरमें विशेष स्थान रखते हैं।

ईसाई।

यहां ईसोंमें भी दो भेद हैं। ऐंग्लो इंडियन और यूरोपियन।



इनमें ऐंग्लोइण्डियनो की संख्या अधिक है। ये पहले यूरोपियन (योरप + एशिया) के नाम से पुकारे जाते थे परन्तु यह बाद को ऐंग्लोइण्डियन हो गये ! इनमें अधिक परिमानमें ईसाई पूर्वज के वंशज हैं और कुछ नय ईसाइ हैं ! ईसाई धर्म में समानता होने पर भी यूरोपियन लोग इन्हें समान नहीं समझते ! इनके लिये अलग गिरजाघर और कब्रस्तान हैं। राजनीतिमें भी ये खूब दिलचस्पी लेते हैं। चुंगीघर रेलवे और टेलीग्राफ आफिसोंमें ये बेतरह घुसे हुए हैं। इनमें अधिकांश गरीब हैं। ये हिन्दी और अंग्रेजी बोली बोल लेते हैं।

यूरोपियन भी यहां अधिक संख्यामें हैं। ये हमारे शासक हैं इसलिये इनके धन ऐश्वर्यका पूछनाही क्या। इनकी बस्तियां और सड़कें खूब साफ होती हैं। संध्या समय इनके झुंडके झुंड चौरङ्गी और मैदानमें टहलने निकलते हैं। नगरके बैंक, बड़े २ आफिस, बड़ी २ दूकानें और होटल, सरकारी दफ्तरोंके उच्च स्थान इत्यादि सभी इन्हींके हाथों हैं। इनमें लगभग सभी शिक्षित हैं। कलकत्तेके बड़े २ व्यापारोंमें इन्हींकी प्रधानता है।

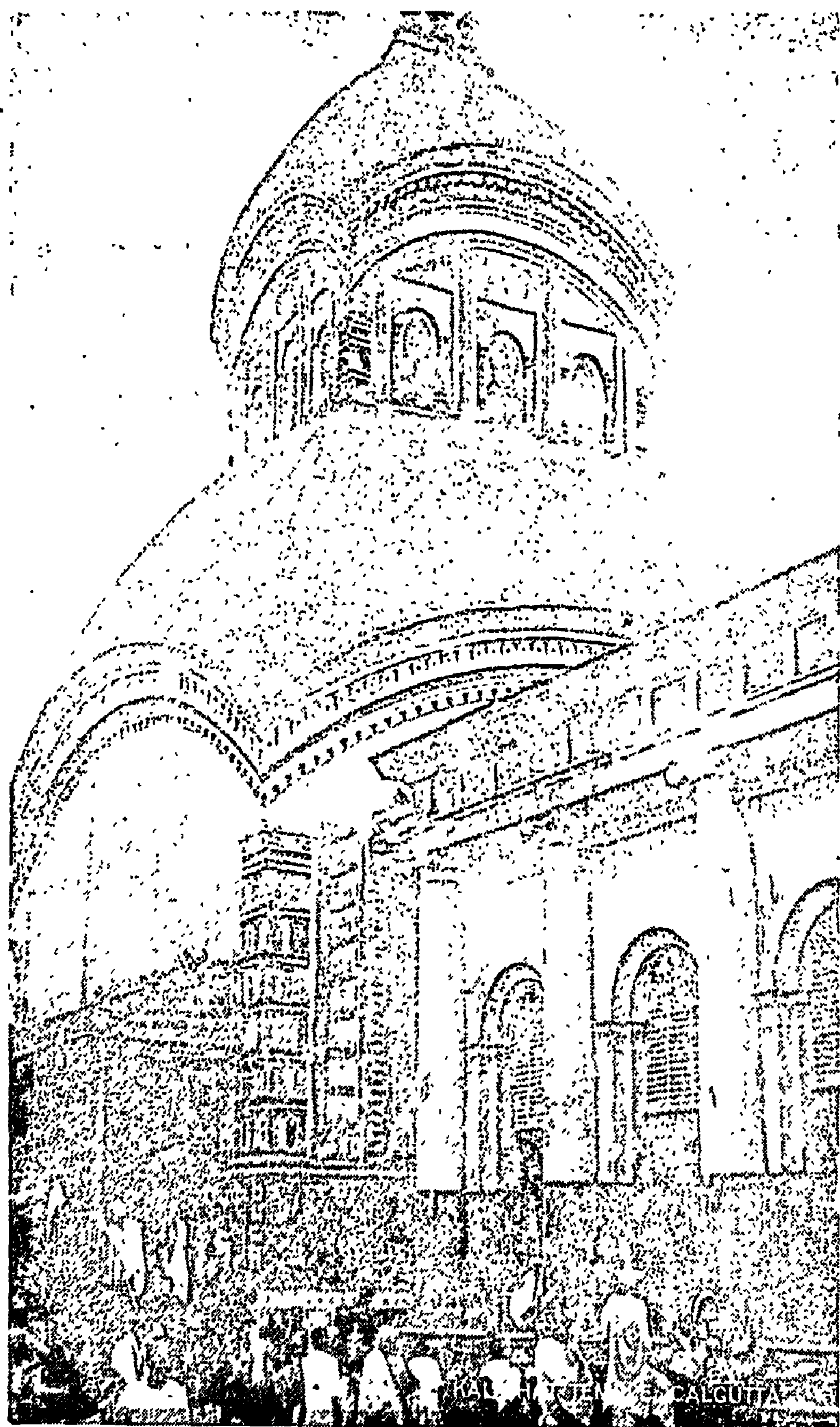
उपर्युक्त भिन्न २ प्रकारके मनुष्योंके अतिरिक्त भी कलकत्तेमें कई अन्य सम्प्रदायके लोग हैं। इनमें यहूदी सबसे अधिक हैं। थोड़े बहुत चीन-निवासी भी हैं; जो अधिकतर जूता बनानेका काम करते हैं। कलकत्ते जैसे नगरमें संसार भरके मनुष्य मिलेंगे। जापान, चीन, अमेरिका, रूस इत्यादि सभी स्थानोंके आदमी यहां हैं अवश्य; चाहे वे निम्नातिनिम्न संख्यामें



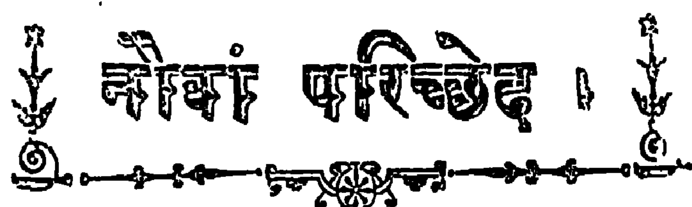
ही क्यों न हों।

कलकत्तेमें धन्धेके अनुसार भी अलग २ नाम रक्खे गये हैं। जैसे, पहरावाला या पुलिस, दरजी, कुली, भिश्ती, साईस, मेहतर इत्यादि। सड़कपर पञ्जाबी ज्योतिषी जगह २ पलथी मारे, सामने पत्रा इत्यादि रक्खे बैठे रहते हैं। ये आदमियोंको पास बुला २ कर उनसे हाथ दिखानेका आग्रह करते हैं। जिस समय ये दिखलानेवालेका हाथ लेकर आंख मूंद लेते हैं। उस समय मालूम पड़ता है, यह कोई बड़ा भारी ज्योतिषी है। ये बड़े चतुर होते हैं और बिलकुल गोल मटोल बात करते हैं। परन्तु इनके बात करनेका ढंग ऐसा चातुर्यपूर्ण रहता है कि नया आदमी बड़ी आसानीसे फंस जाता है। इन्होंने हाथ देख-कर, बात बनाकर पैसा वसूल करनाही अपना व्यवसाय बना रक्खा है।

यहां धोबी भी खूब हैं। ये सभी उड़िय होते हैं। इनकी बात सुननेमें बड़ा आनन्द आता है। ये सबेरे कपड़ा ले जाते हैं और "खड़ाघाट" धोकर शामको दे जाते हैं। इनकी स्मरण शक्ति बड़ी तेज होती है। कपड़ा देनेमें गोलमाल बहुत कम होता है। उड़ियालोग गांठ ढोनेका भी काम करते हैं। ये सड़कपर खड २ करती हुई गाड़ीपर माल लादे हुये प्रायः दिख-लाई पड़ते हैं। ये परिश्रमसे जरा भी नहीं घबड़ाते और बड़े संतोषी हैं। ये प्रायः सभी गरीब हैं। परन्तु तेल खूब लगाते हैं। पान खानेका भी इन्हें बड़ा शौक है। इनका रंग काला शरीर गठा हुआ होता है। ये सदा मस्त रहते हैं।



कलकत्तेका प्रसिद्ध काली-मन्दिर ।



कलकत्तेमें बनने वाली वस्तुयें

कलकत्ता अपने जूटके व्यापारके लिये संसार प्रसिद्ध है। बंगालकी अधिकांश जूट मिलें कलकत्तेके आस ही पास हैं। यहां अनेक आटाकी मिलें, चावल और तेल कलें, लोहे, चमड़े तथा दियासलाईके कारखाने हैं। भारतका सबसे बड़ा लोहेका कारखाना टाटा आइरन वर्क्स,जमशेदपुर कलकत्तेसे १५० मीलपर ही है। प्रायः सभी जूटकी मिलें यूरोपियन कम्पनियोंकी ही हैं, और जो थोड़ी बहुत भारतीयोंकी हैं, उनका प्रबन्ध भी अंग्रेजोंके ही हाथमें है। कलकत्तेके बन्दरगाहसे बाहर विदेश जाने वाले भारतीयोंके मोलमें जूटका ' श ५५ शत है, और बाकी ३५ प्रतिशतमें अन्य वस्तुयें।

यद्यपि बङ्गालमें बहुत काल पहलेसे जूट उत्पन्न होता था परन्तु अब अंग्रेजोंके आगमनके बाद मशीनों द्वारा अधिक बढ़िया बनने लगा है। इस सम्बन्धमें विशेष जानकारी हासिल करनेमें श्री,एन० सी० चौधरी द्वारा लिखित "जूट इन बंगाल पुस्तक खूब सहायता पहुंचाती है।

हवड़ा हुगली और २४ परगनाके डिस्ट्रिक्टोंमें नदीके तटपर



कमसे कम ८४ जूट मिलें हैं, जिनमें प्रतिदिन लगभग ३२५००० मनुष्य काम करते हैं। इनमें प्रधान जूटमिलें ये हैं:—हवड़ा जूट मिल, शिवपुर, रामकृष्टोपुर दि ग्रैन्जेज़ जूट-मिल दि टीटा जूट-मिल, टीटागढ़, दि खरदा जूट मिल, खरदा, फोर्ट ग्लोस्टर जूट मिल, फोर्ट ग्लोस्टर, औरबिरला जूट मिल बज बज। इनके अतिरिक्त कलकत्तेमें कई जूट प्रेस भी हैं, जिनमें सबसे बड़ी मेसर्स राली ब्रदर्सकी है। यह काशीपुरमें है।

काटन मिलें—हवड़ासे हुगलीके बीचमें गंगा-तटपर लग भग १२ काटन-मिलें हैं, जिनमें प्रतिदिन १२६७५ मनुष्य काम करते हैं।

कोयला—कलकत्तेमें कई कम्पनियोंके रजिस्टर्ड आफिस हैं और इनका माल कलकत्ता बन्दरगाहसे ही जाता है। सन् १९२५ में यहांसे १२,५५,६०५ टन कोयला बाहर भेजा गया था। बङ्गाल की कोयलेकी खानें अधिकतर रानीगंजमें हैं, जहां रेल द्वारा ४ या ५ घंटोंमें पहुंचा जा सकता है।

पेन्ट—यहां पेन्टके तीन कारखाने हैं, जिनमें शालीमार पेन्ट वर्क्स सबसे बड़ा है।

कागज—भारतकी सबसे बड़ी दो पेपर मिल्स यहीं हैं। टीटागढ़ पेपर मिल्स टीटागढ़में और दूसरी बङ्गाल पेपर मिल्स रानीगञ्जमें है। इनमें क्रमशः ३०५७ और १३४० मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं

मिट्टीके बर्त्तनः—टंगरा रोड एन्टालीमें कलकत्ता पोटरी



वर्क्स है, जिसमें लगभग ३५० आदमी काम करते हैं।

पत्थर—दि इण्डियन पेटेन्ट स्टोन वर्क्स केनाल ईस्ट रोड, एन्टाली में है। इसमें काम करने वालोंकी संख्या २०० है।

गोली बारूदके कारखाने—दमदमकी ऐमुनीशन फैक्टरी और ईशापुर स्थित राइफलका कारखाना सरकारके हाथमें हैं।

गैस—सियालदह स्थित ओरियण्टल गैस वर्क्सका कारखाना नगरमें सबसे बड़ा है।

रस्सी:—यहां रस्सीके चार कारखाने हैं, गेन्जेज़ रोप वर्क्स, शिवपुर, शालीमार रोप वर्क्स, शालीमार, और घुसड़ी रोप वर्क्स घुसड़ी और विक्टोरिया स्टीम रोपिंग वर्क्स शिवपुरमें हैं।

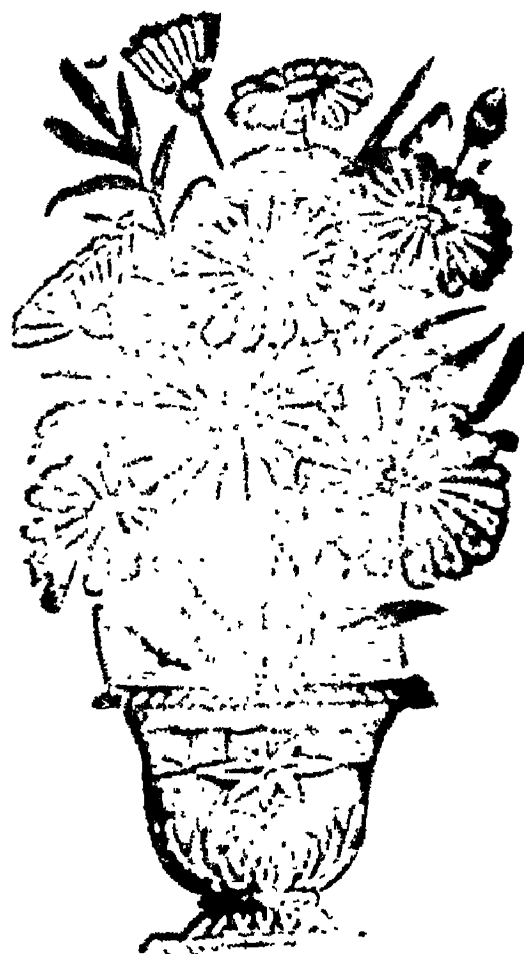
ग्रामोफोन रेकार्ड:—ग्रामोफोन कम्पनीका रेकार्ड बनानेका कारखाना बेलियाघट्टा रोड, सियालदहमें है। इसमें लगभग २५० आदमी काम करते हैं।

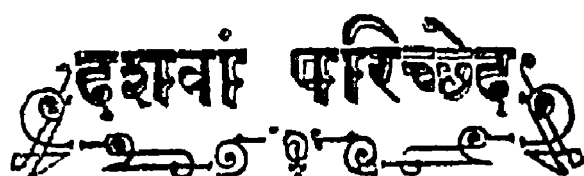
दियासलाई—हालहीमें यहां कई दियासलाईके कारखाने स्थापित हुये हैं। इनमें सबसे बड़े कारखाने वेस्टर्न इण्डियन मैच कम्पनी, केनाल रोड, तथा एसावी मैच मैनुफैक्चरिङ्ग वर्क्सके हैं। प्रथम कम्पनीमें प्रतिदिन ५००० ग्रूस बक्स तैयार होते हैं।

बरफ—दि लाइटफुट रेफ्रीजेरेशन कम्पनी, एन्टाली, और कलकत्ता आइस फैक्टरी गैस स्ट्रीट,के कारखाने यहां सबसे बड़े माने जाते हैं।

हड्डी—बङ्गाल बोन मिल्स, बेलिया घट्टामें ३८५ आदमी काम

करते हैं, और गैन्जेज़ वैली योन मिल, उत्तर पाड़ामें, ३४२ मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं।





विविध विषय

कलकत्तेके प्रधान भारतीय और यूरोपियन होटल।

ग्रेट ईस्टर्न होटल लिमिटेड नं० १,२ और ३ ओल्डकोर्ट हाउस ष्ट्रीट।

ग्रैंड होटल लिमिटेड न० १५ चौरङ्गी रोड।

स्पेन्सेज़ होटल लिमिटेड न० ४ वेलेस्ली प्लेस।

काण्टिनेण्टल होटल लिमिटेड, न० १२ चौरङ्गी रोड।

ब्रिस्टल होटल, न० २ चौरंगी रोड।

लार्ड्स होटल लिमिटेड, न० २३३ लोअर सर्कुलर रोड।

पञ्जाब हिन्दू-होटल, नं० १४४ हैरिसन रोड,

ताजमहल होटल, हैरिसनरोड,

कलकत्तेमें अंगरेजी होटलोंकी संख्या अधिक है। चूंकि भारतीयोंमें होटलोंका प्रचार कम है इसलिये इनके होटलोंकी संख्या कम है और अंगरेजी होटलकी तरह बड़े और शानदार नहीं होते। सफाई भी इनमें उतनी नहीं है।

कलकत्तेके मुख्य बैंक।

एलाहाबाद बैंक लिमिटेड, नं० ६, रायल एक्सचेंज प्लेस

फोन न० कलकत्ता ११४७

बैंक आफ तैवान, नं० २ और ३ क्लाइव रो,

फोन न० कलकत्ता ५२४०

सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, १००, क्लाइव स्ट्रीट,

फोन न० कलकत्ता ३२२२

चार्टर्ड बैंक आफ इण्डिया, आस्ट्रेलिया ऐंड चाइना, चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग्स, क्लाइव स्ट्रीट,

फोन नं० कलकत्ता ६६४५

दि अमेरिकन एक्सप्रेस कं०, १४, गवर्नमेंट प्लेस, ईस्ट,

फोन न० कलकत्ता ३०६७

टामस कुक ऐंड सन (बैंकर्स) लि०, ४, डलहौसी स्कायर ईस्ट,

फोन न० कलकत्ता ५५६०

दि इस्टर्न बैंक लिमिटेड नं० ६ क्लाइव स्ट्रीट,

फोन न० कलकत्ता १२१५

ग्रिन्डले ऐंड को० लिमिटेड नं० ६, चर्च लेन,

फोन न० कलकत्ता १४

हांगकांग ऐंड शंघाई बैंकिंग कारपोरेशन, हांगकांग हाउस, ३१ डलहौसी स्क्वायर, साउथ,

फोन न० कलकत्ता ३२०५

इम्पीरियल बंक आफ इंडिया, लिमिटेड, ३ स्ट्रैण्ड रोड

फोन न० कलकत्ता ४३३०

इण्टर नेशनल बैंकिंग कारपोरेशन नं० ४ क्लाइवस्ट्रीट,

फोन न० कलकत्ता १४८७

लायड्स बैंक, लिमिटेड, काक्स ब्रांच, १०१।१ क्लाइव स्ट्रीट,
फोन, न० कलकत्ता ४५२०

लायड्स बैंक, लिमिटेड किंग्स ब्रांच, नं० १०० क्लाइव स्ट्रीट,
फोन न० कलकत्ता ६

मरकन्टाइल बैंक आफ इण्डिया, लिमिटेड ८ क्लाइव स्ट्रीट,
फोन न० कलकत्ता ८३०

दि नेशनल बैंक आफ इंडिया, लिमिटेड १०४ क्लाइव स्ट्रीट,
फोन न० कलकत्ता ५३६६

नेशनल सिटी बैंक आफ न्यूयार्क, नं० ४ क्लाइव स्ट्रीट,
फोन न० कलकत्ता ३८७५

नीदरलैण्डस इंडिया कमर्शियल बैंक, २६ और २७ डलहौसी स्क्वायर, वेस्ट,
फोन न० कलकत्ता २७८६

पी० ऐंड ओ० बैंकिंग कारपोरेशन, लिमिटेड १, फेयरली प्लेस,
फोन न० कलकत्ता ५१००

याकोहामा स्पेसी बैंक, लिमिटेड १०२।२, क्लाइव स्ट्रीट,
फोन न० कलकत्ता ५२११,

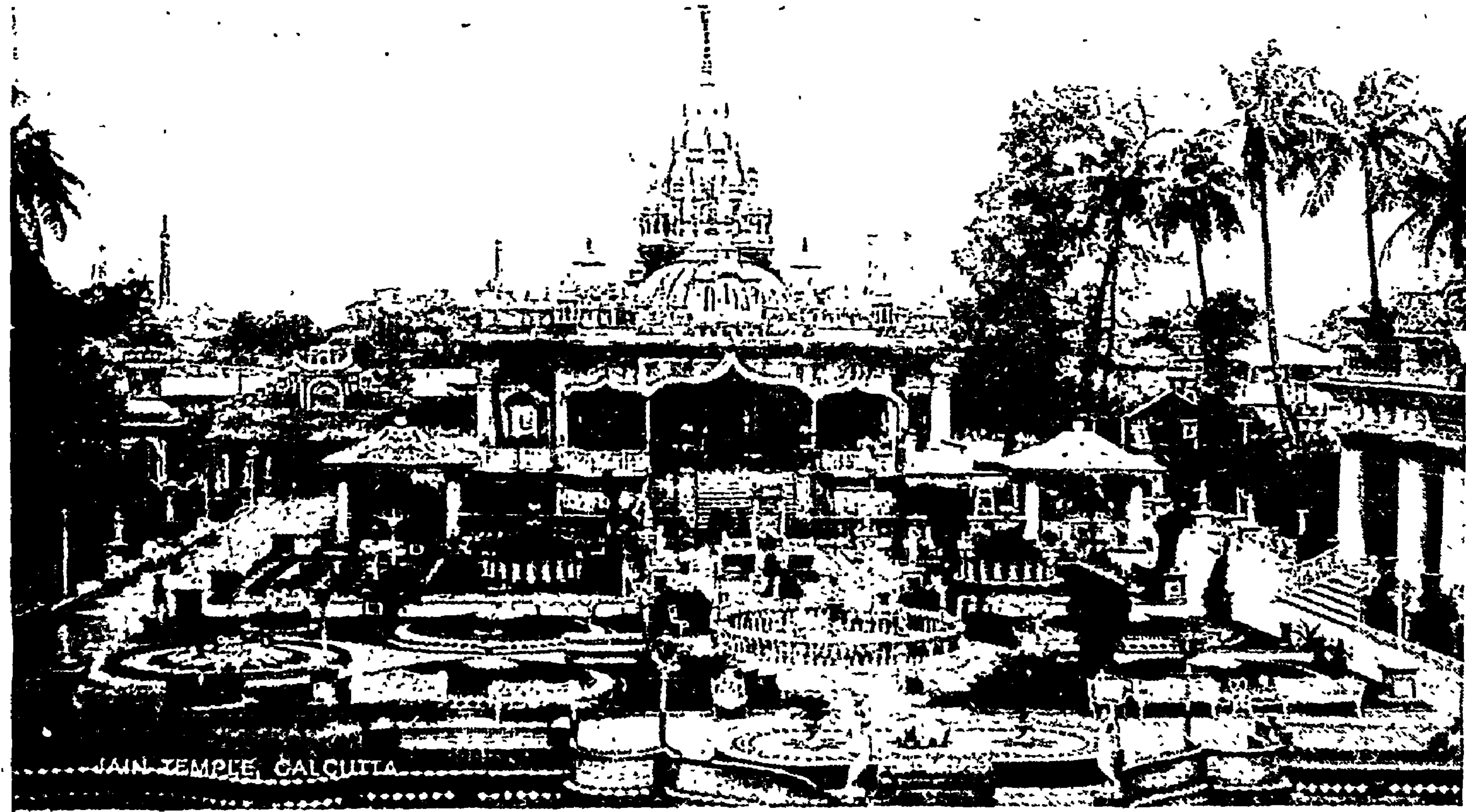
विदेशी राजदूत

कलकत्तेमें निम्न लिखित देशोंके राजदूत रहते हैं:—

अमेरिकन,	१, एस्प्लेनेड मैन्शन्स
आर्जेन्टाइन प्रजातन्त्र	५, फेयरलीप्लेस.



बेल्जियन	४. गोलस्टान मैन्शन्स
बोलिविया,	२७. पार्क लेन,
ब्रेजील,	ग्रैन्ड होटल,
चिली,	१८, पार्क स्ट्रीट,
कोस्टारिका	२७, पार्क लेन,
क्यूबा	५, डलहौसीस्क्वायर
डेनमार्क,	४, फेयरली प्लेस,
फ्रांस,	२, आकलैण्ड प्लेस,
जर्मनी,	२, स्टोररोड, बालीगंज
ग्रीस,	७, मिशनरो,
इटली,	२१ थियेटर रोड,
जापान,	७, लूडन स्ट्रीट,
लाइबेरिया,	६०, प्रसन्नकुमार टेगोर, ६०
मेक्सिको,	११,क्लाइव स्ट्रीट,
नीदर लैंड्स,	F३, क्लाइव बिल्डिंग्स,
न्यूज़ीलैन्ड	११, क्लाइव स्ट्रीट,
नारवे,	२२, कौनिंग स्ट्रीट,
पर्शिया,	५१, पार्क स्ट्रीट,
पेरू,	११।२ लैन्सडाउन रोड,
पुर्त्तगाल,	१४७, बऊबाजार स्ट्रीट,
रशियन,	१०, एस्प्लेनेड मैन्शन्स,
सियाम,	२, डोवर पार्क, बालीगंज,



मानिकतल्लाका जैन-मन्दिर ।



स्पेन, २६, डलहौसी स्कवायर

स्वीडन, २१, बद्वानरोड, अलीपुर

स्विज़रलैण्ड, १००, क्लाइव स्ट्रीट,

वेनेज़ुयेला, २७, पार्क लेन,

कलकत्ते के क्लब।

बंगाल क्लब, ३३, चौरंगी,

कलकत्ता क्लब, २४१ लोअर सर्कुलर रोड,

कलकत्ता क्रिकेट क्लब, एडेन गार्डन;

कलकत्ता फुटवाल क्लब, मैदान

कलकत्ता स्विमिंग क्लब, स्ट्रैण्ड रोड,

डलहौसी इन्स्टीच्यूट, डलहौसी स्कायर

डेल्टा क्लब, किड ष्ट्रीट

जोधपुर क्लब, गरिया हाट रोड,

न्यू क्लब, ३८ चौरंगी

रायल कलकत्ता गाल्फ क्लब, रसारोड टालीगंज

रायल कलकत्ता टर्फ क्लब, ११ रसेल ष्ट्रीट,

सैटरडे क्लब, ७ उड ष्ट्रीट,

टालीगंज क्लब, टालीगंज

यूनाइटेड सर्विस क्लब, २६, चौरंगी

यंगमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन, २५, चौरंगी,

यंग वीमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन, १३४ कारपोरेशन ष्ट्रीट

यंगमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन, कालेज स्ट्रीट।



थियेटर और सिनेमा।

कलकत्ता नगरमें थियेटर और बायस्कोपकी कमी नहीं है। बायस्कोप और नाटक अलग २ थियेटरोंमें दिखलाये जाते हैं। इन थियेटरोंमें लगभग सभी मैडन थियेटर्स लि० के तत्वावधान में हैं। सबसे अधिक सिनेमा-घर न्यूमार्केटके निकट हैं। इनमें ग्लोब थियेटर एक अंग्रेजी कम्पनीका है। ये सभी बायस्कोप घर नगरके अन्य सिनेमाघरोंकी अपेक्षा अधिक सुन्दर हैं। इनके नाम नीचे दिये जाते हैं।

थियेटर।

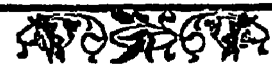
अलफ्रेड थियेटर, (हिन्दी) ६१ हैरिसन रोड, यहां नित्य ९ बजे रातसे और रविवारको ४ बजे दिनसे अभिनय होता है

कोरिन्थियन थियेटर, (हिन्दी) ५ धरमतल्ला स्ट्रीट यहां नित्य ९ बजे रातसे अभिनय होता है। शुक्रवारको बन्द रहता है

मिनार्वा थियेटर, (बंगाली) ६ बीडन स्ट्रीट, सप्ताहमें ४ दिन बुध और बृहस्पतिवारको ७॥ बजे रातसे, शनि और रविवारको ५ बजे से अभिनय होता है।

नाट्यमन्दिर, (बंगाली) कार्नवालिस स्ट्रीट, सप्ताहमें ३ दिन, बुध और शनिवारको ७॥ बजे रातसे, रविको ४॥ बजेसे।

स्टार थियेटर, (बंगाली) कार्नवालिस स्ट्रीट, सोम और मंगल वारको छोड़ कर प्रतिदिन ७॥ बजे रातसे, रविको ५ बजे सन्ध्यासे अभिनय होता है।



सिनेमा।

एलफिन्स्टन पिक्चर पैलेस, चौरंगी प्लेस, प्रति दिन दो बार ६ बजे और ६॥ बजे रातको, शनि और रविवारको ३ बजे, ६ बजे और ६॥ बजे से बायसकोप होता है

ग्लोब थियेटर, लिंडसे स्ट्रीट, दिनमें दो बार ६ और ९॥ बजे। शनि और रविवारको ३, ६ और ९॥ बजे।

मैडन थियेटर, या पैलेस आफ वराइटीज़, प्रतिदिन दो बार ६ और ६॥ बजे। शनि और रविवार—३, ६ और ६॥ बजे।

पिक्चर हाउस, चौरंगी रोड, प्रतिदिन दोबार—६ और ९॥ बजे

अलबियन थियेटर, कारपोरेशन स्ट्रीट, प्रति दिन दो बार—६ और ६॥ बजे से बायसकोप दिखाया जाता है।

कार्नवालिस थियेटर, प्रति दिन दो बार—६ और ९॥ बजे।

क्राउन सिनेमा, १३८।१ कार्नवालिस स्ट्रीट, ६ और ९॥ बजे।

इम्पीरियल थियेटर, ताराचन्ददत्त स्ट्रीट, ६ और ९॥ बजे।

सेण्ट्रल थियेटर, लोअर चितपुर रोड, ६ और ९॥ बजे।

एम्प्रेस थियेटर, ६१ आशुतोष मुकर्जी रोड, भवानीपुर ६ और ९॥ बजे।

खिदिरपुर सिनेमा हाउस, खिदिरपुर ६ और ९॥ बजे।

बड़ेबाजारके भद्रपुरुषों द्वारा संचालित

नाट्य-संस्थायें

१-हिन्दी-नाट्य-समिति १, नारायण बाबु लेन,



२-हिन्दी-नाट्य परिषद लोअर चितपुर रोड,

३-श्रीकृष्ण नाट्य परिषद् ८३ लोअर चितपुर रोड,

४-बजरङ्ग परिषद् २०१, हरिसन रोड,

५-अपर इंडिया एशोसियेशन अपर चितपुर रोड,

६—सरस्वती नाट्य समिति बांसतल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ते की प्रसिद्ध धर्मशालायें

पं० विनायक मिश्रकी धर्मशाला नं० २२६ हरिसन रोड

बा० श्यामदेव भूतिकाकी " नं० १५० " "

बा० बब्बूलाल अग्रवालकी " नं० १६१ " "

राय दुर्गामल बहादुरकी " नं० ६ मल्लिक स्ट्रीट

बा० लक्ष्मीनारायणकी " नं० २१ बांसतल्ला स्ट्रीट

धनसुखदास जेठमलकी धर्मशाला ४४, बद्रीदास टेम्पुल स्ट्रीट।

कलकत्ते के स्कूल और कालेज।

स्कूल:—

सेन्ट टामस स्कूल, क्रिश्चियन लड़के और लड़कियोंके लिये, फ्री स्कूल स्ट्रीट।

लारेटो कानवेन्ट, (लडकियोंका), एन्टाली।

प्रट मेमोरियल स्कूल, (लड़कियोंका १६८ चितपुर रोड।

सेन्ट जेम्स स्कूल (लड़कोंका) १६५ सर्कुलर रोड।

आरमीनियन कालेज ऐंड फिलैंथ्रपिक एकाडमी, फ्री स्कूल स्ट्रीट।

विशप्स कालेजियेट स्कूल, (लड़कोंका) २२४, लोअर सर्कुलर रोड।

हेयर स्कूल, ८७ कालेज स्ट्रीट।

हिन्दू स्कूल कालेज स्ट्रीट।

बिशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, मछुआबाजार स्ट्रीट।

ओरियंटल सेमिनरी, ३३६, अपर सर्कुलर रोड।

साउथ सुबरन स्कूल, चावलपट्टी रोड, भवानीपुर।

सील्स फ्री स्कूल, चित्तरञ्जन एवेन्यू।

स्काटिश चर्चेज कालिजियेट स्कूल, कार्नवालिस स्ट्रीट।

सारस्वत क्षत्रिय विद्यालय मछुआबाजार स्ट्रीट,

तिलक राष्ट्रीय विद्यालय मछुआबाजार स्ट्रीट

सनातन-धर्म विद्यालय तूलापट्टी,

माहेश्वरी विद्यालय बैशाख स्ट्रीट,

सेन्ट जेवियर्स कालेजियेट स्कूल, बऊबाजार।

सारस्वत क्षत्रिय कन्या पाठशाला न० १, शिवकृष्णदास लेन, जोड़ा साकू,

आर्यकन्या पाठशाला कार्नवलिस स्ट्रीट,

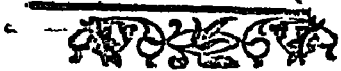
मारवाड़ी कन्या पाठशाला, बांसतल्ला गली,

कालेज।

प्रेसीडेन्सी कालेज—८६—१ कालेज स्ट्रीट।

स्काटिश चर्चेज़ कालेज, नं ४, कार्नवालिस स्ट्रीट।

संस्कृत कालेज, नं १, कालेज स्कायर।



विद्यासागर कालेज, नं ३६, शंकर घोषलेन ।

सिटीकालेज १०२—१ अमहर्स्ट स्ट्रीट ।

रिपन कालेज, २४, हैरिसन रोड ।

बंगवासी कालेज, २५-१ स्काट लेन ।

बेथ्यून कालेज, लड़कियोंके लिये, १८१ कार्नवालिस स्ट्रीट

सेन्ट्रल कालेज, ७१-२ कार्नवालिस स्ट्रीट ।

सेन्ट पाल्स कालेज, ३३-१ आमहर्स्ट स्ट्रीट ।

डायोसिसन कालेज, (लड़कियोंका) ४७ एलिगन रोड ।

आसुतोष कालेज, १४७, रसारोड, साउथ ।

डेविड हेयर ट्रेनिङ्ग कालेज, शिक्षकोंके लिये, २५—३ बाली-गञ्ज सर्कुलर रोड ।

नरसिंहदत्त कालेज, १२६ बेलीलियस रोड, हवड़ा ।

इस्लामिया कालेज, ८ वेलेस्ली स्ट्रीट ।

सेन्ट जेवियर्स कालेज, ३० पार्क स्ट्रीट ।

सेन्ट जासेफ कालेज, ६६ और ७० बऊबाजार स्ट्रीट ।

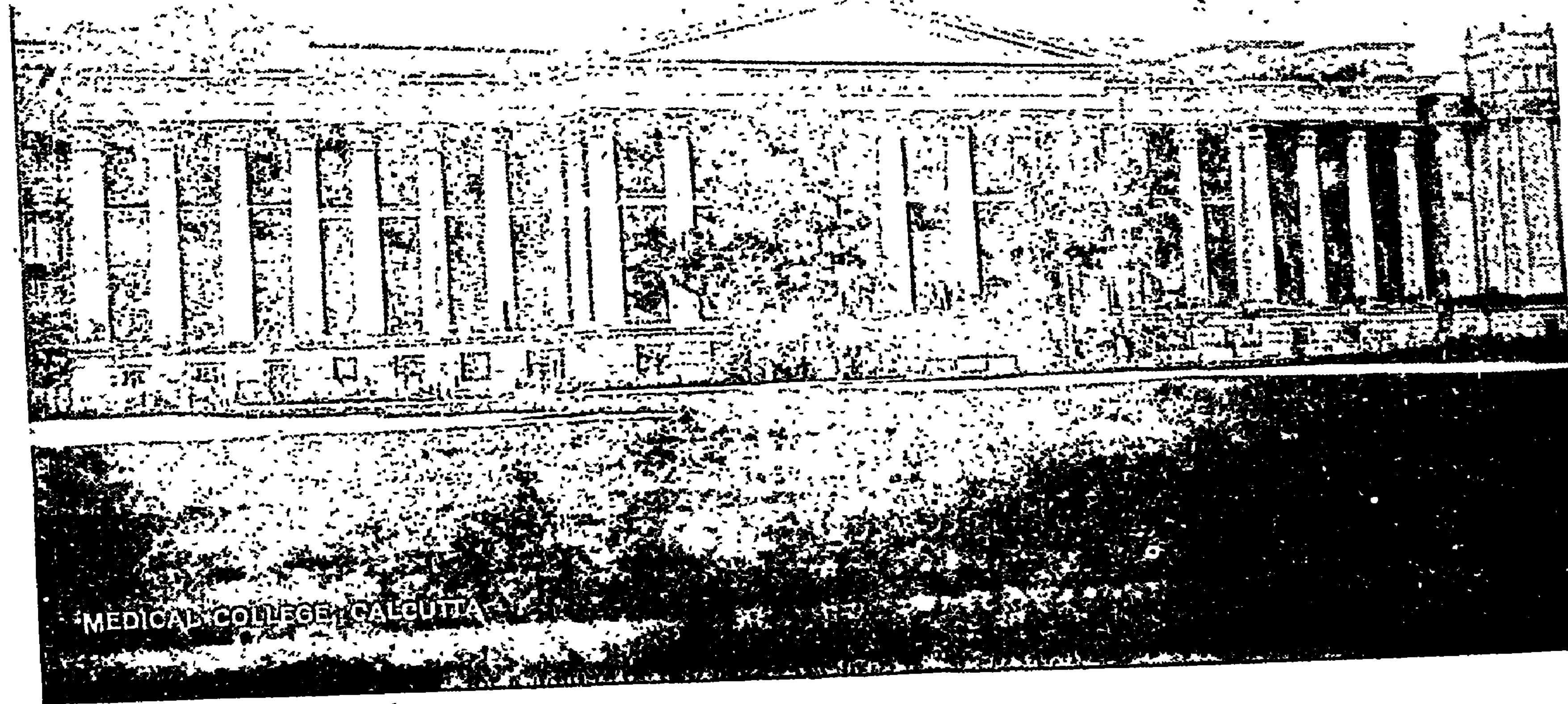
लारेटो हाउस, ७ मेडिलटन रोड । इस कालेजमें चार विभाग है । कालेज विभाग, शिक्षक विभाग, स्कूल और किंडर गार्डन विभाग ।

अन्य शिक्षालय ।

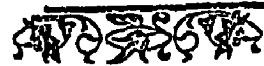
मेडिकल कालेज आफ बङ्गाल ८०-८२ कालेज स्ट्रीट ।

कारमाईकेल मेडिकल कालेज, १, बेलगछिया रोड ।

बंगाल इंजीनियरिंग कालेज, बोटेनिकल गार्डनके पास ।



कलकत्तेका मेडिकलकालेज ।



कलकत्ता टेक्निकल स्कूल; ११०, कारपोरेशन स्ट्रीट।

अस्पताल।

मेडिकल कालेज अस्पताल (कालेज स्ट्रीट)—यह अस्पताल लाटरी कमिटीके बचे हुए फण्ड और राजा प्रतापचन्द्रसिंह द्वारा दिये गये ५००००) रुपयोंसे बनाया गया था। यह भवन बर्न कम्पनीने तैयार किया था। इसकी नींव ३० सितम्बर १८४८ को मार्किस आफ डलहौसी द्वारा डाली गई थी और यह १ दिसम्बर १८५२ को खोला गया था। यह कोरिन्थियन-कलाके आदर्श पर बना हुआ है। पहले यह अस्पताल बहुत छोटा था इसीलिये इसके बगलमें ही स्त्रियों और बच्चोंके लिये एक दूसरा अस्पताल खोल दिया गया, जिसका नाम इडेन अस्पताल है। यह अस्पताल बड़े सुन्दर ढंगपर बनाया गया है। इसके हातेमें ही अस्पतालकी नर्सोंके रहनेके स्थान हैं। श्रीश्यामाचरण लाहाके दानसे एक आंखका विभाग भी खोला गया है। कलकत्तेके प्रसिद्ध व्यापारी मि० एजराकी धर्मपत्नीने यहूदियोंके लिये भी एक अलग विभाग स्थापित करवा दिया है। हालहीमें दो और अस्पताल भी बने हैं, जो इसी अस्तालसे सम्बन्ध रखते हैं; प्रिंस आफ वेल्स अस्पताल, ४२, इडेन हास्पिटल रोड और कारमाइकेल आस्पताल चित्तरञ्जन एवेन्यू पर है।

कैम्बेल अस्पताल।

यह अस्पताल लोवर सर्कुलर रोडमें सियालदह स्टेशनके



पासही है। यहां पहले एक बाजार बनवाया गया था; परन्तु असफल होनेके कारण अस्पताल बना दिया गया। यहां माता निकलने तथा छूतकी बीमारियोंका इलाज होता है। इसीसे सम्बद्ध यहां एक मेडिकल स्कूल भी है।

प्रेसीडेंसी जेनरल अस्पताल।

यह मैदानके दक्षिणमें लोअर सर्कुलर रोडमें है और इसका विवरण आगे "कलकत्तेके दर्शनीय स्थान" शीर्षकमें दे दिया गया है।

मेयो नेटिव अस्पताल

(स्ट्रैण्ड नार्थ)

सन् १७९३ में बंगाल गवर्नर सर जान शोर ने फौजदारी हाउस, चितपुर रोडमें एक अस्पताल खोला था। ५४०००) रुपये चन्देसे मिले थे और ६00 रुपया वार्षिक सरकारने मंजूर किया था। सन् १७९६ में यह अस्पताल वहांसे हटाकर धरमतल्लामें लाया गया। बादको सरकारने वार्षिक सहायता १000) रुपये फिर २000) रुपये कर दी। सन १८७१ में इसे टकसाल घरके पास ले जानेका विचार हुआ। इसका भवन बेचकर वहां नयी इमारत बनानी शुरू कर दी गई। वायसराय लार्ड नार्थब्रुकने ३ फरवरी १८७३ को इसकी नीव डाली थी। यह इमारत तीन मञ्जिला है और इसमें १२० रोगी रह सकते हैं।

बृटिस स्टेशन अस्पताल

यह घुड़दौड़के मैदानके दक्षिण में है। यहां पहले सदर अदालत थी पर अब सैनिक अस्पताल है।

कलकत्तेके गिरजाघर।

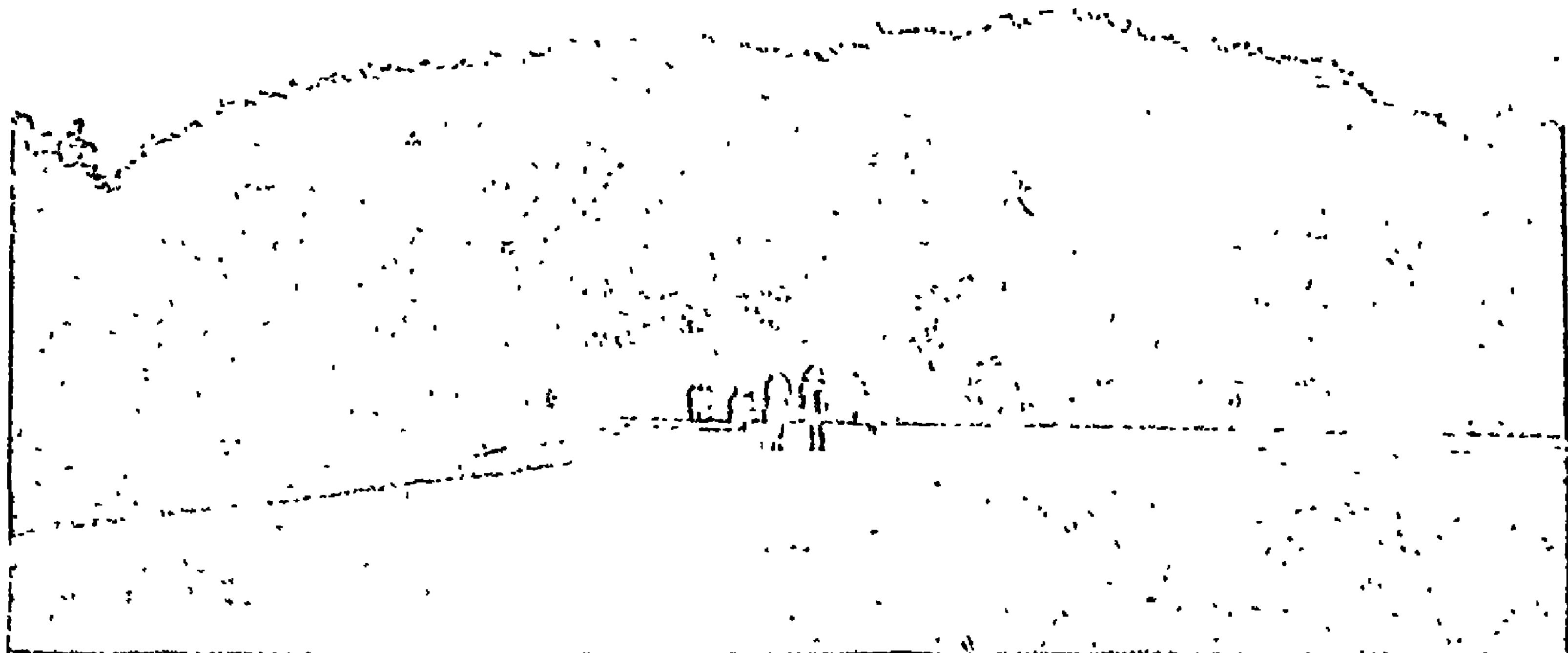
कलकत्तेमें बहुतसे चर्च या गिरजाघर हैं। उनमें कुछके नाम नीचे दिये जाते हैं।

सेन्ट पालस कैथीड्रल,	विक्टोरिया भवनके निकट।
सेन्ट जान्स चर्च,	काउन्सिल हाउस स्ट्रीट
सेन्ट जेम्स चर्च,	लोअर सर्कुलर रोड।
सेन्ट टामस चर्च,	फ्री स्कूल स्ट्रीट।
सेन्ट स्टीफेन्स चर्च,	खिदरपुर।
सेन्ट ऐन्ड्रूज चर्च,	डलहौसी स्क्वायर।
फ्री चर्च आफ स्काटलैंण्ड,	वेलेस्ली स्क्वायर।
केरी बैप्टिस्ट चैपेल,	लालबाजार।
बैप्टिस्ट चैपेल,	लोअर सर्कुलर रोड।
सेन्ट पीटर्स चर्च,	फोर्ट विलियम।
हेस्टिंग्स चैपेल,	हेस्टिंग्स।
यूनियन चैपेल,	धरमतल्ला स्ट्रीट।
अमेरिकन चर्च,	धरमतल्ला स्ट्रीट।
वेसीलियन मेथोडिस्ट चर्च,	सदर स्ट्रीट।
दि केथीड्रल,	पोर्त्तुगीज चर्च स्ट्रीट।
चर्च आफ दि सेक्रेड हार्ट	धरमतल्ला स्ट्रीट।

चर्च आफ सेन्ट फ्रांसिस जेवियर, बऊबाजार।
सेन्ट टामस चर्च, मेडिलटन रो।
सेन्ट टेरेसाज चर्च, लोअर सर्कुलर रोड।
चर्च आफ सेन्ट जान अपर सर्कुलर रोड।
चर्च आफ "अवर लेडी आफ डालर्स." बऊबाजार स्ट्रीट।
चर्च आफ सेन्ट पैट्रिक, फोर्ट विलियम
चर्च आफ सेन्ट इग्नेटियस, खिदिरपुर।
आर्थोडाक्स ग्रीक चर्च, रसारोड।
आर्मीनियन होली चर्च, आर्मीनियन स्ट्रीट

प्रसिद्ध मन्दिर।

काली मन्दिर, कालीघाट।
जैन मन्दिर, मानिकतल्ला।
पारसी अग्नि मन्दिर, २६ इज़रा स्ट्रीट।
दूधनाथ महादेवका मन्दिर, सूतापट्टी।
महादेवका मन्दिर मंदिर स्ट्रीट
सर्वमंगलाका " काशीपुर।
लंगड़ेश्वर महादेवका मंदिर। हुक्का पट्टी।
बलदेवजीका " २० बांसतल्ला।
बावलियाजीका " हुका पट्टी।
पञ्चमुखी हनुमानका " राजाकटराके पास
जगन्नाथजीका " शोभाराम बैसाख स्ट्रीट।
सत्यनारायणजीका " तुला पट्टी।



बोटेनिकल गार्डनका विशाल वटवृक्ष ।

महादेवका मंदिर ४८ नं० स्ट्रैण्ड रोड
तारासुन्दरीका " सिकदर पाड़ा लेन,
भूतनाथ महादेवका " नीमतल्ला।

जहाजी कम्पनीके एजेण्ट।

मेसर्स टामस-कुक ऐण्ड सन, लि० ४, डलहौसी स्कायर,
फोन नं० कलकत्ता ५५६० ।
" दि अमेरिकन एक्सप्रेस कं० गवर्नमेंट प्लेस, ई,
फोन नं० कलकत्ता ३०६८ ।
" काक्स ऐण्ड किंग्स शिपिंग एजेन्सी, लि०, वालेस-हाउस, बैंकशाल स्ट्रीट,
फोन नं० कलकत्ता ४५२४
" बामनलारी ऐण्ड कं० लि०, १०३ क्लाइव स्ट्रीट,
फोन नं० कलकत्ता ४३२० ।
" मैकिनन मैकेंजी ऐण्ड कं०, १६ स्ट्रैण्ड रोड,
फोन नं० कलकत्ता ५१०० ।
" ग्रिण्डले ऐण्ड कं० लि०, ६, चर्च लेन,
फोन नं० कल० २४६० ।

कलकत्तेके प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकायें।

पहले ही बतलाया जा चुका है कि कलकत्ता शिक्षाका सब से बड़ा केन्द्र है। यहां की जनता अधिक शिक्षित हैं और समाचार-पत्रोंका खूब शौक है। यहां कमसे कम सैकड़ों पत्र पत्रि-



कायें होंगी। उनमेंसे कुछ मुख्य पत्र-पत्रिकाओंके नाम नीचे दिये जाते हैं।

अंगरेजीके दैनिक पत्र :—इंगलिशमैन, स्टेटस मैन, अमृत-बाजार पत्रिका, फारवर्ड, बसुमति, माडर्न रिव्यू और वेलफेयर और कैपिटल आदि।

हिन्दीके दैनिक पत्र :—विश्वामित्र, स्वतन्त्र, भारतमित्र,

सप्ताहिक :—मतवाला, श्रीकृष्ण-संदेश, हिन्दू-पञ्च, मारवाड़ी ब्राह्मण, बंगवासी,।

मासिक :—सरोज, विशाल भारत, मारवाड़ी अग्रवाल, रेलवे सीरीज।

बंगलाकी मासिक पत्रिकायें :—बसुमति, भारतवर्ष, प्रवासी, पञ्चपुष्प, गल्प लहरी, प्रवर्त्तक आदि।

साप्ताहिक :—बसुमती, मोटरंग, अवतार, आत्म शक्ति, आदि

दैनिक :—बांगलार-कथा, बसुमती, आनन्दबाजार पत्रिका।

नगरके रेलवे बुकिंग आफिस।

ईस्ट इंडियन रेलवे।

नं० ६ फैयरली प्लेस,	फोन नं०	४६७
नं० १ ए किड स्ट्रीट	”	२१४०
नं० ४ चौरंगी प्लेस,	”	४६८
आर्मीऐण्ड नैवीस्टोर्स, चौरङ्गी	”	४२१३
नं० ११६-१-१ हैरिसन रोड,	” बड़ाबाजार	११२४,
नं० १२९ ए कार्नवालिस स्ट्रीट	” ”	२४००

नं० ८३ रसारोड नार्थ(आशुतोष मुखर्जी रोड)भवानीपुर।

नं० ७ बीडन स्ट्रीट, फोन नं बड़ाबाजार १२७०

ईस्टर्न बङ्गाल रेलवे।

नं० ६ फेयरली प्लेस, फोन० नं० रीजेन्ट ३९८
आर्मीएण्ड नैवी स्टोर्स " " ४३१४

बङ्गाल नागपुर रेलवे।

नं० ४ डलहौसी स्कायर फोन० नं० ५५६०

एस्प्लेनेड मैन्शन्स, " ३६१

सेन्ट्रल एवेन्यू (चित्तरंजन एवेन्यू)

नं० ८३ रसारोड, नार्थ।

ये बुकिङ्ग आफिस रविवारको छोड़कर प्रतिदिन ६ बजेसे ६ बजे संध्या तक खुले रहते हैं। माल या पार्सल ६ बजेसे ५ बजे संध्याके भीतर लिया जाता है। आर्मी एण्ड नैवी स्टोर्समें माल या पार्सल नहीं लगता।

कलकत्ता टाइम।

स्टैण्डर्ड (रेलवे) टाइम और कलकत्ता टाइम समान नहीं हैं। कलकत्ता टाइम रेलवे टाइमसे २४ मिनट पीछे है।

कलकत्ते के बड़े २ पुस्तक-प्रकाशक और विक्रेता

मैकमिलन ऐण्ड को० बऊबाजार। (अंग्रेजी)
थैकर स्पिंक एण्ड को० एस्प्लेनेड रो। „
एस० के० लाहिरी एण्ड को० कालेज स्ट्रीट। (बङ्गला)
गुरुदास लाईब्रेरी कार्नवालिस स्ट्रीट। „

(हिन्दी-पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता)

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को० ३७१, अपरचितपुर रोड।
बर्म्मन एण्ड कम्पनी १, नारायण बाबू लेन,
निहालचन्द एण्ड कम्पनी १, नारायण बाबू लेन,
हरिदास एण्ड कम्पनी २०१ हरिसनरोड।
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, २०१ हरिसन रोड।
कलकत्ता पुस्तक भण्डार, १७१ हरिसन रोड।
चाँद बुक डिपो नं १६५।१ हरिसन रोड।
सरस्वती पुस्तक एजेन्सी, १६५।१ हरिसन रोड।
वैंकटेश्वर पुस्तक एजेन्सी, १६५।२ हरिसन रोड।
लहरी बुक डिपो, १७२ हरिसन रोड।
पाठक एण्ड कम्पनी, ७३ बी वारानसी घोष स्ट्रीट
पं० रामनारायण त्रिवेदी सुता पट्टी।

समाप्त